* ओड़िशा संस्करण
15 जनवरी, 2024
पौष, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी
संवत 2080
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00
रांची
सोमवार, वर्ष 09, अंक 86

कलम कलम बढ़ाये जा
आजाद सिपाही

WILD WAADI PARK
An Entertainment Hub
एशिया का
तीसरा सबसे बड़ा फ्लावर पार्क
अब रांची में

HAJAM ROAD, RANCHI (JH.)
Contact Now : 9304816880

राम मंदिर

प्राण प्रतिष्ठा काउंटडाउन
07 दिन शेष

FLORENCE
Group of Institutions
(A Unit of Haji Abdur Razzaque Educational Society)
Irba, Ranchi-835219,Jharkhand

Admission OPEN 2024-25

PLACEMENT Assistance
Scholarship Facility Available
PHARMACY
D-PHARM
NURSING
ANM GNM
POST BASIC B.SC.
BASIC B.SC. M.SC.
PARAMEDICAL
DRESSERS DMLT ECG
X-RAY OPHTHALMIC
ASST. OT ASSISTANT
Separate Hostel For Boys & Girls
M.: 9031231082, 7903999411, 6205145470
E-mail : fsnirba@gmail.com
Website : www.florenceinstirba.com

न्यूज रील्स

15 मार्च तक भारत अपने सैनिक हटाये : मालदीव सरकार

माले (मालदीव)। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने भारत से 15 मार्च तक सेना वापस बुलाने को कहा है। पांच दिवसीय चीन दौरे के बाद आक्रामक तेवर दिखा रहे राष्ट्रपति मुइज्जू ने कहा है कि उनकी सरकार की यही नीति है। भारत को अपने 88 सैनिक दो महीने के भीतर वापस बुलाने होंगे।

मिलिंद देवड़ा शिवसेना में शामिल

मुंबई। मिलिंद देवड़ा ने रविवार को शिवसेना (शिंदे गुट) ज्वाइन कर ली। मिलिंद, दिग्गज कांग्रेसी नेता रहे मुरली देवड़ा के बेटे हैं। मिलिंद ने इस्तीफे की जानकारी सोशल मीडिया पर दी थी। उन्होंने लिखा- आज मेरे राजनीतिक सफर का एक महत्वपूर्ण अध्याय खत्म हुआ। मैंने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। इसके साथ पार्टी के साथ मेरे परिवार का 55 साल पुराना रिश्ता खत्म हो गया।

मकर संक्रांति पर पीएम मोदी ने गायों को चारा खिलाया

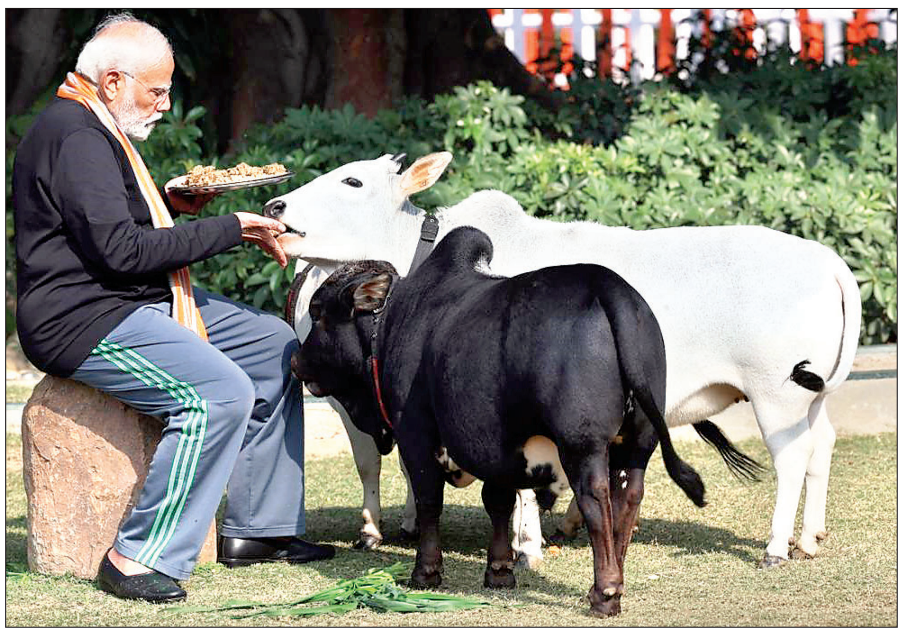

- पोंगल समारोह में मोदी ने उपहार में दिया शॉल

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। मकर संक्रांति के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने आवास पर गायों को चारा खिलाया। गायों के बीच घास खिलाते हुए पीएम मोदी की तस्वीरें जम कर वायरल हो रही है। यह पहला मौका नहीं है, जब पीएम मोदी का गो-प्रेम सबके सामने आया हो। तस्वीरों में साफ दिख रहा है कि पीएम मोदी गुड़ और घास को बड़े प्रेम से गाय को खिला रहे हैं। इस दौरान गायों का झुंड पीएम मोदी के आस-पास दिखायी दे रहा है। पीएम मोदी गायों को चारा दे रहे हैं।

केंद्रीय राज्यमंत्री एल मुरुगन के आवास पर आयोजित पोंगल उत्सव में पीएम मोदी ने शिरकत की। इस दौरान कार्यक्रम में प्रस्तुति देनेवाली एक बच्ची को पीएम मोदी ने अपना ही शॉल उपहार में दे दिया। कार्यक्रम में एक युवा गायक ने प्रस्तुति दी। इसके बाद गायिका ने पीएम मोदी के पैर छुए, जिसके बाद पीएम मोदी ने उन्हें अपना शॉल ही इनाम के तौर पर दे दिया। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि देश में कल लोहड़ी का त्योहार मनाया गया। कुछ लोग आज मकर संक्रांति मना रहे हैं और कई लोग कल मनायेंगे। मैं देशवासियों को इन त्योहारों के लिए शुभकामनाएं देता हूं। पीएम मोदी ने कहा कि उन्हें अपने परिजनों के साथ पोंगल मनाने का मन कर रहा है। उन्होंने कहा कि आप सभी को पोंगल की हार्दिक शुभकामनाएं! इस पवित्र अवसर पर मैं कामना करता हूं कि आपके जीवन में सुख, समृद्धि और संतुष्टि आये। आज, मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अपने परिजनों के साथ पोंगल मना रहा हूं।

आदिम जनजाति महिलाओं से आज बात करेंगे पीएम मोदी

संतोष कुमार

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। पीएम जनमन कार्यक्रम के तहत देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को बिशुनपुर प्रखंड के अति संवेदनशील आदिम जनजाति परिवारों की पांच महिलाओं से करेंगे बात। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आदिम जनजाति के लोग पूर्व में कैसे जीवन बसर कर रहे थे और अब जनमन एवं अन्य सरकारी योजनाओं के लाभ मिलने के बाद उनकी जीवन शैली में क्या बदलाव आया है और किस-किस सरकारी योजना का लाभ उन्हें मिल चुका है, इसकी जानकारी लेंगे। इधर कार्यक्रम को लेकर गुमला उपायुक्त कार्यक्रम के हरेक पहलू पर विशेष नजर रखे हुए हैं। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर रविवार शाम विभिन्न विभाग के पदाधिकारी एवं कर्मियों के साथ बैठक कर कार्यों की जिम्मेवारी सौंपी एवं कार्यक्रम की सफलता के लिए कई आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जनजातीय मामले के केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा द्वारा लाभुकों के बीच परिसंपत्ति का वितरण किया जायेगा। आयोजित कार्यक्रम में खास तौर पर 600 आदिम जनजाति परिवार के लाभुक पारंपरिक परिधान में कार्यक्रम में शामिल होंगे।

25 को पीएम करेंगे नये मतदाताओं को संबोधित

नये मतदाता लिखेंगे नयी कहानी, मोदी को बनायेंगे तीसरी बार पीएम : बाबूलाल

- नव मतदाता सम्मेलन का रजिस्ट्रेशन नंबर 7820078200 जारी
- झारखंड के सभी 81 विधानसभा क्षेत्र में नव मतदाता सम्मेलन

आजाद सिपाही संवाददाता

साहिबगंज। 25 जनवरी को मतदाता दिवस पर मतदाता सम्मेलन को लेकर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने साहिबगंज परिसदन में प्रेसवार्ता करते हुए कहा कि नये मतदाता आनेवाले 2024 चुनाव में नयी कहानी लिखने को तैयार हैं। उन्होंने कहा कि 2024 में पूरे देश में लोकसभा और झारखंड में विधानसभा चुनाव होना है। झारखंड में 50 लाख नये मतदाता जुड़े हैं। नये मतदाता अपनी सरकार बनाने को उत्सुक हैं। नये मतदाताओं में उत्साह और उमंग है। वह हेमंत सोरेन सरकार को हर हाल में हटाना चाहते हैं।

प्रेस वार्ता
NAMO
NAVMATDATA
To get the Registration Link give a Missed Call at
78200 78200

उन्होंने कहा कि 25 जनवरी को मतदाता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नये मतदाताओं को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए उनसे संवाद करेंगे। उन्होंने कहा कि पूरे देश में 5000 स्थानों पर कार्यक्रम होगा, जहां नये मतदाता उपस्थित रहेंगे। उन्होंने कहा कि झारखंड के सभी 81 विधानसभा क्षेत्र में नव मतदाता सम्मेलन होना है। इसमें लाखों की संख्या में युवा जुड़ेंगे और प्रधानमंत्री को सुनेंगे। उन्होंने कहा कि नये मतदाता नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने को तैयार हैं। इनके अंदर भारी उत्सुकता है। इस दौरान उन्होंने मतदाता सम्मेलन हेतु राष्ट्रव्यापी रजिस्ट्रेशन नंबर 7820078200 भी जारी किया। और नये मतदाताओं को उपरोक्त नंबर पर मिस्ड कॉल कर पंजीयन कराने का आग्रह किया। इस दौरान राजमहल विधायक अनंत ओझा, प्रदेश युवा मोर्चा के अध्यक्ष किसलय तिवारी भी उपस्थित थे।

इंडिया ने न्यूजीलैंड को 3-1 से करारी शिकस्त दी

हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर मैच

रांची (आजाद सिपाही)। हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर के दूसरे दिन चौथे न्यूजीलैंड और इंडिया के बीच खेले गये रोमांचक मुकाबले में इंडिया ने 3/1 से न्यूजीलैंड को करारी शिकस्त दी। प्लेयर ऑफ द मैच सलीमा टेटे (इंडिया) को मिला। इससे पहले तीसरा मैच यूएस ओर इटली के बीच खेला गया। मोरहाबादी स्थित जयपाल सिंह एस्ट्रो टर्फ हॉकी स्टेडियम में खेले जा रहे इस मैच में यूएस की टीम को झटका लगा। तीसरे मिनट में ही यूएस की खिलाड़ी सन्ने कार्ल्स को रेड कार्ड दे दिया गया। 20वें मिनट में एस्ले सेसा ने यूएस के लिए पहला गोल किया। इसके साथ यूएस ने 1-0 की बढ़त ले ली। मैच के दौरान यूएस की टीम को 8 पेनाल्टी कार्नर मिले, जबकि इटली को 3 पेनाल्टी कार्नर मिला। यूएस को एक पेनाल्टी स्ट्रोक भी मिला। 40वें मिनट में यूएस की खिलाड़ी एस्ले हॉफमैन को भी नियम का उल्लंघन करने पर रेड कार्ड दिया गया। इस बीच एस्ले हॉफमैन ने 48वें मिनट में दूसरा गोल दागकर टीम को सेफ जोन में पहुंचा दिया।

राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुरू

पीएम मणिपुर के आंसू पोंछने नहीं आये : राहुल

आजाद सिपाही संवाददाता

इंफाल। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा 14 जनवरी से मणिपुर के थौबल से शुरू हुई। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने यात्रा को हरी झंडी दिखायी। यात्रा से पहले राहुल गांधी ने एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि 2004 से मैं राजनीति में हूं। पहली बार मैं हिंदुस्तान के एक ऐसे प्रदेश में गया, जहां शासन व्यवस्था ध्वस्त हो गयी थी, जिसे हम मणिपुर कहते थे, वह मणिपुर रहा ही नहीं, लेकिन प्रधानमंत्री आपके आंसू पोंछने, आपसे गले लगने नहीं आये। मणिपुर में भाई-बहन, माता-पिता आंखों के सामने मरे और आज तक हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री मणिपुर में आपके आंसू पोछने, गले मिलने नहीं आये। ये शर्म की बात है। राहुल ने आगे कहा- हम आपकी सुनने आये हैं, मन की बात सुनाने नहीं। वहीं, मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि मोदी जी समंदर में सैर करने जाते हैं, राम-राम जपते हैं, लेकिन मणिपुर नहीं आते। उनके मुंह में राम और बगल में छुरी है। राहुल के साथ अशोक गहलोत, सचिन पायलट, दिग्विजय सिंह, सलमान खुर्शीद, आनंद शर्मा और राजीव शुक्ला जैसे कई सीनियर नेता मणिपुर पहुंचे। भारत जोड़ो न्याय यात्रा 15 राज्यों के 110 जिलों को कवर करेगी। इसमें राहुल 6700 किमी का सफर तय करेंगे। यात्रा 20 मार्च को मुंबई में खत्म होगी।

इडी आज विनोद कुमार सिंह से करेगी पूछताछ

- दो दर्जन से अधिक लोगों को समन भेजा, पूछताछ होगी
- छापेमारी के दौरान साहिबगंज में 30 खातों को किया था फ्रीज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। इडी ने बीते 3 जनवरी को साहिबगंज में छापेमारी करने के बाद विभिन्न बैंकों में मौजूद 30 खाते को फ्रीज करवाया था। इन खातों से जुड़े दो दर्जन से अधिक लोगों को इडी ने समन भेज कर पूछताछ के लिए बुलाया है। इन लोगों से 17 जनवरी से पूछताछ की जायेगी। वहीं कारोबारी विनोद कुमार सिंह से इडी सोमवार को पूछताछ करेगी।

अब तक की जांच में इडी को यह जानकारी मिली है कि किराये पर लिये गये अकाउंट का भी प्रयोग किया गया है। सेल कंपनियों के जरिए निवेश करने के भी साक्ष्य मिले हैं। इन खातों में करोड़ो रुपये की लेनदेन हुई है। इसके अलावा सर्च ऑपरेशन में साहिबगंज डीसी रामनिवास यादव के कैंप कार्यालय से 7.25 लाख रुपये, नाइन एमएम के 19 कारतूस, प्वाइंट 380 एमएम के दो कारतूस और प्वाइंट 45 के पांच खोखे भी मिले हैं। बड़े पैमाने पर दस्तावेज भी जब्त किये गये।

इससे पहले इडी ने 11 जनवरी को साहिबगंज डीसी रामनिवास यादव को पूछताछ के लिए बुलाया था। हालांकि वह इडी के समक्ष उपस्थित नहीं हुए थे। झारखंड कैबिनेट सचिव वंदना दादेल ने इडी को पत्र लिख कर यह जानकारी मांगी है कि वह राज्य सरकार के अफसरों को किस आधार पर पूछताछ के लिए समन कर रही है।

ग्रैंड पैरेंट्स सम्मान समारोह 'छांव' 2023-24 का आयोजन

दादा-दादी, नाना-नानी किये गये सम्मानित

- मुख्य अतिथि बीआइटी मेसरा की निदेशक वंदना भट्टाचार्या ने दीप जला कर समारोह का किया उद्घाटन
- लिटिल विंग्स स्कूल के विद्यार्थियों ने देशभक्ति नाटक प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया

LITTLE WINGS SCHOOL
छाँव
2023-24
HONOURING CEREMONY OF GRANDPARENTS

बूटी मोड़ स्थित लिटिल विंग्स स्कूल में ग्रैंड पैरेंट्स का सम्मान समारोह 'छांव' 2023-24 का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि बीआइटी मेसरा की निदेशक वंदना भट्टाचार्या ने दीप जला कर समारोह का उद्घाटन किया। स्कूल की प्राचार्या नीता सिंह के द्वारा मुख्य अतिथि को गुडलक पॉट, शॉल और मोमेंटो प्रदान कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों के सभी दादा-दादी एवं नाना-नानी को मुख्य अतिथि एवं प्राचार्या द्वारा शॉल एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। दादा-दादी एवं नाना-नानी के सम्मान में छात्र एवं छात्राओं द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किये गये। इसके अलावा सम्मानित देशभक्ति नाटक भी स्कूल के छात्र एवं छात्राओं के द्वारा प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि एवं कार्यक्रम में आये सभी ग्रैंड पैरेंट्स ने इस कार्यक्रम कि सराहना की एवं इसे अद्भुत बताया। स्कूल निदेशक रमेंद्र कुमार एवं प्राचार्या नीता सिंह ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी अभिभावकों, ग्रैंड पैरेंटस, सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं एवं स्कूल स्टाफ को धन्यवाद दिया।

(ए.डी.वी.टी.)

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

सर्राफा

सोना (बिक्री)	59,400 रु./10 ग्राम
चांदी	77,000 रु./प्रति किलो

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 15 जनवरी, 2024
www.azadsipahi.in

श्री अयोध्या धाम और श्रीराम जन्मभूमि मंदिर पर विशेष शृंखला: 4

ऐसे प्रकट हुए रामलला और रहस्यमयी बंदर ने खुलवाया ताला!

- कैसे एक काला बंदर कोर्ट की प्रक्रिया तक पूरे दिन फ्लैग पोस्ट को पकड़ कर बैठा रहा
- कैसे आदेश सुनाने के बाद ही वह वहां से गया और फिर जज के घर के बरामदे में बैठा पाया गया
- महिमा अपरंपार है भगवान श्रीराम की, कब कहां क्या हो जायेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता

'अयोध्या कथा' तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस वाला 'अयोध्या कांड' नहीं है। यह कलयुग का 'अयोध्या कांड' है, जिसमें रामलला टेंट में हैं और बरसों की प्रतीक्षा है। एक तरफ राजनीति का शोर है, जहां सरयू की लहरों में इतिहास को समेटे एक ऐसी कहानी भी है, जिसे इतने विस्तार से न तो दिखाया गया है, न ही इसका उल्लेख उस गहराई में उतर कर प्रस्तुत किया गया है। कितने ही रहस्यों को अपने पहलू में समेटे यह अयोध्या है। इस अयोध्या की कहानी के हर मोड़ पर सस्पेंस है, हजारों मोड़ हैं और आस्था का ज्वार है। साथ ही राजनीति की मंझधार है और कटघरे में खड़ी कई सरकारें हैं। जैसे-जैसे अयोध्या में श्रीराम मंदिर के उद्घाटन का दिन नजदीक आता जा रहा है, पूरी दुनिया राममय होती जा रही है। क्या भारत और क्या दूसरे देश, हर जगह केवल एक ही चर्चा है और वह है अयोध्या और प्रभु श्रीराम का मंदिर। यह मंदिर केवल एक मंदिर नहीं है, बल्कि दुनिया भर के करोड़ों सनातनियों के स्वाभिमान, ताकत और संकल्प का प्रतीक है। इस पवित्र मंदिर से जुड़ी कई ऐसी कहानियां हैं, जो आज तक दुनिया के सामने नहीं आयी हैं। इन कहानियों को प्रभु श्रीराम की लीला के रूप में मान्यता मिली हुई है और इसीलिए कहा जाता है कि प्रभु की महिमा अपरंपार है। कब कहां क्या हो जायेगा, कहा नहीं जा सकता। आजाद सिपाही के पाठकों के लिए इन्हीं अनसुनी कहानियों को सामने ला रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।

आजाद सिपाही विशेष

राकेश सिंह

अयोध्या भारत की विरासत, परंपरा, सांस्कृतिक इतिहास और धार्मिक मूल्यों में गहरे तक धंसा हुआ है। अयोध्या वीतरागी है। अयोध्या की कलकल बहती सरयू की धार में एक तरह की निसंगता है। भक्ति में डूबी अयोध्या का चरित्र अपने नायक की तरह ही धीर, शांत और निरपेक्ष है। युद्ध का अर्थ हम सभी जानते हैं। अयोध्या का मतलब जिससे युद्ध किया जा सके। मनुष्य उसी से युद्ध करता है, जिससे जीतने की संभावना रहती है। यानी अयोध्या के मायने हैं, जिसे जीता न जा सके। आजाद भारत में अयोध्या को लेकर बेइंतहां बहसें हुईं। अयोध्या में 6 दिसंबर 1992 को जो कुछ हुआ, वह किसी भी हिंदू परंपरा में मान्य और प्रतिष्ठित नहीं है। पर वह हुआ क्यों? आज इस सवाल का जवाब भी टटोलने की कोशिश करते हैं। इस प्रश्न के जवाब के लिए हमें इतिहास की गहराई में उतरने की जरूरत है और पौराणिक तथ्यों से जुड़ी रिपोर्ट को खंगालने की जरूरत है। इसके लिए अयोध्या से जुड़ी कुछ किताबें, जैसे 'अयोध्याः द डार्क नाइट' और 'युद्ध में अयोध्या' जैसी पुस्तकों के सहारे पूरी कहानी को समझने की कोशिश की गयी।

1934 में भी तोड़े गये थे तीनों गुंबद

वह साल 1934 का दौर था। हिंदुओं की एक विशाल भीड़ ने बाबरी मस्जिद के तीनों गुंबद तोड़ दिये थे। फैजाबाद के अंग्रेज कलेक्टर ने बाद में इनका पुनर्निर्माण करवाया। उससे पहले के दौर में जायेंगे, तो 1855 में अयोध्या में भारी संघर्ष हुआ। नवाब वाजिद अली शाह की रिपोर्ट के अनुसार 12 हजार लोगों ने ढांचे को घेर लिया। ढांचे का हिस्सा उस वक्त भी गिरा था। तब के दोनों दौर में न विश्व हिंदू परिषद था और न ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, यानी अयोध्या के इन गुंबदों को लेकर आक्रोश हर काल में था।

राम के साथ कैसे जुड़ा लला

अयोध्या विवाद के बारे में पढ़ते-सुनते हैं, तो राम मंदिर से ज्यादा रामलला का जिक्र आता है। प्रभु राम तो राम हैं। ऐसे में राम के साथ 'लला' शब्द कैसे जुड़ गया, इसकी कहानी बेहद रोचक है। 1949 में बाबरी मस्जिद वहां पर हुआ करती थी। गुंबद के ठीक नीचे राम की प्रतिमा रख दी गयी। यह प्रतिमा राम के बाल रूप की थी। अगली सुबह पूरे इलाके में खबर फैल गयी कि रामलला प्रकट हुए हैं। मूर्ति रखनेवाले चूंकि गुंबद के नीचे राम के जन्म की बात को बल देना चाहते थे, तो उन्होंने राम के साथ लला लगाया। संदेश यह कि राम प्रकट हुए, छोटे बालक हैं, लला हैं। इस बारे में तुलसीदास की एक चौपाई भी हैः

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला
कौशल्या हितकारी। हर्षित महतारी
मुनि मनहारी अद्भुत रूप विचारी।।

अयोध्या के साढ़े आठ हजार छोटे-बड़े मंदिरों, मठों और आश्रमों में करीब चार सौ वर्षों से हर सुबह इन्हें गाया-बजाया जाता है। लेकिन 23 दिसंबर 1949 की सुबह अयोध्या में इन चौपाइयों के एक अलग ही मायने थे।

रामलला के विराजने की कहानी

22 और 23 दिसंबर 1949 की एक सर्द कड़ाके की ठंड वाली लंबी काली रात थी। घने कोहरे में कुछ नहीं दिख रहा था। अयोध्या की तंग और संकरी गलियों के मंदिरों में भगवान विश्राम कर रहे थे। मठों में साधु सो रहे थे। 20 हजार की आबादी वाले इस शहर के चारों तरफ सन्नाटा पसरा था। आधी रात से कुछ पहले सरयू के किनारे लक्ष्मण किले के घाट पर पांच प्रमुख लोग इकट्ठा होते हैं। सरयू के किनारे इकट्ठा होनेवाले पांच लोगों में गोरखपीठ के महंत दिग्विजय नाथ, देवरिया के अहिंदीभाषी संत बाबा राघवदास, निर्मोही अखाड़े के बाबा अभिरामदास और दिगंबर अखाड़े के रामचंद्र परमहंस थे। इस गोपनीय ऑपरेशन में गीता प्रेस गोरखपुर के संस्थापक हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाइजी' भी व्यवस्था के लिए वहां मौजूद थे।

कौन थीं वे पांच महान विभूतियां

महंत दिग्विजय नाथ क्रांतिकारी साधु थे। वह नाथपंथी समुदाय की शीर्ष पीठ गोरखपीठ के महंत थे। उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के गुरु अवैद्यनाथ थे और अवैद्यनाथ के गुरु दिग्विजय नाथ थे। दिग्विजय नाथ आजादी की लड़ाई के दौरान हुए चौरी-चौरा कांड में जेल भी गये थे। दिग्विजय नाथ को लॉन टेनिस का बहुत शौक था। अपने इसी प्रेम की वजह से वह गोंडा के कलेक्टर केके नायर और महाराजा बलरामपुर पटेश्वरी प्रसाद सिंह के करीब थे। तीनों अक्सर लॉन टेनिस खेलने के लिए गोंडा में एकत्रित होते थे।

> 23 दिसंबर 1949 की सुबह उजाला होने से पहले यह बात चारों तरफ जंगल की आग की तरह फैल गयी कि 'जन्मभूमि' में भगवान राम प्रकट हुए हैं। राम भक्त उस सुबह अलग ही जोश में गोस्वामी तुलसीदास की चौपाई 'भये प्रगट कृपाला' गा रहे थे। सुबह सात बजे के करीब अयोध्या थाने के तत्कालीन एसएचओ रामदेव दुबे रूटीन जांच के दौरान जब वहां पहुंचे, तब तक वहां सैकड़ों लोगों की भीड़ इकट्ठा हो चुकी थी। रामभक्तों की यह भीड़ दोपहर तक बढ़कर करीब पांच हजार तक पहुंच गयी। पुलिस और प्रशासन इस घटना को देख हैरान था।

दूसरे संत बाबा राघवदास पुणे के चित्तपावन ब्राह्मण थे। 1920 में वह कांग्रेस में शामिल हुए और 1948 में अयोध्या विधानसभा का उपचुनाव हुआ और राम मंदिर मुद्दे पर पहला राजनीतिक टेस्ट साबित हुआ वह चुनाव। उस चुनाव में आचार्य नरेंद्र देव के खिलाफ कांग्रेस ने राघवदास को मैदान में उतार दिया और पंडित गोविंद वल्लभ पंत ने आचार्य नरेंद्र देव को मंदिर विरोधी करार देते हुए आक्रामक प्रचार किया। नतीजा राघवदास चुनाव जीत गये।

बिहार के छपरा के भगेरन तिवारी के बेटे चंद्रेश्वर तिवारी जब 1930 में अयोध्या आये, तो उस वक्त वह आयुर्वेदाचार्य थे। दिगंबर अखाड़े की छावनी में उनका नाम रामचंद्रदास रखा गया और काम मिला राम जन्मभूमि मुक्ति का। सरयू किनारे पहुंचे चौथे शख्स हनुमान पोद्दार गीता प्रेस गोरखपुर के संस्थापक थे। छह फुट के हठी साधु अभिरामदास की गिनती अयोध्या के लड़ाकू साधुओं में होती थी। वह दरभंगा के मैथिल ब्राह्मण थे।

और जन्मस्थान पर पहुंच गये रामलला

उस रात इन सभी लोगों ने सरयू में स्नान किया और नये वस्त्र धारण किये। हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाइजी' अपने साथ भगवान राम की एक मूर्ति लाये थे। पूजन के बाद मूर्ति को एक बांस की टोकरी में रख कर अभिरामदास ने उसे सिर पर उठा लिया। यह समूह रामधुन गाता हुआ हनुमानगढ़ी की ओर बढ़ा। परिसर की सुरक्षा में लगे कोई दो दर्जन पुलिस वाले बाहर तंबू में सो रहे थे और अंदर दो सिपाहियों की ड्यूटी बारी-बारी से थी। इस दौरान आठ-दस साधुओं ने गर्भगृह में प्रवेश किया। पहले गर्भगृह की फर्श सरयू के पानी से धोयी गयी। फिर लकड़ी का एक सिंहासन रख उस पर चांदी का एक छोटा सिंहासन रखा गया और उस पर कपड़ा बिछा कर मूर्ति रखी गयी। मंत्रोच्चार के बीच मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा हुई। 23 दिसंबर 1949 की सुबह उजाला होने से पहले यह बात चारों तरफ जंगल की आग की तरह फैल गयी कि 'जन्मभूमि' में भगवान राम प्रकट हुए हैं। राम भक्त उस सुबह अलग ही जोश में गोस्वामी तुलसीदास की चौपाई 'भये प्रगट कृपाला' गा रहे थे। सुबह सात बजे के करीब अयोध्या थाने के तत्कालीन एसएचओ रामदेव दुबे रूटीन जांच के दौरान जब वहां पहुंचे, तब तक वहां सैकड़ों लोगों की भीड़ इकट्ठा हो चुकी थी। रामभक्तों की यह भीड़ दोपहर तक बढ़ कर करीब पांच हजार तक पहुंच गयी। अयोध्या के आसपास के गांवों में भी यह बात पहुंच गयी थी। इस वजह से श्रद्धालुओं की भीड़ बालरूप में प्रकट हुए भगवान राम के दर्शन के लिए टूट पड़ी थी। पुलिस और प्रशासन इस घटना को देख हैरान था। आम बोलचाल की भाषा में प्रकट होने को 'राम विराजे' कहने लगे और यहीं से रामलला के साथ 'विराजमान' शब्द भी जुड़ गया।

आदेश को ठुकरा दिया केके नायर ने

खबर आम लोगों के साथ ही सरकार के पास भी पहुंच गयी। तब केंद्र में थे जवाहरलाल नेहरू और वल्लभ भाई पटेल, जबकि राज्य में मुख्यमंत्री गोविंद वल्लभ पंत और गृह मंत्री लाल बहादुर शास्त्री। अयोध्या में कोई बवाल न हो, इसके लिए केंद्र और राज्य दोनों ही सरकारों ने तय किया कि अयोध्या में पहले वाली स्थिति बहाल की जाये। इसके लिए राज्य के मुख्य सचिव भगवान सहाय ने फैजाबाद के डीएम केके नायर को आदेश दिया कि रामलला की मूर्ति को मस्जिद से निकाल कर राम चबूतरे पर फिर से रख दिया जाये। यह आदेश 23 दिसंबर की दोपहर तक ही केके नायर के पास पहुंच गया था, लेकिन केके नायर ने आदेश मानने से इनकार कर दिया। जवाब लिखा कि ऐसा करने से अयोध्या और आसपास कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब हो सकती है। इसके अलावा कोई भी पुजारी मस्जिद से निकाल कर मूर्ति को फिर से राम चबूतरे पर विधिवत स्थापित करने को तैयार नहीं है। गोविंद वल्लभ पंत नायर के तर्क से सहमत नहीं हुए। उन्होंने फिर से केके नायर पर दबाव डाला और बदले में केके नायर ने फिर से आदेश मानने से इनकार करते हुए अपने इस्तीफे की पेशकश कर दी। उन्होंने अपने इस्तीफे में सरकार को सुझाव दिया कि अब इस मामले को अदालत पर छोड़ दिया जाये। मुख्यमंत्री गोविंद वल्लभ पंत के पास दो रास्ते थे। पहला तो यह कि वह केके नायर का इस्तीफा स्वीकार कर लें और किसी दूसरे अधिकारी को तैनात करके मूर्ति को मस्जिद से बाहर राम चबूतरे पर लेकर आयें। दूसरा यह था कि वह केके नायर के सुझाये गये उपायों पर अमल करें। गोविंद वल्लभ पंत सरकार ने नायर का इस्तीफा नामंजूर कर दिया और सुझाये गये उपायों को अमल करने का आदेश दिया।

बंदर ने खुलवाया मंदिर का ताला

22-23 दिसंबर 1949 की रात अयोध्या के विवादित परिसर में जो कुछ हुआ, उसकी आंच में देश एक नहीं, कई बार झुलस चुका है। यह झुलसन आज भी कायम है। अयोध्या में छुपे राज को समझने की खातिर इस दौर को जानना और भी अहम है।

साल 1950 में हिंदू महासभा के गोपाल सिंह विशारद और दिगंबर के महंत परमहंस रामचंद्र दास ने फैजाबाद अदालत में याचिका दायर कर जन्मस्थान पर स्वामित्व का मुकदमा ठोंका। दोनों ने वहीं पूजा-पाठ की इजाजत मांगी। सिविल जज ने भीतरी हिस्से को बंद रख कर पूजा-पाठ की इजाजत देते हुए मूर्तियों को न हटाने के अंतरिम आदेश दिये। 26 अप्रैल, 1955 को हाइकोर्ट ने 5 मार्च 1951 को सिविल जज द्वारा दिये गये इस अंतरिम आदेश पर मुहर लगायी। इसके बाद 1959 में निर्मोही अखाड़े ने एक दूसरी याचिका दायर कर विवादित स्थान पर अपना दावा ठोंका और स्वयं को राम जन्मभूमि का संरक्षक बनाया। 1961 में सुन्नी वक्फ बोर्ड ने मस्जिद में मूर्तियां रखे जाने के विरोध में याचिका दायर की और दावा किया कि मस्जिद और उसके आसपास की जमीन कब्रगाह है, जिस पर उसका दावा है। 29 अगस्त, 1964 को जन्माष्टमी के मौके पर मुंबई में विश्व हिंदू परिषद की स्थापना हुई। इस स्थापना में आरएसएस के प्रमुख सदाशिव गोलवलकर, संत तुकोजी महाराज आदि शामिल हुए।

रामलला विराजमान कैसे बने पक्षकार

अयोध्या मामले में रामलला के पक्षकार बनने की कहानी दिलचस्प है। जिस मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा की गयी होती है, उसे हिंदू मान्यताओं में जीवित इकाई के तौर पर देखा जाता है। हालांकि यहां मूर्ति नाबालिग मानी गयी। देवकीनंदन अग्रवाल ने कहा कि रामलला को पार्टी बनाया जाये, क्योंकि विवादित इमारत में साक्षात भगवान रामलला विराजमान हैं। ऐसा माना जा रहा था कि मुस्लिम पक्ष, लॉ ऑफ लिमिटेशन यानी परिसीमन कानून के हवाले से मंदिर के पक्षकारों के दावे का विरोध करेगा। 1963 का लॉ ऑफ लिमिटेशन यानी परिसीमन कानून, किसी विवाद में पीड़ित पक्ष के दावा जताने की सीमा तय करता है। हिंदू पक्षकारों के दावे के खिलाफ मुस्लिम पक्ष इस कानून के हवाले से यह दावा कर रहा था कि सदियों से वह विवादित जगह उनके कब्जे में है और इतना लंबा समय गुजर जाने के बाद हिंदू पक्षकार इस पर दावा नहीं जता सकते। इसके बाद रिटायर्ड जज देवकीनंदन अग्रवाल इस मुकदमे में बतौर रामलला की बाल्यावस्था के दोस्त बन कर शामिल हो गये थे। राम के दोस्त देवकीनंदन अग्रवाल के इस मुकदमे के पक्षकार बनते ही यह मुकदमा परिसीमन कानून के दायरे से बाहर आ गया और कानूनी दांव-पेंच के गलियारे में इस मुकदमे ने रफ्तार पकड़ ली।

रामलला विराजमान की तरफ से मुकदमा लड़ा इलाहाबाद हाइकोर्ट के रिटायर्ड जज देवकीनंदन अग्रवाल ने और इसी दलील को मानते हुए इलाहाबाद हाइकोर्ट ने रामलला विराजमान को पार्टी पक्षकार माना। देवकीनंदन अग्रवाल के निधन के बाद विश्व हिंदू परिषद के त्रिलोकी नाथ पांडेय ने रामलला विराजमान के पक्षकार के तौर पर कमान संभाली।

गर्भगृह का ताला किसने खुलवाया था, यह ऐसा सवाल है, जिसके जवाब में बहुत लोग कहेंगे कि जज साहब ने खुलवाया था या प्रशासन ने खुलवाया था। लेकिन अगर आपको कहा जाये कि ताला एक बंदर ने खुलवाया था, तो किसी को भी हंसी आ जायेगी। लेकिन यह सौ फीसदी सच है। फैजाबाद के जिला जज रहे कृष्णमोहन पांडेय ने विवादित ताला खोलने का फैसला दिया था। जब वह फैसला लिख रहे थे, तो उनके सामने एक बंदर बैठा था। उसकी भी बड़ी दिलचस्प कहानी है।

> अयोध्या में कोई बवाल न हो, इसके लिए केंद्र और राज्य दोनों ही सरकारों ने तय किया कि अयोध्या में पहले वाली स्थिति बहाल की जाये। इसके लिए राज्य के मुख्य सचिव भगवान सहाय ने फैजाबाद के डीएम केके नायर को आदेश दिया कि रामलला की मूर्ति को मस्जिद से निकालकर राम चबूतरे पर फिर से रख दिया जाये। यह आदेश 23 दिसंबर की दोपहर तक ही केके नायर के पास पहुंच गया था, लेकिन केके नायर ने आदेश मानने से इनकार कर दिया। जवाब लिखा कि ऐसा करने से अयोध्या और आसपास कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब हो सकती है।

1 फरवरी 1986 को फैजाबाद के जिला न्यायाधीश ने विवादित स्थल पर हिंदुओं को पूजा की इजाजत दे दी। इस घटना के बाद मुसलमानों ने वहां नमाज पढ़ना बंद कर दिया। इस घटना के बाद नाराज मुसलमानों ने बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी का गठन किया। फैजाबाद के जिला न्यायाधीश के फैसले के 40 मिनट के भीतर राज्य सरकार ने उसे लागू करा दिया, यानी शाम 4.40 पर अदालत का फैसला आया और 5.20 पर विवादित इमारत का ताला खुला।

ऐसे लिखी गयी ताला खोलने की पटकथा

साल 1986 की 1 फरवरी को राम जन्मभूमि का ताला खोला गया था। उस वक्त देश के प्रधानमंत्री थे राजीव गांधी। स्वभाव से सरल इंसान राजीव गांधी अपनी राजनीतिक जीवन की सबसे बड़ी और कड़ी परीक्षा दे रहे थे। इंदिरा के पहले राजनीतिक वारिस संजय गांधी की मौत और फिर मां की हत्या के बाद प्रधानमंत्री बने राजीव गांधी की पहली परीक्षा हुई शाहबानो प्रकरण में, जब पांच बच्चों की मां को पति मोहम्मद अहमद खान ने तीन तलाक देकर घर से निकाल दिया था। यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा और कोर्ट ने शाहबानो के पक्ष में फैसला सुनाया। शुरू में तो राजीव इस फैसले से खुश थे और राजीव सरकार के मंत्री आरिफ मोहम्मद खान ने इस फैसले के समर्थन में संसद में लंबा भाषण भी दिया। बाद में राजीव गांधी ने कुछ मुस्लिम कट्टरपंथियों के दबाव के आगे झुक कर इस फैसले को संसद में पलट दिया। दूसरी तरफ राजीव गांधी के इस फैसले को मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगाते हुए भाजपा ने लपक लिया और उसका साथ आरएसएस ने भी दिया। विहिप ने पूरे देश में राजीव गांधी के खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया। धार्मिक आधार पर बंटे समाज और सियासत के इसी नाजुक मोड़ पर राम मंदिर का ताला खोलने की पटकथा लिखी गयी। इसके सूत्रधार थे राजीव गांधी के ममेरे भाई और उस वक्त के आंतरिक सुरक्षा मंत्री अरुण नेहरू। 1 फरवरी को राम मंदिर का ताला खोला गया और उसके चार दिन बाद 5 फरवरी को संसद में वह बिल आया, जिसके जरिये राजीव गांधी ने शाहबानो प्रकरण पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला पलट दिया था। बाद में ऐसा भी दावा किया जाता है कि आरएसएस ने राजीव की चुनाव में मदद की थी, जिसके बदले राजीव गांधी ने अयोध्या में ताला खोला था। 1984 में हुआ लोकसभा चुनाव एक ऐसा चुनाव था, जिसमें भारतीय चुनाव इतिहास में सीट के हिसाब से कांग्रेस को सबसे बड़ी जीत मिली थी। 523 सीटों के लिए हुए चुनाव में राजीव के नेतृत्व में अकेले कांग्रेस को 415 सीटें मिली थीं। लेकिन यह जीत कांग्रेस अपने दम पर हासिल नहीं कर पायी थी। राशिद किदवई की किताब 'ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ द पीपुल बिहाइंड द फॉल एंड द राइज ऑफ द कांग्रेस' के अनुसार कांग्रेस को इतनी बड़ी सफलता संघ की मदद से मिली थी। कांग्रेस के पूर्व नेता बनवारीलाल पुरोहित (जो तब नागपुर से लोकसभा सांसद थे) का दावा है कि आरएसएस के तत्कालीन सर संघचालक बालासाहेब देवरस और राजीव गांधी के बीच मीटिंग कराने में उन्होंने मुख्य भूमिका निभायी थी। बनवारीलाल पुरोहित का कहना था कि राजीव गांधी ने उनसे पूछा कि क्या वह संघ प्रमुख बालासाहब देवरस को जानते हैं। इस पर राजीव गांधी ने उसने राय लेनी चाही कि अगर संघ को राम जन्मभूमि के शिलान्यास की अनुमति दे दी जाती है, तो क्या वह कांग्रेस को समर्थन देगा।

रहस्यमयी बंदर की कहानी

जज कृष्णमोहन पांडेय ने 1991 में छपी अपनी आत्मकथा में लिखा है कि जिस रोज वह ताला खोलने का आदेश लिख रहे थे, तो उनकी अदालत की छत पर एक काला बंदर पूरे दिन फ्लैग पोस्ट को पकड़ कर बैठा रहा। वे लोग, जो फैसला सुनने के लिए अदालत आये थे, उस बंदर को फल और मूंगफली देते रहे। पर बंदर ने कुछ नहीं खाया। आदेश सुनाने के बाद ही वह वहां से गया। फैसले के बाद जब डीएम और एसएसपी उन्हें उनके घर पहुंचाने गये, तो उन्होंने उस बंदर को अपने घर के बरामदे में बैठा पाया। उन्होंने उसे प्रणाम किया। वह कोई दैवीय ताकत थी।

कारसेवक ने खून से लिखा 'सीताराम'

उत्तरप्रदेश में तब मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री हुआ करते थे। हिंदू साधु-संत अयोध्या कूच कर रहे थे। उन दिनों श्रद्धालुओं की भारी भीड़ अयोध्या पहुंचने लगी थी। प्रशासन ने अयोध्या में कर्फ्यू लगा रखा था। इसके चलते श्रद्धालुओं को प्रवेश नहीं दिया जा रहा था। पुलिस ने बाबरी मस्जिद के डेढ़ किलोमीटर के दायरे में बैरिकेडिंग कर रखी थी। कारसेवकों की भीड़ बेकाबू हो गयी थी। पहली बार 30 अक्टबूर, 1990 को कारसेवकों पर चली गोलियों में पांच लोगों की मौत हुई थी। इस गोलीकांड के दो दिनों बाद ही 2 नवंबर को हजारों कारसेवक हनुमान गढ़ी के करीब पहुंच गये, जो बाबरी मस्जिद के बिल्कुल करीब था। प्रशासन उन्हें रोकने की कोशिश कर रहा था, लेकिन 30 अक्टूबर को मारे गये कारसेवकों के चलते लोग गुस्से से भरे थे। हनुमान गढ़ी के सामने लाल कोठी की संकरी गली में कारसेवक बढ़े चले आ रहे थे। पुलिस ने सामने से आ रहे कारसेवकों पर फायरिंग कर दी, जिसमें करीब ढेड़ दर्जन लोगों की मौत हो गयी। यह सरकारी आंकड़ा है। इस दौरान ही कोलकाता से आये कोठारी बंधुओं की भी मौत हुई थी। दिगंबर अखाड़े के नुक्कड़ पर लोग पुलिस की गोलियों से सड़कों पर गिर रहे थे। एक जगह पुलिस के फेंके गये आंसू गैस के गोलों को दोबारा उठा कर वापस उनकी तरफ फेंक रहा था। उसने आंख के आसपास चूना लगा रखा था, ताकि आंसू गैस के गोलों का असर न हो। थोड़ी ही देर में वह व्यक्ति पुलिस की गोली का शिकार होकर सड़क पर गिर गया और वहीं बीच सड़क पर उसने अपने खून से लिख दिया, 'सीताराम'।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
189200 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	24.0 °c	7.9 °c
सूर्यास्त (आज) :	17.24 बजे	
सूर्योदय (कल) :	06.28 बजे	

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 15 जनवरी, 2024
www.azadsipahi.in

राजनीति में सामूहिक विचारों को समाहित करना जरूरी : सुदेश

आजसू पार्टी का मिलन समारोह, रांची के कई युवाओं ने थामा पार्टी का दामन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राजनीति में किसी एक व्यक्ति का विचार नहीं बल्कि सामूहिकता के बोध के साथ अनेक विचारों को समाहित करना महत्वपूर्ण होता है। कल की चिंता से पहले हमें आज लिये जा रहे राजनीतिक फैसलों के प्रति गंभीर होने की आवश्यकता है। अगर हम आज गंभीर नहीं हुए तो आने वाले समय में हमें इसका नुकसान उठाना होगा।

उक्त बातें पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने हरमू स्थित केंद्रीय कार्यालय में आयोजित मिलन समारोह में कहीं। इस दौरान मो. सरफराज अलाम और मो. शाहनवाज अलाम के नेतृत्व में रांची शहर के सैकड़ों युवाओं ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

पार्टी में शामिल हुए सभी युवा साथियों का स्वागत करते हुए सुदेश महतो ने कहा कि राजनीति किसी एक व्यक्ति के विचार से नहीं बल्कि अनेक विचारों को एक जगह समाहित करने से चलती और सशक्त दिखती है। राजनीति में सामूहिकता को प्लेटफार्म देने का काम आजसू पार्टी करती है। पार्टी में सभी की भावनाओं का सम्मान होता है। भावनाओं के सम्मान और विचारों को राज्य के विकास में लगाना हमारा लक्ष्य है।

उन्होंने कहा कि इंडी अलायंस सिर्फ चुनाव लड़ने और जीतने की कोशिश तक ही सीमित है। इसमें देश और देशवासियों की तरक्की नहीं दिखायी देती है। देश एवं देशवासियों के प्रति इनकी कोई जवाबदेही नजर नहीं आती है।

डोमन सिंह मुंडा आजसू बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय अध्यक्ष बने

डॉ मुकुंद चंद्र मेहता केंद्रीय महासचिव बनाये गये

रांची। आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो के निर्देशानुसार डोमन सिंह मुंडा को आजसू बुद्धिजीवी मंच का केंद्रीय अध्यक्ष एवं डॉ मुकुंद चंद्र मेहता को आजसू बुद्धिजीवी मंच का केंद्रीय महासचिव मनोनीत किया गया है। डोमन सिंह मुंडा को आजसू बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय अध्यक्ष एवं डॉ मुकुंद चंद्र महतो को आजसू बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय महासचिव बनाये जाने पर आजसू पार्टी के केंद्रीय मुख्य प्रवक्ता डॉ देवशरण भगत, उपाध्यक्ष हसन अंसारी, केंद्रीय महासचिव लंबोदर महतो, रौशनलाल चौधरी, राजेंद्र मेहता, हरेलाल महतो, कौशिक चांद, अंचल किंगर, अरविंद कुमार, सज्जाद आलम, प्रो मिथलेश सिंह, प्रो केपी सिन्हा, प्रो शंभू सिंह, शिव शंकर प्रसाद, जितेंद्र सिंह, आदित्य महतो इत्यादि ने बधाई दी।

जयंती पर याद किये गये डॉ. बहादुर सिंह

अखिल झारखंड बुद्धिजीवी मंच के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. बहादुर सिंह की जयंती पर उनके चित्र पर माल्यार्पण कर और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इस दौरान उनकी याद में एक मिनट का मौन रख कर उन्हें नमन किया गया। पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने उन्हें याद करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में बहादुर जी ने उल्लेखनीय कार्य किये हैं। उन्होंने अपनी सोच और ऊर्जा से पार्टी के विचारों को जन जन तक पहुंचाने का काम किया था। पार्टी में उनके योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। इस दौरान पार्टी के केंद्रीय महासचिव राजेंद्र मेहता, केंद्रीय सांगठनिक सचिव एसअली, केंद्रीय प्रवक्ता सुधीर यादव, केंद्रीय मीडिया संजोयक परवाज खान मुख्य रूप से उपस्थित रहें।

इन्होंने ली सदस्यता :

मो. सरफराज अलाम, मो. शाहनवाज अलाम, वसीम आलम, शाहिद, आयण, अनस, मिट्ठू, अमन, शाकिब, ओबैश अलाम, दानिश, फरहान, आबेदीन, अट्टनस, आरिज, वसीम, शाद, अफ्फान, राजू, साहेब, अमीर, सलमान, असीम, शाहनवाज, जावेद, शान, नौशाद, उफान, अनस खान, मुटुन अलाम, ओवैसी, इरशाद, तैयब, तनवीर अलाम समेत सैकड़ों युवाओं ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

भारत जोड़ो न्याय यात्रा में सुबोधकांत आलमगीर और राजेश ठाकुर हुए शामिल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में राहुल गांधी के नेतृत्व में मणिपुर की राजधानी इंफाल के निकट थोबल से भारत जोड़ो न्याय यात्रा का शुभारंभ रविवार को हुआ। इस अभियान में शामिल होने के लिए पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राजेश ठाकुर एवं झारखंड सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम मणिपुर के थोबल पहुंचे। नेताओं ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा के शुभारंभ के मौके पर थोबल में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित भी किया। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव से पूर्व निकाली जा रही कांग्रेस पार्टी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा 67 दिन में 15 राज्यों और 110 जिलों से होकर गुजरेगी। यात्रा के दौरान लगभग 6700 किलोमीटर की दूरी तय की जायेगी। अधिकतर यात्रा बस से होगी और कहीं-कहीं किसी क्षेत्र में पदयात्रा भी की जायेगी। भारत जोड़ा न्याय यात्रा झारखंड भी पहुंचेगी। भारत जोड़ो न्याय यात्रा का समापन मार्च के तीसरे सप्ताह में मुंबई में होगा।

15 राज्यों और 110 जिलों से होकर गुजरेगी न्याय यात्रा

15 जनवरी से 14 फरवरी तक चलेगा सड़क सुरक्षा माह

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड सहित पूरे देश में 15 जनवरी से 14 फरवरी 2024 तक राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह मनाया जायेगा। इस दौरान लोगों को जागरूक किया जायेगा।

इस संबंध में विभाग ने दिशा-निर्देश जारी किया है। जागरूकता को लेकर जिला स्तरीय बैठकें निर्धारित की जायेंगी। इसमें यातायात पुलिस, परिवहन अधिकारियों, गैर सरकारी संगठनों आदि सहित प्रमुख संस्थाओं को एक साथ लाया जायेगा। इसका उद्देश्य सड़क सुरक्षा स्थिति पर चर्चा और समीक्षा करना, ब्लैक स्पॉट और दुर्घटना संभावित क्षेत्रों की पहचान करने के साथ ही प्रभावी हस्तक्षेप की रणनीति बनाना है।

मचान के मिथिला पंचांग का लोकार्पण

सीसीएल के निदेशक (कार्मिक) हर्षनाथ मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। मिथिलांचलवासियों की सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था 'मचान' द्वारा प्रकाशित मिथिला पंचांग 2024 का लोकार्पण कार्यक्रम रविवार 14 जनवरी को कांके रोड स्थित होटल हॉलिडे होम में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सीसीएल के निदेशक (कार्मिक) हर्षनाथ मिश्र ने कहा कि पंचांग शुभ कार्य का प्रतीक है। बतौर विशिष्ट अतिथि प्रमोद झा ने कहा कि पंचांग हमारे जीवन को अनुशासित बनाता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादमी नयी दिल्ली की मैथिली भाषा परामर्शदातृ समिति के पूर्व संयोजक एवं मैथिल साहित्यकार डॉ विद्यानाथ झा 'विदित' ने कहा कि पंचांग परंपरागत भारतीय कालदर्शक है, जिसमें समय की हिंदू इकाइयों (वार, तिथि, नक्षत्र, करण, योग आदि) का उपयोग होता है, जो मानव जीवन को प्रभावित करता है। समारोह में इंदु मिश्रा (आर्टिस्ट मिथिला पेंटिंग) भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। कार्यक्रम की शुरुआत में अतिथियों ने महाकवि विद्यापति के चित्र पर माल्यार्पण किया। सखी बहिनपा मैथिलानी समूह, रांची की सदस्यों द्वारा प्रस्तुत भगवती वंदना 'जय जय भैरवी असुर भयाविनी' के बाद बबीता झा, अनीता झा, बिट्ठू झा, सुनीता झा, कल्पना मिश्रा आदि सखियों ने समूह स्वागत गीत 'आतिथ्य करू स्वीकार यौ पाहुन' गाया, जिसकी सराहना की गयी।

मचान के संयोजक भारतेंदु झा ने बताया कि इस पंचाग में कवि विद्यापति सहित मिथिला विभूति, स्वच्छता एवं सामाजिक क्रांति के जनक, पद्मभूषण सम्मानित स्व डॉ बिंदेश्वर पाठक, मिथिला पेंटिंग को बढ़ाने वाली पद्मश्री सुभद्रा देवी, मैथिली साहित्यकार स्व डॉ देवकांत झा, समाजसेवी स्व इंदुशेखर झा एवं स्व ताराकांत ठाकुर की छवि के साथ मिथिलांचल में किये जानेवाले व्रत, त्योहार एवं महापुरुषों की जयंती की जानकारी दी गयी है। मिथिलांचलवासी इस पंचाग से विवाह, द्विरागमन, मुंडन, उपनयन, गृहारंभ, गृहप्रवेश, एकादशी व्रतोद्यापन, भदवा (पंचक) इत्यादि की जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हुई। महाकवि विद्यापति के गीतों को प्रख्यात चिकित्सक डॉ उज्ज्वल राय ने सशक्त तरीके से पेश किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण 'रवींद्रक आंगन सं' रहा, जिसमें दिल्ली से आये मैथिली गीत एवं गजल के प्रख्यात कलाकार अवनींद्र ठाकुर ने मैथिली गीत, संगीत, साहित्य एवं सिनेमा जगत स्तंभ रहे अपने पिता स्व रवींद्र (मैथिली मंच की स्थापित जोड़ी रवींद्र-महेंद्र फेम) के लिखे एवं स्वरबद्ध किये गीतों की प्रस्तुति दी, जिसमें 'तांगा चलल अलबेला सिमरिया', 'लटर पटर दुनु तंग करे', 'जेमहरे देखू तेमहर ठाकुर-ओझा-मिसर', 'चिट्ठी के तार बुझू' आदि गीतों का भरपूर आनंद श्रोताओं ने लिया। इस अवसर पर पूर्व पार्षद अरुण झा, बिनय कुमार झा, दयानंद कुमर, प्रेमचंद्र झा, जयंत झा, ब्रजकिशोर झा, पीसी मिश्रा, दूरदर्शन केंद्र रांची के पूर्व निदेशक पीके झा, डॉ आभा झा, डॉ सरस्वती मिश्रा, कुमुद झा, मृगेंद्र मिश्रा, कृष्ण कुमार झा, ब्रज कुमार झा सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जेसीआइ रांची के अध्यक्ष विक्रम चौधरी ने टीम के साथ ली शपथ

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जेसीआइ रांची का 64वां शपथ ग्रहण समारोह रांची के मोरहाबादी स्थित संगम गार्डेन में रविवार को हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि रांची प्रक्षेत्र के आइजी अखिलेश कुमार झा थे। विशिष्ट अतिथि जेसीआइ इंडिया जोन तीन की जोन प्रेसिडेंट वसुंधरा सिंह थीं।

इस समारोह में संस्था के नवनिर्वाचित अध्यक्ष विक्रम चौधरी ने अपनी टीम के साथ शपथ ली। विक्रम चौधरी ने शपथ लेते हुए आनेवाले वर्षों में समाज को नयी ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए अपना विजन बताया। अपनी टीम के लिए न्यू विजन, न्यू डायरेक्शन का नारा दिया।

ये है नयी टीम

अध्यक्ष-विक्रम चौधरी, **सचिव**-मयंक अग्रवाल, **उपाध्यक्ष**-निशांत मोदी, पीयूष केडिया, तरुण अग्रवाल, साकेत अग्रवाल, अभिषेक कुमार जैन, रवि आनंद

कोषाध्यक्ष-नटवर बाजोरिया, **संयुक्त सचिव**-कौशल मुरारका, **प्रवक्ता**-अमन पोद्दार

ये हैं निदेशक

आदित्य जालान, अक्षत आनंद, अमन सिंघानिया, अंकित अग्रवाल, अंकित मोदी, अनिमेष निखिल, अनुभव कुमार अग्रवाल, दीपक कुमार पटेल, मनदीप सिंह, मोहित बागला, निखिल मोदी, प्रवीण कुमार अग्रवाल, राहुल टिबड़ेवाल, रौनक टेकरीवाल, रिषभ जैन, रोहित दयानी, संदीप खेमका, संकेत सरावगी, शिवि तनेजा, शुभम बुधिया और वैभव जैन।

मंच संचालन अभिषेक नारनोलिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन अनुभव अग्रवाल, अनिमेष निखिल एवं सृजन हेतमसरिया ने किया। कार्यक्रम में जेसीआइ रांची के पूर्व अध्यक्ष, पूर्व सचिव एवं रांची की जानी-मानी संस्था के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें
www.azadsipahi.in

ब्रदर्स एकेडमी में जी-सैट प्रवेश परीक्षा आयोजित

ऑफलाइन मोड में सफलतापूर्वक आयोजित हुई परीक्षा

आजाद सिपाही संवाददाता

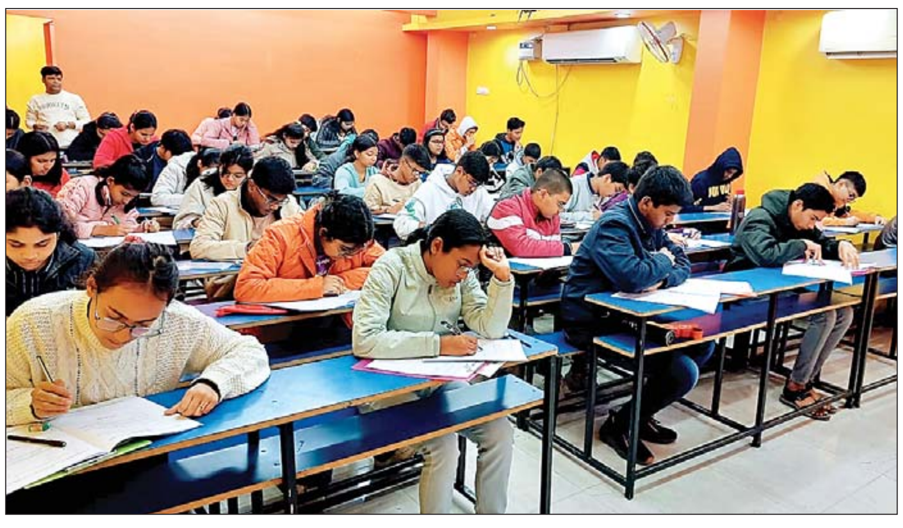

रांची। नये सत्र के लिए रविवार को ब्रदर्स एकेडमी के विभिन्न कोर्स में नामांकन हेतु जी-सैट प्रवेश परीक्षा का आयोजन सफलतापूर्वक हुआ। प्रवेश परीक्षा ऑफलाइन मोड में आयोजित की गयी थी। जिसमें विभिन्न सत्रों में कुल मिलाकर 977 से ऊपर की संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे। अभ्यर्थियों ने प्रश्न पत्र के पैटर्न और पूछे गये प्रश्नों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस पैटर्न की परीक्षा से ही वास्तविक मेधा का चयन संभव है। नये सत्र के लिए 9 अप्रैल -24 से बैच शुरू होंगे।

जो छात्र आज की प्रवेश परीक्षा में शामिल नहीं हुए हैं, वे ब्रदर्स एकेडमी की अगली ग्रैंड-स्कॉलरशिप एडमिशन टेस्ट (जी-सैट) 16 मार्च-2024 में भाग ले सकते हैं। जो कि ऑफलाइन मोड में नये सत्र के लिए आयोजित की जायेगी। जी-सैट आवेदन पत्र ऑनलाइन http://www.brothersacademy.co.in/admissions.php पर भरा जा सकता है। साथ ही आवेदन पत्र रांची में लालपुर या डोरंडा परिसर से भी प्राप्त किये जा सकते हैं और भरे जा सकते हैं। केवल पहले 2000 आवेदकों के लिए पंजीकरण निःशुल्क है (इसके बाद 500/- रुपये)। जी-सैट बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये परीक्षा ही आइआइटी-जेइइ और एनआइआइटी कोचिंग के लिए ब्रदर्स ऐकेडमी में नामांकन कराने का एकमात्र तरीका है। जी-सैट के सभी प्रतिभागियों को हम पाठ्यक्रम शुल्क पर न्यूनतम 40% छात्रवृत्ति देंगे और प्रत्येक पाठ्यक्रम में शीर्ष प्रदर्शन करने वालों को सर्वाधिक 100% छात्रवृत्ति से पुरस्कृत किया जायेगा। वर्तमान में कक्षा 7, 8, और 9 में पढ़ रहे छात्र नियमित स्कूली अध्ययन के साथ आइआइटी-जेइइ और मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं के लिए एनटीएसइ, ओलंपियाड और बेसिक्स फाउंडेशन को लक्ष्य मानते हुए एक साल / 3 साल / 4 साल / 5 साल फाउंडेशन कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। वर्तमान में कक्षा 10 में पढ़ने वाले और कक्षा 11 में जाने वाले छात्र आइआइटी-जेइइ और एनआइआइटी (मेडिकल) के लिए 2 साल के पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं, जिसमें उन्हें कक्षा 10 पास करने के बाद 2 साल के लिए इन प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सघन प्रशिक्षण के साथ कक्षा 11 और 12 के अपने नियमित स्कूल सिलेबस को भी पढ़ाया जायेगा। यह जानकारी ब्रदर्स एकेडमी के निदेशक पारस कुमार अग्रवाल ने दी।

सदानों के हक के लिए आर-पार की लड़ाई होगी : राजेंद्र प्रसाद

आजाद सिपाही संवाददाता

माय-माटी के असली सपूतों को मिले उनका अधिकार पद्मश्री मुकुंद नायक

सदानों के अधिकारों की हकमारी बर्दाश्त नहीं: पद्मश्री मधु मंसूरी

रांची। मूलवासी सदान मोर्चा की बैठक रविवार को केंद्रीय अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इसमें लोकसभा और विधानसभा के चुनाव को देखते हुए राजनीतिक अधिकारों को लेकर विशेष चर्चा हुई।

राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि झारखंड में लोकसभा और विधानसभा में आरक्षित सीटों पर तो झारखंडियों को उम्मीदवार राजनीतिक दल बनाते हैं, लेकिन जनरल सीटों में मूलवासी सदानों की जगह पर बाहर के व्यक्ति को राजनीतिक दल उम्मीदवार बना कर सदानों की हकमारी कर रहे हैं। इसे अब किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। उन्होंने मूलवासी सदान छात्र-छात्राओं और युवाओं से अपने अधिकार के लिए सड़क पर उतरने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि सदान समुदाय के अगड़े-पिछड़े, दलित से आनेवाले हर वर्ग को उनका अधिकार मिले, सरकार यह सुनिश्चित करे। पद्मश्री मुकुंद नायक ने कहा कि माय- माटी के असली सपूतों को इनका वाजिब हक मिलना ही चाहिए।

पद्मश्री मधु मंसूरी ने कहा कि मूलवासी सदानों की जिस तरह से उपेक्षा हो रही है, इसी तरह सदानों की उपेक्षा होती रही तो सदानों के लिए विकट परिस्थिति झारखंड में खड़ी हो जायेगी। इस बात को हर मूलवासी सदान और झारखंडियों को समझना होगा।

झारखंड आंदोलनकारी क्षितीश कुमार राय ने कहा कि झारखंड में मूलवासी सदान दोयम दर्जा के नागरिक बन कर रह गये हैं। बैठक में महेंद्र ठाकुर, विशाल कुमार सिंह, प्रोफेसर डॉ रामप्रसाद विजय राजगोरिया, रजनीश ठाकुर, प्रो अरविंद, आदि उपस्थित थे।

विधायक अंबा प्रसाद ने बांटे चूड़ा-तिलकुट

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। स्थानीय विधायक अंबा प्रसाद हर त्यौहार के भांति मकर संक्रांति का पर्व भी क्षेत्र वासियों के साथ मनाया। मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में बड़कागांव की विधायक अंबा प्रसाद बड़कागांव दैनिक बाजार में स्टॉल लगाकर चूड़ा, दही और तिलकुट का वितरण किया। बड़कागांव डेली मार्केट के समीप विधायक के साथ मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में खुशियां बांटने के लिए सैकड़ों की तादाद में महिला पुरुष और बच्चे पहुंच गये और लोग क्रमबद्ध तरीके से विधायक के हाथों तिलकुट और चूड़ा लेकर उन्हें मकर संक्रांति की ढेर सारी बधाई दी। मौके पर विधायक अंबा प्रसाद ने लोगों से कहा कि मैं हर एक त्यौहार की खुशी आप लोगों के साथ बांटना चाहती हूं, आप लोगों के साथ त्यौहार मनाने से एक अलग ही खुशी मिलती है आप लोगों के बीच पहुंच कर मैं काफी उत्साहित हो उठती हूं। विधायक ने कहा कि मेरे क्षेत्रवासी मेरे परिवार के समान है यही वजह है कि मैं हर एक त्योहार क्षेत्र वासियों के साथ मनाती आई हूं। मौके पर मुख्य रूप से युवा कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष आनंद मेहता उपाध्यक्ष पप्पू प्रसाद, पंचायत अध्यक्ष गौतम कुशवाहा, सुरेश चौधरी, परमेश्वर महतो, युवा नेता रोहित सिंह, युवा नेता लालू कुमार, सोसल मीडिया प्रभारी नरेंद्र कुमार, रोहित कुमार, मनोज कुमार, बिनय जायसवाल, सूरज कुमार सहित कई महिला पुरुष मौजूद थे।

सामूहिक रूप से मना मकर संक्रांति का पर्व

जयनगर (आजाद सिपाही)। प्रखंड के मॉडर्न किड्स वे विद्यालय तिलोकरी के प्रांगण में 2024 के नये फसलों के साथ मकर संक्रांति के हर्ष और सांस्कृतिक पर्व के पुनीत बेला में तिलोकरी सहित आसपास के सनातन ग्रामीणों ने चूड़ा दही गुड़ तिलकूट का जलपान एक साथ मिल बैठ कर करते हुए अपने जीवन को नये उर्जा, उमंग और उत्साह के प्रेम, सौहार्द, श्रद्धा से ओतप्रोत होकर मिल बैठ खाये तथा मनाया। मंच का संचालन सुनील यादव ने किया। वहीं सदर अस्पताल कोडरमा से चल कर आये वरिष्ठ चिकित्सक डॉ रमण ने मकर संक्रांति तथा स्वास्थ्य के बारे मे बौद्धिक देते हुए लोगों में ज्ञान की प्रकाश डाला। विभाग कार्यवाह मुकेश राणा ने अपनी सुरीली गीतों से लोगों का मन मोह लिया। प्राचार्य कैलाश लाल बर्णवाल ने लोगों को पर्यावरण से जुड़ने तथा योग करने की सलाह दी तथा पौधे वितरण किये। वहीं शारदा पांडेय, फुलेश्वर राणा, वार्ड महेंद्र यादव, श्याम सुंदर पंडित के अमिट सहयोग से कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें श्याम सुंदर मोदी, रामचंद्र पंडित, महावीर पंडित, कपिलदेव साव, छोटू साव, प्रकाश यादव, सचिन भुइंया, जितेंद्र मोदी, किशोर मोदी, सुनील भुइयां, राज दास, नीतीश दास, दीपा अंशु राम, आर्यन पासवान, अनूप पासवान, धीरज राणा इत्यादि काफी संख्या में ग्रामीणों तथा बच्चों ने चूड़ा दही तिल गुड़ का आनंद लेते हुए एक दूसरे को मकर संक्रांति की बधाई दी।

कोठियार के लोग झरने के गंदे पानी से बुझाते हैं प्यास

सतगावां (आजाद सिपाही)। ठंडी मौसम के बाद आने वाले भीषण गर्मी में भी पहाड़ी क्षेत्र के कोठियार पंचायत के सुदूरवर्ती गांव सेठवा के ग्रामीणों के बीच जल संकट की समस्या विकराल रूप है। पानी के लिए इन इलाकों में हाहाकार मचा हुआ है। इस गांव में लगभग दर्जनों लोग निवास करते हैं इस गांव में कुएं, चापाकल, जल मीनार नहीं है। यहां के लोग एक किलोमीटर दूर पहाड़ से निकलने वाला झरने का गंदे पानी से अपनी प्यास बुझा रहे हैं। रोजमर्रा का कार्य कर रहे हैं। जीवन की प्राथमिक आवश्यकता जल की स्थित इन पहाड़ी क्षेत्र में इतनी भयावह होती जा रही है कि मानव और पशु एक ही जगह से पानी पी रहे हैं। भूजल स्तर काफी नीचे चले जाने से इस क्षेत्र के आसपास गांवों में भी गर्मी के दिनों में कुआं तथा हैंडपंप में भी पानी सूख जाता है जबकि पहाड़ी इलाकों में रहने वाले लोग अपनी जान जोखिम में डालकर जंगलों से पानी लाने को मजबूर हैं और लोग गंदा पानी पीकर जीवन यापन कर रहे है। ग्रामीण कुंती देवी, उषा देवी, सुगवा देवी, सुनीता देवी, पारो देवी, मुनिया देवी, अशोक राय, रमेश राय, इतवारी राय, संतोष राय, दिलीप राय सहित दर्जनों महिलाओं ने बताया कि सेठवा गांव में एक भी चापाकल, कुआं और जलमीनार नहीं है। जिससे हमलोग के यहां पानी की घोर समस्या है हम सभी ग्रामीण पानी के लिए दूर-दूर तक भटक कर झरना के गंदा पानी से प्यास बुझाते हैं। कभी-कभी 1 किलोमीटर से अधिक पैदल चलकर कानीकेंद गांव से पानी लाकर पीते हैं। नहीं तो सभी ग्रामीणों को इस गंदे पानी को ही पीना पड़ता है।

प्रशिक्षु डीएसपी दिवाकर कुमार को बनाया गया सतगांवा का थाना प्रभारी

सतगावां (आजाद सिपाही)। पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह ने प्रशिक्षु डीएसपी दिवाकर कुमार को सतगावां थाना का प्रभारी बनाया है। उन्होने रविवार को थाना प्रभारी आनंद कुमार साह से पदभार ग्रहण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि हमारी पहली प्राथमिकता लॉ एंड मेंटेन करना और थाना क्षेत्र अंतर्गत अपराध पर नियंत्रण करना, अवैध शराब, अपराध, भारी वाहनों की तेज रफ्तार पर नियंत्रण और अंकुश लगाना होगा। अपराधियों पर पैनी नजर रहेगी क्षेत्र में जनता के सहयोग से लॉ एण्ड ऑर्डर का पालन कराना और पुलिस और जनता के बीच सामंजस्य स्थापित कर क्षेत्र में आपराधिक गतिविधियों पर नजर रखना हमारी प्राथमिकताओं में होगा। मौके पर एसआई मनोज चौतम्बा, अशोक कुमार यादव, एएआई निशात अहमद, कृष्णा राम, नंदकिशोर यादव, दिनेश मुर्मू सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद थे।

पानी की सप्लाई 15 दिनों से ठप, मचा हाहाकार

सतगावां (आजाद सिपाही)। प्रखंड के बासोडीह पंचायत, समलडीह पंचायत, शिवपुर पंचायत और टेहरो पंचायत में पानी सप्लाई 15 दिनों से बंद है जिससे इन पंचायतों के ग्रामीणों के बीच पेयजल संकट हो गयी है। बताया जाता है कि 15 दिनों पूर्व पाइप का रबर कट जाने के कारण लगभग 15 दिनों से पानी की सप्लाई नहीं हो रही है। जिससे 4 पंचायतों के लगभग 30 हजार आबादी के समक्ष गंभीर पेयजल संकट उत्पन्न हो गयी है। सबसे बड़ी समस्या सिहास, डुमरी, राजघटी गांव के लोगों को हो रही है। बासोडीह पंचायत के डुमरी, राजघटी और शिवपुर पंचायत के सिहास, नासरगंज की लगभग आबादी पानी के लिए पेयजलापूर्ति पर ही निर्भर है। ग्रामीण जलापूर्ति विभाग में संविदा पर कार्यरत अरुण शर्मा ने कहा की मुख्य मार्ग के समीप पाइप का रबर कट जाने के कारण 15 दिनों से पेयजलापूर्ति योजना ठप हो गयी है एक से दो दिनों के अंदर सुधार कर लिया जायेगा।

चरही घाटी में 35 हाथियों का झुंड

काफी देर तक वाहनों का आवागमन रहा ठप

आजाद सिपाही संवाददाता

चरही। हजारीबाग जिले के चरही घाटी में 35 जंगली हाथियों के झुंड को एनएच-33 पर देखा गया। अहले सुबह करीब 3 बजे हाथियों का झुंड पुरनापानी जंगल की एक छोर से दूसरी छोर की ओर जा रहा था। हाथियों के झुंड ने एनएच-33 पार करने में काफी समय लिया। जिसकी वजह से दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गयी। इस दौरान एनएच पर करीब 40 मिनट तक वाहनों का आवागमन ठप रहा। वहीं, सुबह लगभग 6:00-6:30 बजे झुंड से बचे 6 जंगली हाथियों ने एनएच-33 पार किया। जिसमें लगभग 30 मिनट तक वाहनों का आवागमन ठप रहा। कसियाडीह के समीप जंगल में जमा रहा हाथियों का झुंड 35 जंगली हाथियों के झुंड में तीन-चार बच्चे भी शामिल थे। 14 जनवरी के दिन, लगभग 11 बजे तक 35 जंगली हाथियों का झुंड चरही घाटी कसियाडीह के समीप जंगल में जमा रहा। इससे पहले झुंड ने 13 जनवरी की रात चनारो पंचायत के डूमर बेड़ा गांव में किसानों के फसल को रौंद दिया।

हाथियों को भगाने के लिए दस सदस्यीय टीम पहुंची चरही

जंगली हाथियों के झुंड को भगाने के लिए दस सदस्य टीम कुज्जु और गोला से हाजारीबाग पहुंची है। जंगली हाथी किसानों के मकान और फसल को नुकसान नहीं पहुंचाये, इसके लिए रेंजर अनिल कुमार के निर्देश में प्रभारी वनपाल शैलेन्द्र कुमार और वनरक्षी विकास उरांव सहित हाथियों को भगाने वाली टीम लगातार निगरानी रख रही है। वनरक्षी विकास उरांव ने ग्रामीणों से सहयोग की अपेक्षा की है। उन्होंने ने कहा कि जंगली हाथियों के झुंड को न छेड़ें। जंगली हाथी जो भी नुकसान करेंगे, उसका मुआवजा वन विभाग देगा।

अंधेरे में फसलों को नष्ट कर सड़क का निर्माण

आजाद सिपाही संवाददाता

केरेडारी। प्रखंड क्षेत्र के पेटो पंचायत के भदईखाप गांव में डैम के समीप शनिवार की रात को कोयले की ट्रांसपोर्टिंग के लिए सड़क निर्माण के दौरान खेत में लहलहाती सरसो और आलू की फसल को रौंद कर क्षतिग्रस्त कर दिया गया। इस से भू रैयत बेहद आक्रोशित हैं। इसे लेकर केरेडारी थाना में रविवार को लिखित आवेदन भी दिया है। इस आवेदन में जितेंद्र यादव, रितेश कुमार यादव, धनेश्वर यादव, भुवनेश्वर यादव, शिवनारायण यादव, मो मनोवर सहित कई लोगों के हस्ताक्षर है। रविवार की सुबह जब भू रैयत अपने खेत में पहुंचे तो फसलों को क्षतिग्रस्त किये जाने से आक्रोशित हो गये। इन रैयतों का साफ कहना है की ये जमीन हम लोगों की खतियानी जमीन है। बिना किसी सुचना के रात के अंधेरे में हमलोगों की जमीन में सड़क निर्माण कर दिया गया है। इस संबंध में पूछे जाने पर सड़क निर्माण का कार्य कर रहे मां लक्ष्मी इंटर प्राइजेज रांची के पीके पांडेय ने कहा की जिन रैयतों के फसलों की क्षति हुई है उनका मुवाबजा दिया जायेगा। वहीं दूसरी ओर एनटीपीसी के एक अधिकारी ने कहा की सड़क निर्माण का कार्य जीएम लैंड में हो रहा है और उनकी जमीन का मुवाबजा दिया जा चुका है और गांव के स्थानीय लोगों की सहमति से ही सड़क निर्माण का कार्य किया जा रहा है।

अयोध्या से आये पूजित अक्षत का किया वितरण

आजाद सिपाही संवाददाता

इचाक। अयोध्या से आये पूजित अक्षत का वितरण बरका खुर्द पंचायत अंतर्गत बरका खुर्द के साथ-साथ रतनपुर, सायल कला, सायल खुर्द और मोमाराक टोला में गाजे बाजे के साथ बड़ी धूमधाम से जिला परिषद सदस्य रेणु देवी, बरका खुर्द पंचायत की मुखिया सीता कुमारी, सांसद प्रतिनिधि ओमप्रकाश मेहता, पंचायत समिति सदस्य प्रदीप कुमार मेहता, पूर्व प्रमुख कौशल नाथ मेहता, पूर्व मुखिया इंद्रदेव मेहता अनीता देवी उप मुखिया विक्रम मेहता, लखन कुमार मेहता के नेतृत्व में सैकड़ों महिला पुरुष शामिल होकर किया। सर्वप्रथम पूजित अक्षत का वितरण बरका खुर्द के सभी गलियों में वितरण करते हुए रतनपुर और सायल कला और सायल खुर्द मैं भी वितरण किया गया। मौके पर मुख्य रूप से अशोक कुमार मेहता, श्रीकांत मेहता, हिंदू युवा संघ के मनोज मेहता, लोकनाथ महतो समेत कई महिला पुरुष शामिल थे।

दही-चूड़ा वितरण कार्यक्रम में केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री और सदर विधायक हुए शामिल

आजाद सिपाही संवाददाता

इचाक। इचाक प्रखंड भाजपा परिवार की ओर से बुढ़िया माता मंदिर परिसर में दही-चूड़ा कार्यक्रम का आयोजन रविवार को हुआ। कार्यक्रम में मुख्य रूप से कोडरमा सांसद सह केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी, हजारीबाग सदर विधायक मनीष जायसवाल और जीप चेयरमैन उमेश प्रसाद मेहता शामिल हुए। सबसे पहले सबों ने बुढ़िया माता मंदिर में माथा टेका और क्षेत्र की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। उसके बाद सबों भाजपा परिवार संग बैठ चूड़ा, दही, तिलकुट और खिचड़ी खाया। इस दौरान राज्य मंत्री ने लोकपाल तापेश्वर कुमार को सॉल ओढ़ा कर सम्मानित भी किया। मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने कहा की त्योहार का मतलब ही है मिल जुल कर खुशियां मनाना। विधायक मनीष जायसवाल ने कहा की आज हम सभी एक साथ चूड़ा दही खाकर भाईचारगी और प्रेम का संदेश दे रहे हैं। मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता बटेश्वर मेहता, सांसद प्रतिनिधि सुनील मेहता, विवेकानंद सिंह, राजेश गुप्ता, उप प्रमुख सतेंद्र कुमार, प्रखंड सांसद प्रतिनिधि भागवत मेहता, ओमप्रकाश मेहता, हरिहर मेहता, निर्मल कुमार, महेश साव, भाजपा मंडल अध्यक्ष सुभाष सोनी, जयनंदन मेहता, जीप सदस्य रेनू देवी, मुखिया संघ के जिला अध्यक्ष रंजीत मेहता, मुखिया नंदकिशोर मेहता, उमेश मेहता, संवेदक संघ के जिला अध्यक्ष दीपक मेहता, पूर्व 20 सूत्री अध्यक्ष गौतम नारायण सिंह, मुनेंद्र मेहता, मुखलाल मेहता,पूर्व मुखिया सुनील मेहता, देगनारायण मेहता, सुधीर मेहता, राजेंद्र मेहता, अनिल मेहता, व्यवसाई सुरेश केशरी, रमेश हेंब्रम, सदर विधायक मीडिया प्रभारी रंजन चौधरी, प्रकाश चंद्रवंशी, सुनील तलवार, शंकर सिंह, अशोक मेहता, राकेश मेहता, दिलीप मेहता समेत कई लोग उपस्थित थे।

विधायक ने ट्रांसफार्मर कराया उपलब्ध

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। बड़कागांव राम जानकी मंदिर के समीप विधायक अंबा प्रसाद द्वारा उपलब्ध कराये गये 100 केवीए के नया ट्रांसफार्मर का स्थानीय ग्रामीणों की मौजूदगी में कांग्रेस कोर कमेटी के अध्यक्ष गौतम कुशवाहा और कार्यकर्ताओं ने संयुक्त रूप से दिन रविवार को फीता काटकर उद्घाटन किया। विदित हो कि दिन शनिवार को विधायक अंबा प्रसाद द्वारा 63 केवीए के स्थान पर 100 केवीए का नया ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया गया था। मौके पर पंचायत अध्यक्ष गौतम कुशवाहा, मीडिया प्रभारी नरेंद्र कुमार , रंजीत कुमार, मनोज कुमार, रोहित सिंह, गौतम वर्मा, विनय जायसवाल दीपक गुप्ता, प्रमोद सोनी, दिवाकर जायसवाल, बिंदु गुप्ता सहित कई लोग मौजूद रहे।

सेक्रेड हार्ट स्कूल को मिला वर्ष का उभरता विद्यालय का पुरस्कार

कोडरमा में पहला और राज्य में आठवां स्थान

आजाद सिपाही संवाददाता

झुमरीतिलैया। सेक्रेड हार्ट स्कूल झुमरी तिलैया को वर्ष का उभरता हुआ विद्यालय का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस विद्यालय को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर आठवां स्थान तथा जिला स्तर पर पहला स्थान प्राप्त हुआ है, जो अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस बारे में विद्यालय के निदेशक प्रमोद कुमार और प्राचार्य प्रमोद शर्मा ने बताया कि दिल्ली में द लीला एवीयंश कन्वेंशन न्यू दिल्ली में आयोजित जी-20 शिक्षा शिखर सम्मेलन 2024 में विद्यालय को यह पुरस्कार मिला है। उन्होंने बताया कि भारत इंस्टीट्यूशन एलिट कॉफी टेबल बुक में इस विद्यालय का आर्टिकल प्रकाशित हुआ था। इसी किताब का लोकार्पण दिल्ली में हो रहा था, जहां पर प्राचार्य प्रमोद कुमार शर्मा को पगड़ी पहना कर सम्मानित किया गया और मोमेंटो तथा सर्टिफिकेट दिया गया। इस अवसर पर अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल शेखर दत्त के अलावा इग्नू के प्रो वाइस चांसलर प्रोफेसर एमएम पंत, भारत सरकार के स्कूल एंड मास एजुकेशन फॉर्मर सेक्रेट्री अनिल स्वरूप, एनआईओएस के फॉर्मर चेयरमैन प्रोफेसर सीबी शर्मा, सीबीएसई के पूर्व अध्यक्ष विनीत जोशी, सीबीएसई के डायरेक्टर एकेडमिक्स जोसेफ इमानुएल, सिटी इंटरनेशनल स्कूल लखनऊ की संस्थापिका सुनीता गांधी अतिथि के रूप में मौजूद थे। बता दें कि विद्यालय के निदेशक प्रमोद कुमार के कुशल निर्देशन में विद्यालय पिछले कई वर्षों से सफलता का कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। प्राचार्य प्रमोद कुमार शर्मा ने कहा कि यह विद्यालय के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है और विद्यालय परिवार को गौरवान्वित करने वाला क्षण है। जिला भर में नंबर वन बनना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि इस पोजीशन को बनाये रखने का प्रयास निरंतर जारी रहेगा। विद्यालय की इस उपलब्धि पर पूर्व प्राचार्य नवीन कुमार, एकेडमिक कोऑर्डिनेटर प्रवीण कुमार, दीपक सर्राफ, सुभय कुमार, आशुतोष गौतम, संजय तिवारी, जेपी सिंह, विक्रम कुमार, शंकर कुमार, फैयाज कैशर, अभिलाषा सिंह, पायल सिंह, विशाल आनंद, पवन ठाकुर, सतीश कुमार, विक्की कुमार, हंसपाल कुमार, राकेश पांडेय, कुंदन राणा, अनमोल रतन, प्रियंका सिंह, अलका सिंह, प्रियंका गुप्ता, लता सिन्हा, रजनीबाला, सीमा जैन, सपना शर्मा, स्वीटी सिन्हा, स्वाति कुमारी, सरोज पांडेय, रेणु सेठ, पूजा सलूजा, रंजीता कुमारी, कुंतल जेठवा, रूबी वर्मा, राहुल कुमार, चंदन पांडेय, किशोर कुणाल, संजय कुमार, सुनील पाठक समेत अन्य शिक्षकों और शिक्षकेत्तर कर्मियों ने हर्ष जताया है।

उपप्रमुख और मुखिया संघ के जिलाध्यक्ष ने प्रशिक्षु डीएसपी से की मुलाकात

इचाक (आजाद सिपाही)। उपप्रमुख सतेंद्र कुमार और मुखिया संघ के जिला अध्यक्ष रंजीत कुमार मेहता ने प्रशिक्षु डीएसपी प्रशांत कुमार से इचाक थाने में शिष्टाचार मुलाकात किया। इस दौरान क्षेत्र की समस्या के बारे में बात किया। क्षेत्र में फैले नशा कारोबारियों पर अंकुश लगाने का आग्रह किया। साथ ही भू माफिया पर नकेल कसने का निवेदन किया।

वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट पहुंचे पीएचडी विभाग के विशेष सचिव

चलकुशा (आजाद सिपाही)। चलकुशा में बन रहे ग्रामीण जलापूर्ति निर्माण योजना का निरीक्षण करने पहुंचे पीएचडी विभाग के सचिव राजीव रंजन कुमार। अधिकारियों के साथ चलकुशा प्रखंड मुखिया संघ अध्यक्ष सह स्थानीय मुखिया आलोक सिंह भी पहुंचे। उन्होंने मांग किया कि अभी तक जिस टोला गांव मोहल्ला में नल नहीं पहुंचा है वहां पहुंचानें का काम करें और विशेष रूप से हमारे चलकुशा प्रखंड में शौचालय के नाम से ओडीफ घोषित हो चुका है, लेकिन कुछ ऐसे गरीब घर के लोग बच गये हैं जो शौचालय नहीं बनाये हैं। उन्हें शौचालय देने का काम करें। पीएचडी विभाग के विशेष सचिव ने आश्वासन दिया कि जो व्यक्ति शौचालय बनाना चाहते हैं वह बना ले विभाग से पैसा मैं दिलाने का काम करूंगा, लेकिन विभाग के द्वारा दिये गये मैप के अनुसार शौचालय बनना चाहिए। निरीक्षण के दौरान उनके साथ चल रहे पीएचडी विभाग के कार्यपालिका अभियंता मनोज कुमार, एसडीओ निखिल कुमार, जेई विमल कुमार, प्रिंस तिवारी, पिंटू सिंह, धीरेंद्र शर्मा मुन्ना यादव मौजूद थे।

तिलैया में सोहराय संपन्न, बांटे गये कंबल

विष्णुगढ़ (आजाद सिपाही)। प्रखंड के सुदूरवर्ती पूर्वी क्षेत्र तिलैया में आदिवासी का पारंपरिक त्योहार सोहराय संपन्न हुआ। इस अवसर पर पारंपरिक ढोल नगाड़े मांदर के थाप पर आदिवासी संथाल समिति के बड़ी संख्या में महिला पुरुष नृत्य संगीत के साथ झूमते नजर आये। कार्यक्रम में मांडू विधायक के धर्मपत्नी ललिता देवी पहुंचकर कहा कि आदिवासी संथाल समाज का पारंपरिक त्योहार है। इनकी संस्कृति से जुड़ा है। उन्होंने जरूरतमंदों के बीच कम्बल भी वितरण किया। मौके पर पूर्व जिला परिषद सरस्वती देवी, मुखिया मंजू देवी, छोटी शर्मा, पसस मूलिया देवी, लखन महतो, गंगिया देवी, गणेश साव, खरकी पसस, विनोद सोरेन, रीतलाल महतो, रामजी किस्कू, कार्तिक तुरी, लालचंद, नेमचंद महतो, निरंजन महतो, बैजनाथ साव, टीपन साव, बुधन महतो, रामलाल महतो, सोना राम, संतोष मुर्मू, छोटे लाल किस्कू, फातू मांझी, रमेश, करमचंद किस्कू, सुनील महतो, बहराम, छोटो, नरेश, सरयू तुरी, बिरजा मुर्मू, सुनील हेंब्रम, मनोज किस्कू, शिकारी मुर्मू, फूलचंद बेसरा, ललकु तुरी, केला मुर्मू, धनीराम हेंब्रम, अशोक किस्कू, ईश्वर महतो छोटेलाल हेंब्रम, टेकलाल हेंब्रम, सामलाल हेंब्रम आदि उपस्थित थे।

जयंत सिन्हा को सांसद महारत्न पुरस्कार दिये जाने की घोषणा पर हर्ष

टाटीझरिया (आजाद सिपाही)। सांसद जयंत सिन्हा को पिछले पांच वर्षों के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए नई दिल्ली के निर्णायक समिति ने सांसद महारत्न पुरस्कार के लिए घोषणा किया है। इस निमित्त भाजपा कार्यालय टाटीझरिया में प्रेस कांफ्रेंस महामंत्री सह प्रमुख संतोष मंडल की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि मांडू विधानसभा क्षेत्र के सांसद प्रतिनिधि विपिन कुमार सिन्हा, सांसद प्रतिनिधि शिक्षा विभाग हजारीबाग मिथिलेश कुमार पाठक, प्रखंड सांसद प्रतिनिधि कैलासपति सिंह, महेश अग्रवाल, पूर्व भाजपा विष्णुगढ़ अध्यक्ष डोमन प्रसाद गुप्ता, अनिल प्रसाद, होपन सिंह, रजनीकांत चौधरी, राजू यादव उपस्थित हुए। प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए पाठक ने कहा कि 2019 से लेकर अब तक सदन में हजारीबाग, रामगढ़, झारखंड और देशहित से जुड़े लगभग 1000 प्रश्न उठाया। अतिमहत्वपूर्ण विषयों को लेकर सदन में जीरो आवर के तहत 54 और नियम 377 के तहत 29 मुद्दों पर ध्यान आकृष्ट करवाया। इन्होंने सदन में देशहित से जुड़े 13 प्राइवेट मेंबर बिल प्रस्तुत किया। इनकी अध्यक्षता वाली वित्त संबंधी संसदीय स्थायी समिति को भी पांच वर्षों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ समिति के रूप में चुना गया। कहा कि वित्त समिति महत्वपूर्ण विषयों पर रिपोर्ट प्रस्तुत करती है, जिसके आधार पर केंद्र सरकार नीति बनाती है। देश के बजट बनाने में भी यह समिति अपनी भूमिका निभाती है। इन्हीं सब कारणों से सांसद जयंत सिन्हा को सांसद महारत्न पुरस्कार दिये जाने की घोषणा हुई है। यह ने केवल हजारीबाग वासियों के लिए बल्कि संपूर्ण लोकसभा और झारखंड राज्य की भी गर्व की बात है।

दही-चूड़ा और मिलन समारोह आयोजित

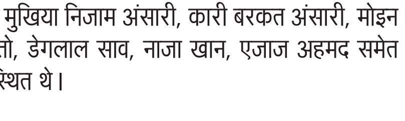

बरकट्ठा (आजाद सिपाही)। मकर संक्रान्ति के अवसर पर झारखंड मुक्ति मोर्चा की ओर दही-चुडा सह कार्यकर्ता मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुर्व जिला उपाध्यक्ष यासीन खान ने कोनहराखुर्द स्थित अपने आवास पर आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए। जिसमें झारखंड सरकार की मद्द और निषेध मंत्री बेबी देवी, केंद्रीय सचिव संजीव बेदिया, कमलनयन सिंह, प्रखंड अध्यक्ष कुद्दूस अंसारी, बासुदेव महतो समेत पार्टी के लोग मौजूद थे। यासीन खान ने मंत्री बेबी देवी का पुष्प गुच्छ भेटकर स्वागत किया। इस दौरान यासीन खान के द्वारा बड़े भंडारा का आयोजन किया गया। इसमें पुरे विधानसभा क्षेत्र के हजारों लोगों ने दही-चूड़ा खाया। चलकुशा प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष सलीम अंसारी, नसीम खान, जाहीद खान, राजकुमार पांडेय, मुखिया निजाम अंसारी, कारी बरकत अंसारी, मोइन अंसारी, राजकुमार महतो, डेगलाल साव, नाजा खान, एजाज अहमद समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 15 जनवरी, 2024
www.azadsipahi.in

लोगों के बीच बांटा गया चूड़ा, तिलकुट और कंबल

हंटरगंज / चतरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड के मायापुर कला गांव में रविवार को कंबल और चुड़ा तिलकुट वितरण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर लोक कल्याण ग्रुप आफ कंपनीज के डायरेक्टर डॉ अजय कुमार सिंह के द्वारा आयोजित किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में जय हिंद पासवान शामिल हुए। इस मौके पर उपस्थित पंचायत के 200 गरीब और असहाय वृद्ध लोगों के बीच कंबल का वितरण किया गया तथा शिविर में आये हुए लोगों को चुड़ा तिलकुट दिया गया। इस शिविर में समाजसेवी बुझावन रजक, कृष्णा पासवान, केदार चौधरी, डोमन यादव सहित काफी संख्या में ग्रामीण शामिल थे।

दो पंचायतों में चुने गये राजद के पंचायत अध्यक्ष

हंटरगंज/ चतरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड के पंचायत तिलहेत और जोलडीहा पंचायत में राजद की बैठक आयोजित की गयी। संगठन को धारदार और मजबूत बनाने के लिए पंचायत अध्यक्ष का चुनाव किया गया। जिसमें जोलडीहा पंचायत का पंचायत अध्यक्ष विजय यादव, पिता स्वर्गीय पाजी यादव, पंचायत सचेतक शंकर यादव, पिता स्वर्गीय सोमवार यादव, उपाध्यक्ष रविंदर यादव पिता स्वर्गीय अर्जुन यादव, सचिव राजेश गंझू पिता बिगन गंझू मीडिया प्रभारी प्रताप गंझू पिता राइफल गंझू को बनाया गया। इसी प्रकार तिलहेत पंचायत में पंचायत अध्यक्ष जगदीश यादव पिता मोहन यादव सचेतक पूर्व मुखिया राजू भारती पिता स्वर्गीय रामवृक्ष भारती उपाध्यक्ष उमेश यादव पिता तिलक यादव सचिव रामबली भारती पिता पूर्ण भारती मीडिया प्रभारी गनौरी यादव पिता शीतल यादव को बनाया गया। सभी लोगों को मंत्री प्रतिनिधि देव लाल यादव के द्वारा माला पहनाकर और मिठाई खिलाकर स्वागत किया। इस इस मौके पर मुमताज अंसारी, मनोज यादव, रविंद्र यादव, राजेश भारती, विशेषण कुमार, संतोष कुमार, छोटू कुमार, सोमवार गंझू, सीवनगंज, सुंदर गंझू, राजू सिंह भोक्ता, हेमराज सिंह भोक्ता, द्वारिक कुमार, प्रताप गंझू , सरजू कुमार भोक्ता, मुखदेव यादव, रामराज गंझू, शंकर यादव, जगदीश यादव, कल्लू यादव, गनौरी यादव, महावीर यादव, विजय यादव, ईश्वर यादव, राजदेव भारती, किशोरी यादव, रामबली भारती, पंकज यादव, अहीर पप्पू कुमार, आकाश यादव, कपिल यादव, आशीष यादव, अनिल यादव, अशोक कुमार यादव, सत्येंद्र कुमार यादव, भूपेंद्र यादव, रघुनंदन यादव, कारू भुइया, उमेश यादव, राजेश कुमार यादव, नंदू यादव, नितेश कुमार, भागेंद्र भारती, बंसी भारती, कमला देवी, कारी देवी इत्यादि सैकड़ों लोग उपस्थिति थे।

प्रकाशोत्सव को लेकर निकली प्रभातफेरी

हंटरगंज/ चतरा (आजाद सिपाही)। सिख धर्म के दसवें गुरु और खालसा पंथ के संस्थापक श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के 357वां प्रकाशोत्सव को समर्पित कार्यक्रमों का सिलसिला कल से प्रखंड के केदली कला स्थित गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा में आरंभ हो गया। इस निमित्त कल निशान साहिब की अगुवाई में पहली प्रभातफेरी निकाली गयी। जिसमें सिख समुदाय के दर्जनों महिला और पुरुषों के अलावा अन्य समुदाय के लोग भी शामिल हुए। प्रभातफेरी में एक सुसज्जित वाहन पर गुरु जी की तस्वीर लगी हुई झांकी को विशेष रूप से सजाकर शामिल किया गया था, जिसके पीछे संगत गुरुवाणी का गायन करते चल रही थी। गुरुपर्व के अवसर पर पूरे गुरुद्वारा परिसर का रंग रोगन कर बिजली की लड़ियों से बड़े हीं आकर्षक ढंग से सजाया गया है। चार दिनों की प्रभातफेरी के साथ आगामी 15 जनवरी को श्री अखंड पाठ साहिब प्रारंभ होंगे, जिनका भोग 17 तारीख को डाला जायेगा। 21 जनवरी को नगर कीर्तन तथा 22 जनवरी को विशेष दीवान प्रस्तावित है, जिसमें प्रांत तथा देश के विभिन्न स्थानों से संगत के पहुंचने की संभावना है।

राष्ट्रीय सेवा मंच ने भोजन और कंबल बांटे

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। समाजसेवी संस्था राष्ट्रीय सेवा मंच के तत्वावधान में सौंदा डी निवासी भुन्नु सिंह के पिता स्व. वकील प्रसाद सिंह के प्रथम पूण्यतिथि के अवसर पर रविवार को साप्ताहिक हाट भुरकुंडा में दातुन-पत्तल बेचने आये गरीबों को भोजन कराया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्व. वकील प्रसाद सिंह के तस्वीर पर माल्यापण और पुष्प अर्पित कर किया गया। मौके पर भुन्नु सिंह ने अपने पिता के पूण्यतिथि पर लगभग डेढ़ सौ गरीबों के बीच पुरी-सब्जी और जलेबी का वितरण किया। इस दौरान मंच द्वारा जरूरतमंदों के बीच कंबल का भी वितरण किया गया। मौके पर मंच के अध्यक्ष डब्लू सिंह ने बताया कि सबों के सहयोग से पिछले 8 वर्षों से मंच द्वारा गरीबों को भोजन कराया जाता रहा है, जो आगे भी जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि गरीबों की सेवा और समाजहित में कार्य करना ही मंच का द्देश्य है। कार्यक्रम को सफल बनाने में मंच के अध्यक्ष डब्लू सिंह, उमाशंकर जायसवाल, प्रो. रामानुज सिंह, जयप्रकाश पांडेय, अशोक झा, लखन राम, उत्कर्ष राज सिंह, जतीन कुमार, मो. शाहिद, इम्तियाज अली आदि का विशेष योगदान रहा।

सात माह से है तैयार जलमीनार, लेकिन पानी का अब तक नहीं हुआ दीदार

कुंदा/ चतरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के जोगियारा पंचायत के ग्राम बामी में हर घर नल जल योजना के तहत लगाया गया जलमीनार हाथी का दांत साबित हो रहा है। सात महीने पहले संवेदक द्वारा जैसे-तैसे खराब मोटर और अन्य सामान लगाकर जलमीनार खड़ा कर दिया गया है। आज तक बोरिंग में लगे मोटर को चालू नहीं किया गया है। जिसके कारण इस गांव के लोगों को आज तक पीने के लिए शुद्ध पानी नहीं मिल पा रहा है। ग्रामीणों ने उपायुक्त से इस योजना में संवेदक द्वारा की गयी लापरवाही की जांच कर कार्रवाई करने तथा गांव में अविलंब शुद्ध पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराने की मांग की है। मौके पर मिला देवी, कर्मी देवी, मंगरी देवी, कांति देवी, प्रमोद भोगता, अशोक भोगता, सुखलाल भोगता, सुरेश भोगता, बीरेंद्र कुमार उपस्थित थे।

सीओ ने ग्रामीणों के साथ वार्ता कर सारे मुद्दे किये साफ

कृषक पाठशाला के निर्माण में चल रहा भूमि विवाद हुआ खत्म

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। रामगढ़ प्रखंड के कैथा कृषि विभाग के समीप कृषक पाठशाला के निर्माण में आ रही अड़चन दूर हो गयी है। रविवार को रामगढ़ अंचल अधिकारी सत्येंद्र कुमार पासवान ने ग्रामीणों को स्पष्ट रूप से यह बताया गया कि वह जमीन पूरी तरीके से सरकारी है। वह कृषि विभाग को आवंटित की गयी है। भूमि का अधिग्रहण वर्षों पूर्व हो चुका है और उसका मुआवजा भी कैथा गांव के ग्रामीणों को दिया जा चुका है। पिछले 5 दिनों से रामगढ़ अंचल अधिकारी ने ग्रामीणों को यह समझने की कोशिश की थी। लेकिन गांव की कुछ महिलाएं समझने को तैयार नहीं थी। रविवार को गांव के कुछ प्रबुद्ध नागरिकों ने इसमें पहल की। जब अंचल अधिकारी के साथ वार्ता करने ग्रामीण पहुंचे तो सारी स्थिति स्पष्ट हो गयी।

राज्य सरकार का महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट होगा पूरा: कृषि विभाग की जमीन पर ग्रामीणों द्वारा किये जा रहे विवाद को खत्म करने के लिए पहुंचे कार्यपालक दंडाधिकारी पंकज कुमार ने बताया कि सरकार का महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट कृषक पाठशाला अब आसानी से पूरा होगा। उन्होंने बताया कि डीसी चंदन कुमार के निर्देश पर पुलिस फोर्स के साथ वे कृषि विभाग की उस जमीन पर पहुंचे हैं। पिछले कई दिनों से स्थानीय ग्रामीणों के द्वारा जमीन को लेकर विवाद किया जा रहा था। लेकिन उन्हें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि यह जमीन उनकी नहीं है, बल्कि सरकार की है।

पाठशाला में किसानों को प्रशिक्षण

कृषक पाठशाला में किसानों को बेहतर तरीके से खेती करने के गुर सिखायें जायेंगे। यहां तक की उन्हें कृषि से संबंधित व्यापार के बारे में भी बताया जायेगा। किस फसल से किसानों को कितना लाभ होना है और किस तरह के व्यापार से किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, इन सभी बिंदुओं पर उन्हें ट्रेनिंग मिलेगी। मत्स्य पालन करने वाले, मुर्गी पालन करने वाले, पशुपालकों को हर बीमारी और आर्थिक तरीके से उत्थान करने के विषय में भी बताया जायेगा। इसके अलावा उस क्षेत्र में उन्नत प्रकार के फसलों के बिचड़े भी तैयार किये जायेंगे।

झारखंड के राज्यपाल ने परवरिश स्कूल के निदेशक शैलेंद्र को किया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

Sponsored By :
t. of S Youth Affairs
53RD ANNUAL COMPETITION (2023-24)
PRIZE DISTRIBUTION CEREMONY

कुजू। रामकृष्ण मिशन आश्रम, मोरहाबादी रांची के तत्वावधान में राष्ट्रीय युवा दिवस पर मोरहाबादी में आयोजित कार्यक्रम में झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने परवरिश एडुकेयर स्कूल, कुजू के निदेशक शैलेन्द्र कुमार को शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। शैलेन्द्र कुमार को शिक्षण और शैक्षणिक प्रशासन में उनके दो दशक से ज्यादा अनुभव तथा शिक्षा में उनके बेहतर योगदान को लेकर सम्मान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में बीआइटी मेसरा के कुलपति इंद्रनील मन्ना, सीसीएल निदेशक हर्षनाथ मिश्रा, डीएवी कपिलदेव, रांची के प्राचार्य सह एआरओ एमके सिन्हा मौजूद रहे। मालूम हो कि कार्यक्रम में झारखंड के सभी जिलों से आये विजेताओ को उनके विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार भेंटकर सम्मानित किया गया। वही, परवरिश स्कूल के निदेशक शैलेन्द्र कुमार के सम्मान प्राप्ति पर विद्यालय परिवार ने स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। साथ ही, ढेर सारी शुभकामनाएं दी। वही, विद्यालय प्रबंध निदेशक विकास कुमार सिंह ने उन्हें बधाई देते हुए पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। साथ ही, उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर निदेशक शैलेन्द्र कुमार ने अपने आभार संबोधन में इस सम्मान को संपूर्ण विद्यालय का सम्मान बताया। कहा कि, वे आगे भी अपने कर्तव्य पथ पर इसी तरह बढ़ते रहेंगे। मौके पर प्राचार्य नेहा राज बनर्जी के अलावे कई शिक्षक मौजूद रहे।

सुभाष यादव ने सराढू में बांटे कंबल

टंडवा(आजाद सिपाही)। जिप सदस्य सह बीससूत्री अध्यक्ष सुभाष यायव ने रविवार को प्रखंड क्षेत्र के सराढु गांव पहुंचकर वृद्धों, विधवा महिलाओं और जरूरतमंद के बीच कंबल वितरण किया गया। इस दौरान सौ जरूरतमंद लोगों को कंबल दिया गया। जिप सदस्य सह बीससूत्री अध्यक्ष सुभाष यादव ने कहा की क्षेत्र में वंचित सभी लोगों को कंबल दी जायेगी। उन्होंने कहा कि इसके पूर्व कमता, राहम, डहू पंचायत के कई गावों में वृद्धों कंबल मुहैया करायी गयी है आगे भी बचे लोगों को दी जायेगी। इस मौके पर बीस सूत्री सदस्य आशिक अंसारी, राजद प्रखंड उप सचिव सुरेश यादव, बिनोद यादव उपस्थित थे।

प्रेस क्लब ने भुरकुंडा में बांटे तिलकुट, चूड़ा-गुड़ और लाई

पत्रकार अपने सामाजिक दायित्वों के तहत समय-समय पर गरीब-जरूरतमंदों की सेवा के लिए हर सार्थक कदम उठाते रहे हैं

आजाद सिपाही संवाददाता

भुरकुंडा / रामगढ़। भुरकुंडा कोयलांचल के पत्रकारों ने प्रेस क्लब ऑफ कोयलांचल के तत्वावधान में पूर्व की भांति अपने सामाजिक दायित्वों के तहत मकर संक्राति के पावन अवसर पर रविवार को दर्जनों गरीबों के बीच चूड़ा-गुड़, तिलकुट और लाई का वितरण कर उनके संग पर्व की खुशियां बांटी। कार्यक्रम के तहत साप्ताहिक हाट भुरकुंडा में रविवार को खलारी, राय, बचरा, हेन्देगिर आदि दूर-दराज ग्रामीण क्षेत्रों से दातुन-पत्तल बेचने आने वाले लोगों सहित भिक्षाटन कर जीवनयापन करने वाले करीब 50-60 गरीब-असहायों के बीच बीच घूम-घूमकर पत्रकारों द्वारा चूड़ा-गुड़, तिलकुट और लाई का वितरण कर नववर्ष 2024 और मकर संक्राति पर्व की बधाईयां दी गयी। मालूम हो कि भुरकुंडा कोयलांचल के पत्रकार अपने सामाजिक दायित्वों के तहत समय-समय पर गरीब-जरूरतमंदों की सेवा के लिए हर सार्थक कदम उठाते रहे हैं। पूर्व में भी भुरकुंडा के पत्रकारों द्वारा सैंकड़ों गरीबों के बीच मकर संक्राति के अवसर पर चूड़ा-तिलकुट और गुड़ का वितरण किया गया था। कहा गया की गरीब-जरूरतमंदों की मदद व सेवा के लिए प्रेस क्लब आगे भी हर संभव कदम उठाती रहेगी। इस पुनीत कार्य को सफल बनाने में पत्रकार राजकुमार सिंह, महावीर ठाकुर, मनोज सिंह, अवधेश शर्मा, राकेश पांडेय, हृदय नारायण सिंह, उत्तम सिन्हा, दुर्गेश नंदन तिवारी, कुमार आलोक, दीपक कुमार, कमलेश मेहता, बिजेंद्र पासवान, संजय पासवान, मो इस्लाम, राकेश सिंह, दिलीप प्रजापति, मुकेश प्रसाद आदि का योगदान रहा।

वर्ष 2019-2024 के पांच वर्षों के सर्वक्षेष्ठ प्रदर्शन के लिए हजारीबाग सांसद सम्मानित

जयंत सिन्हा को सांसद महारत्न पुरस्कार मिलना हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के लिए बहुत बड़ा सम्मान : प्रवीण

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। 22 जनवरी को अयोध्या में आयोजित ऐतिहासिक उत्सव श्री रामलला के प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा होने को लेकर एक प्रेस वार्ता का आयोजन रामगढ़ कैंट स्थित ला मारिटल होटल में किया गया। जिलाध्यक्ष ने जयंत सिन्हा को सांसद महारत्न पुरस्कार दिये जाने की घोषणा को हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के लिए बहुत बड़ा सम्मान माना है। उन्होंने बताया कि यह पुरस्कार के लिए जयंत सिन्हा का चुनाव निर्णायक समिति के वरिष्ठ सदस्यगणों में केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, पूर्व वरिष्ठ चुनाव प्रमुख टी एस कृष्णमूर्ति व अन्य प्रमुख सदस्यों द्वारा किया गया है। वहीं जयंत सिन्हा की अध्यक्षता वाली वित्त संबंधी संसदीय स्थायी समिति को भी 5 वर्षों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ समिति के रूप में चुना गया है। सांसद जयंत सिन्हा के सर्वक्षेष्ठ प्रदर्शन में भाजपा कार्यकर्ताओं ने बधाई दी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित निर्णायक समिति के प्रति आभार व्यक्त किया है।

मौके पर वरिष्ठ भाजपा नेता रंजीत कुमार सिन्हा, सांसद प्रतिनिधि और प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रंणजय कुमार, जिला के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजू चतुर्वेदी, जिला महामंत्री रंजन फौजी, सांसद प्रतिनिधि रविन्द्र प्रसाद शर्मा, मीडिया प्रभारी राजीव पामदत्त, वरिष्ठ भाजपा नेता दिलीप सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

प्राण प्रतिष्ठा उत्सव को मनाने की तैयारी पूरी

प्रेस कांफ्रेंस में जिलाध्यक्ष ने बताया कि 22 जनवरी को अयोध्या में आयोजित प्राण प्रतिष्ठा उत्सव को भव्य तरीके से मनाने के तैयारी कर ली गयी है। 14 जनवरी से 22 जनवरी तक सभी कार्यकर्ता द्वारा अपने नजदीक के मंदिर में स्वछता अभियान चलाया जा रहा है। वहीं एलएडी के माध्यम से रजरप्पा मंदिर परिसर में सहित जिला के कई मुख्य मंदिर में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान का लाइव टेलीकास्ट देखने की व्यवस्था की गयी है।

जयंत सिन्हा के कांग्रेस में जाने की खबर बेबुनियाद है : प्रकाश

सांसद प्रतिनिधि और प्रदेश कार्यसमिति सदस्य प्रकाश मिश्रा ने बताया कि एक डिजिटल पोर्टल पर सांसद जयंत सिन्हा के कांग्रेस जाने की खबर बेबुनियाद है और किसी विशेष वर्ग को खुश करने वाला बताया। उन्होंने सोशल मीडिया पर वायरल इस खबर को मनगढ़ंत कहानी बताया। सांसद जयंत सिन्हा नरेंद्र मोदी के दिये सभी कार्य को पुरी तन्मयता से अपना सर्वश्रेष्ठ दिया है। सांसद जयंत सिन्हा भारतीय जनता पार्टी में कल भी थे आज भी हैं और कल भी रहेंगे।

पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन

कुजू (आजाद सिपाही)। टाटा स्टील फाउंडेशन बेस्ट बोकारो डिवीजन (न्यूट्रिशन प्रोजेक्ट) के तत्वावधान छोटकीडुंडी पंचायत सचिवालय में पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से मांडू उप प्रमुख पिंटू महतो, पंचायत मुखिया रामसेवक महतो मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन फाउंडेशन के बीओ एमडी अहमद अंसारी और एनएफ शशि ठाकुर ने की। कार्यक्रम का उद्देश्य बताते हुए कहा कि भोजन में पोषक तत्व को बढ़ावा देना है। वही, गर्भवती महिलाओं की गोद भराई और नन्हे बच्चो का मुंह जूठी कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर उप मुखिया गोपाल महतो, वार्ड सदस्य सुमित्रा कुमारी, राजु मरांडी, पिंकी प्रसाद, प्रिया कुमारी, सेविका रेखा देवी, गीता देवी, अनिता देवी, कुमारी कुंती, बासमती देवी समेत कई लोग मौजूद रहे।

युवा लोजपा प्रदेश अध्यक्ष ने आयोग से मुलाकात कर रखी अपनी बात

COMMISSION FOR SCHEDULED CASTES

बरकाकाना (आजाद सिपाही)। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी झारखंड प्रदेश के युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष रंजीत राम ने नई दिल्ली में भारत सरकार के राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के सदस्य सुबोध रामनाथ पारधी से मुलाकात किया। मुलाकात के दौरान रंजीत राम ने पुष्पगुच्छ भेंटकर नव वर्ष की शुभकामनाएं संदेश देते हुए झारखंड प्रदेश से संबंधित विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया। तदोपरांत आयोग के सदस्य सुबोध रामनाथ पारधी ने बहुत जल्द झारखंड दौरा कर समस्याओं का निवारण करने की बात कही। मौके पर अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार और अपराध नियंत्रण संगठन के अध्यक्ष सह ब्रांड एंबेसडर मोहित नवानी, राष्ट्रीय प्रवक्ता शिल्पी कुमारी, युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित कुमार, रेणु देवी, बृज किशोर पासवान सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

जोड़ा तालाब के सुंदरीकरण को लेकर बैठक

मांडू (आजाद सिपाही)। अति प्राचीन शिव मंदिर (मनोकामना बाबा) मांडू के परिसर में ग्राम विकास समिति की एक बैठक हुई बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष कृष्ण कुमार साव और संचालन कुलदीप प्रसाद साहू ने किया। बैठक में मांडू के ऐतिहासिक धरोहर जोड़ा तालाब की कायाकल्प गहरीकरण व सुंदरीकरण को लेकर गहन विचार विमर्श किया गया। साथ ही बैठक में सर्वप्रथम जोड़ा तालाब की सीमांकन (मापी) के लिए अंचल अधिकारी के पास आवेदन देने का निर्णय लिया गया। साथ ही दोनों तालाबों का गहरीकरण करने के पश्चात सुंदरीकरण में तालाब के चारों तरफ सीढ़ी, पेवर ब्लॉक पथ, पार्क, वॉटर ट्रीटमेंट, स्नानागार, चेंजिंग रूम, सिटिंग, लाइटिंग, बरसात के दिनों में तालाब में पानी प्रवेश और निकासी, दुर्गा मंदिर के समीप तोरण द्वार आदि निर्माण कराने की बात कही गयी। इसके लिए समिति ने सात सदस्यीय टीम का गठन किया। जिसमें कृष्ण कुमार साव, कुलदीप प्रसाद साहू, अमित कुमार, संतोष राम, गौतम साहू, नवरत्न कुमार मंडल उर्फ ननकू, बैजनाथ राम शामिल है। बैठक में मुख्य रूप से अमित कुमार, महेश प्रसाद, गणेश कुमार, रमेश साव, लोचन साव, अजीत कुमार, किरण देवी, अशोक कुमार साहू, संतोष राम, बंसी साव, गौतम साव, महादेव साव, वीरेंद्र कुमार पांडेय, दशरथ साहू, पवन कुमार, सरयू साव, किशोर कुमार, बैजनाथ साव, रोहित साव, नवरत्न कुमार, राजू करमाली समेत कई ग्रामीण शामिल थे।

गुरु गोविंद सिंह के प्रकाश उत्सव के चौथे दिन निकाली गयी प्रभातफेरी

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। श्री गुरु गोविंद सिंह साहब जी के प्रकाश पर्व पर शहर में गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के तत्वावधान में प्रभात फेरी निकाली जा रही है। प्रभातफेरी के चौथे दिन रविवार को मेन रोड स्थित गुरुद्वारा साहिब से आरंभ होकर, वैष्णो देवी मंदिर, मेन रोड होते हुए पंजाबी मोहल्ला स्थित सरदार हरमिंदर सिंह सलूजा सुपुत्र स्व जगदीश सिंह सलूजा के आवास पहुंची। यहां गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से गुरबख्श कौर सैनी के द्वारा सरदार हरविंदर सिंह सलूजा की माताजी बलजीत कौर को सरोपा देकर सम्मानित किया। प्रभातफेरी के दौरान गुरुवाणी पेश किया गया। जिसमें, दीनानाथ सुनो अरदास राजन के राजा महाराजा के महाराजा जो लड़े दीन के हेत सूरा सोई गोविंद के गुण गाओ साधु गोविंदा के गावो आदि गुरुवाणी से पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। निशान साहेब पर पुष्प की माला डाली। निशान साहेब की सेवा कुजू गुरुद्वारा के पूर्व प्रधान सरदार रामदयाल सिंह चोपड़ा कर रहे थे। प्रभातफेरी में गुरूद्वारा के मीत प्रधान सरदार अमरजीत सिंह सैनी, रघुबीर सिंह छाबड़ा, जोगेंद्र सिंह जग्गी, राजा कालरा, तेजिंदर सिंह सोनी, पपिंदर सिंह खंबे, त्रिलोचन सिंह जस्सल, हरजीत सिंह, इकबाल सिंह, कमल जस्सल, जसमीत कौर सोनी, सूमी जौली, गुरबख्श सैनी, मनमोहन सिंह लांबा, गुरुद्वारा के हेड ग्रंथी गुरजीत सिंह, बबल छाबड़ा, सतपाल सिंह सलूजा बिट्टू लांबा, सुरजीत सिंह छाबड़ा, कवलजीत सिंह लांबा, नवलजीत कौर मल्होत्रा, लवली लांबा, बलविंदर कौर आदि शामिल थे।

सौदागर मुहल्ला में अक्षत और निमंत्रण पत्र वितरित

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। अयोध्या से आये पूजित अक्षत और निमंत्रण पत्र का वितरण रविवार को सौदागर मोहल्ला, कुंवर टोला, मिडिल स्कूल कोयरी टोला, न्यू कॉलोनी में किया गया। इस दौरान सैकड़ों महिला युवाओं की टोली घर-घर जाकर अक्षत वितरण किया गया। साथ ही श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर निमंत्रण दिया गया। कार्यक्रम में श्रीराम जन्मभूमि अक्षत वितरण कार्यक्रम के सदस्य राजेश ठाकुर ने किया। कार्यक्रम में रामदेव पांडे, संजय अग्रवाल, सुधीर अग्रवाल, अमित ठाकुर, कृष्णा पांडे, अजीत पासवान, राजेंद्र अग्रवाल, गीता देवी, कंचन देवी, विमला देवी, नीलम देवी, गुल्लू देवी, शीला देवी, कुंती देवी, चमो देवी, आशा देवी आदि उपस्थित थे। राजेश ठाकुर ने बताया कि लगभग 500 वर्षों तक संघर्ष करने के बाद यह अवसर आया है कि भारत में भव्य राम मंदिर बनाया जा रहा है।

किफायती स्वास्थ्य सेवा लोगों का अधिकार

क्रिटिकल हैल्थकेयर न केवल बड़े पैमाने पर जनता के लिए गैर-किफायती होती जा रही है, बल्कि विशेष रूप से कुछ कॉर्पोरेट अस्पतालों द्वारा की जा रही गलत प्रैक्टिस भी बड़े पैमाने पर जनता के जीवन को नर्क बना रही है। मैडीकल इंश्योरेंस, सीजीएचएस, आयुष्मान के बावजूद हमारे देश में जेब से खर्च (आऊट ऑफ पॉकेट) लगभग 60 प्रतिशत है। बीमा दावों का भुगतान करवाना भी दांत निकालने जैसा है। आमतौर पर बीमा कंपनियां क्लेम न चुकाने के लिए कारण ढूंढती हैं। एक बार भर्ती होने के बाद मरीज अस्पतालों और डॉक्टरों की दया पर निर्भर होते हैं। अधिकांश गंभीर रोगियों का इलाज कॉर्पोरेट/निजी अस्पतालों में किया जाता है, क्योंकि सरकारी अस्पतालों में ऐसे रोगियों के लिए उपचार सुविधाओं की कमी होती है। दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र के एक कॉर्पोरेट अस्पताल में कार्यरत प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ अमरिंद्र बजाज को हाल ही में मूव ऑन करने के लिए बाध्य होना पड़ा, क्योंकि वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकीं। अपने लिखे एक लेख में उन्होंने अपनी शिकायतें जाहिर की हैं।

आमतौर पर बीमा कंपनियां क्लेम न चुकाने के लिए कारण ढूंढती हैं। एक बार भर्ती होने के बाद मरीज अस्पतालों और डॉक्टरों की दया पर निर्भर होते हैं। अधिकांश गंभीर रोगियों का इलाज कॉर्पोरेट/निजी अस्पतालों में किया जाता है, क्योंकि सरकारी अस्पतालों में ऐसे रोगियों के लिए उपचार सुविधाओं की कमी होती है।

उनके लेख के कुछ अंश इस प्रकार हैं : मैं अच्छी तरह से जानती हूं कि कॉर्पोरेट की कोई भावना नहीं है। वे केवल एक भाषा समझते हैं, वास्तव में केवल एक शब्द राजस्व और मेरा राजस्व ग्राफ उनकी पसंद के अनुसार नहीं था उस दिन तक। विशेषज्ञता, अनुभव, निष्ठा कोई मायने नहीं रखती। मैं उस पीढ़ी से हूं जो इस तरह की चीजों से बहुत कुछ स्थापित करती है, लेकिन युवा पीढ़ी अपना खेल खेलती है। एक ओर रह कर मैंने उनके द्वारा भर्ती की गयी उज्जवल नयी राजस्व पैदा करने वाली मशीनों को देखा, जिन के सामने जब अधिक आकर्षक प्रस्ताव आया, तो उन्होंने बिना किसी मलाल के तार के उस ओर छलांग लगा दी। कॉर्पोरेट ने जो दिया वही पाया और हालांकि मैं खेल को समझती थी, फिर भी मैं इसे खेलने के लिए खुद को कभी तैयार नहीं कर सकी। राज्यसभा सदस्य के रूप में अपने 20 महीने के कार्यकाल में मैंने किफायती स्वास्थ्य देखभाल का मामला 3 बार उठाया है। उम्मीद है, इससे कुछ फर्क पड़ेगा। सबसे पहले मैंने इस मामले को दिसंबर 2022 में उठाया था, जिसमें अस्पतालों में सस्ती स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने की आवश्यकता पर विशेष उल्लेख किया गया था, मैंने उन लोगों पर ध्यान आकर्षित किया था, जो उपलब्ध स्वास्थ्य देखभाल की गैर-मौजूदगी के कारण मर रहे हैं।

अभिमत
आजाद सिपाही

भौतिक नेत्र न होते हुए भी, ब्रेल लिपि के बिना उपयोग के अब तक वे 1275 से अधिक श्रीरामचरितमानस पर कथा प्रवचन कर चुके हैं और श्रीमद्भागवत पर 1115 से अधिक कथा वाचन अभी तक कर चुके हैं। धारा प्रवाह संस्कृत संभाषण में विश्व में उनका कोई जोड़ नहीं है। वे एक घंटे में 100 श्लोक बनाने की क्षमता रखते हैं। दर्शन काव्य एवं लेखन अप्रतिहर्त गति उन्हें प्रदान है। तत्काल समस्या पूर्ति पर संस्कृत, हिंदी आदि भाषाओं में वे श्लोक एवं अन्य विधा रच लेते हैं।

विश्व में जिनका मुकाबला नहीं, उनका नाम है जगतगुरु रामभद्राचार्य

प्रभात झा

विश्व में लगभग 1 अरब दिव्यांग हैं। इसी के अंतर्गत भारत में भी लगभग 3 करोड़ से अधिक दिव्यांगों की संख्या है। इन्हें पहले विकलांग कहा जाता था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने 2 दिसंबर 2015 को अपने मन की बात कार्यक्रम में शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को 'दिव्यांग' नाम से संबोधित करने का निर्णय बताया। विश्व पटल पर जब दिव्यांगों के बारे में विचार करते हैं, तो देखने में आता है कि ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, जर्मनी, अमेरिका, ब्रिटेन सहित अनेक देशों में दिव्यांगों ने कहीं गणित तो कहीं भौतिकी, कहीं मीडिया, कहीं संगीत के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धि हासिल की है। यहां तक कि एक दिव्यांग को अपने कार्यक्षेत्र में नोबेल पुरस्कार भी मिला।

लेकिन जब भारत में दिव्यांगों की चर्चा शुरू होती है, तो एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम उभर कर आता है, जो न केवल 140 करोड़ भारतीयों के लिए बल्कि विश्व के करोड़ों लोगों के लिए भी एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। उनके जीवन से न केवल दिव्यांग, बल्कि करोड़ों सर्वांग व्यक्तियों को प्रेरणा मिलती है। भारत के उस व्यक्तित्व का नाम है जगतगुरु स्वामी रामभद्राचार्य। उनको कोई दृष्टि बाधित या दिव्यांग कहता है, तो कहते हैं कि मुझे यह अच्छा नहीं लगता। मैंने अपनी इन्हीं आंखों से साक्षात भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का बाल्यकाल रूप देखा है।

14 जनवरी 1950 को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के शांडिल्य खैर गांव में जन्मे, जिनका पूर्व में नाम डॉ गिरिधर लाल मिश्र था।

14 जनवरी 1950 को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के शांडिल्य खैर गांव में जन्मे, जिनका पूर्व में नाम डॉ गिरिधर लाल मिश्र था, वे जन्म के 2 माह बाद ही अपनी दोनों आंखों की ज्योति खो चुके थे, लेकिन उन्होंने साहस नहीं खोया। 14 जनवरी 2024 को अयोध्या में 9 दिनों तक उनका अमृत महोत्सव मनाने की तैयारी चल रही है। पूज्य रामभद्राचार्यजी के जीवन के अतीत का जब अध्ययन करते हैं, तो लगता है कि ईश्वर ने उन्हें साक्षात अपनी शक्ति प्रदान की है।

उन्होंने जीवन में कभी भी ब्रेल लिपि का उपयोग नहीं किया, जब वे 5 वर्ष के हुए तो श्रीमद्भगवत गीता और सात वर्ष की आयु में श्रीरामचरितमानस पूरी तरह से कंठस्थ कर लिया था। आरंभ से आचार्य (परास्नातक) तक सभी कक्षाओं में प्रथम श्रेणी एवं प्रथम स्थान प्राप्त किया। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणासी से शास्त्री तथा आचार्य में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

तदोपरांत पीएचडी शोध के बाद धर्म सम्राट स्वामी करपात्रीजी के निर्देश पर रामानंद संप्रदाय में विरक्त दीक्षित होकर जगतगुरु रामभद्राचार्य के पद पर सर्वसम्मति से मूर्धाभिषेक हुए। ऐसे विलक्षण साहित्यकार जिनकी पुस्तकों का लोकार्पण देश के दो सबसे लोकप्रिय प्रधानमंत्री क्रमशः अटल बिहारी वाजपेयी तथा नरेंद्र मोदी ने किया।

240 ग्रंथों का प्रणयन, जिसमें 4 महाकाव्य सहित साहित्य के सभी विधाओं में रचनाएं रची गयीं। साहित्य के क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित सम्मान साहित्य अकादमी से 2005 में सम्मानित किये गये। 19 नवंबर 1992 को चित्रकूट मध्य प्रदेश में श्रीतुलसीपीठ की स्थापना रामभद्राचार्य जी द्वारा की गयी। श्री तुलसी प्रज्ञाचक्षु दिव्यांग उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की गयी। उसके बाद विश्व स्तर पर दिव्यांगों के लिए जगतगुरु रामभद्राचार्य विश्व का पहला दिव्यांग विश्वविद्यालय है, जहां से अब तक 5 हजार से अधिक विद्यार्थी अध्ययन कर देश के खास कर उत्तरप्रदेश के अनेक उच्च स्थानों पर पदस्थ हैं। विकलांग विश्वविद्यालय की स्थापना 2001 में की गयी।

इसके पश्चात श्री गीता ज्ञान मंदिर राजकोट गुजरात की स्थापना भी उनके द्वारा की गयी। वशिष्ठ अयनम हरिद्वार उत्तराखंड की स्थापना भी उनके द्वारा की गयी। साहित्य तथा सामाजिक योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा 2015 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। जगतगुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के वे जीवनपर्यंत कुलाधिपति बने रहेंगे। भारत सरकार के स्वच्छता अभियान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उन्हें नौ रत्नों में शामिल किया गया।

भौतिक नेत्र न होते हुए भी, ब्रेल लिपि के बिना उपयोग के अब तक वे 1275 से अधिक श्रीरामचरितमानस पर कथा प्रवचन कर चुके हैं और श्रीमद्भागवत पर 1115 से अधिक कथा वाचन अभी तक कर चुके हैं। धारा प्रवाह संस्कृत संभाषण में विश्व में उनका कोई जोड़ नहीं है। वे एक घंटे में 100 श्लोक बनाने की क्षमता रखते हैं। दर्शन काव्य एवं लेखन अप्रतिहर्त गति उन्हें प्रदान है। तत्काल समस्या पूर्ति पर संस्कृत, हिंदी आदि भाषाओं में वे श्लोक एवं अन्य विधा रच लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ न्यूयॉर्क में आयोजित विश्व शांति शिखर सम्मेलन मंम सोलह मिनट का ऐतिहासिक भाषण संपन्न हुआ। वे 22 भाषाओं के ज्ञाता हैं।

इलाहाबाद हाइकोर्ट में जब श्रीराम जन्मभूमि मामले पर बहस चल रही थी, तो मुस्लिम पक्ष ने यह सवाल खड़ा किया कि अगर बाबर ने राम मंदिर तोड़ा तो तुलसीदास ने जिक्र क्यों नहीं किया। हिंदू पक्ष के लिए संकट खड़ा हो गया, लेकिन तब संकट मोचन बने श्रीरामभद्राचार्य जी। उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में 15 जुलाई 2003 को गवाही दी और तुलसीदास के दोहा शतक में लिखे उस दोहे को जज साहब को सुनाया, जिसमें बाबर के सेनापति मीर बाकी द्वारा राम मंदिर को तोड़ने की बात कही गयी है। दोहा इस प्रकार है :

रामजन्म मंदिर महिं मंदिरहि
तोरि मसीत बनाय।
जबहि बहु हिंदुन हते,
तुलसी कीन्ही हाय।।
दल्यो मीर बाकी अवध,
मंदिर राम समाज।
तुलसी रोवत हृदय अति,
त्राहि त्राहि रघुराज।।

जगतगुरु स्वामी रामभद्राचार्यजी बताते हैं कि अयोध्या में राम मंदिर होने के 437 प्रमाण न्यायालय को दिये गये हैं। वे प्राचीन ग्रंथों का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि वाल्मीकि रामायण के बाल खंड के 8वें श्लोक से श्रीराम जन्म के बारे में जानकारी शुरू होती है। रामभद्राचार्य जी बताते हैं कि वेद में भी श्रीरामजन्म का स्पष्ट प्रमाण है। ऋग्वेद के दशम मंडल में भी इसका प्रमाण है। रामचरितमानस में बहुत ही स्पष्ट लिखा है।

स्वामी रामभद्राचार्यजी ने प्रमाणों से इलाहाबाद हाइकोर्ट के न्यायाधीशों को चकित कर दिया कि श्री रामलला अयोध्या उसी विवादित स्थल पर विराजते हैं। उनके दिये गये तर्कों के तारतम्य में ही उच्चतम न्यायालय में भी बहस हुई, तो अधिवक्ताओं ने उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों को न्यायाधीशों के सामने प्रस्तुत किया। यह कहने में कोई संकोच नहीं कि श्रीराम जन्मभूमि पर ही अयोध्या में श्री रामलला विराजते हैं, के पक्ष में निर्णय लेने में रामभद्राचार्यजी की बहुत बड़ी भूमिका रही है।

(लेखक : पूर्व सांसद एवं भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।)

पूरी तरह बिखर गया 'राहुल ब्रिगेड' का शिराजा

आजाद सिपाही विशेष

चुनावी हार और दरकते जनाधार के बीच अब तक सबसे मुश्किल दौर से गुजर रही कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी की वह 'युवा ब्रिगेड' एक के बाद एक बिखरती चली जा रही है, जो कभी उनकी खास और पार्टी का भविष्य मानी जाती थी। इस युवा ब्रिगेड से नयी विदाई मिलिंद देवड़ा की है, जो मुंबई में पार्टी के स्तंभ माने जाते थे। मिलिंद देवड़ा का इस्तीफा राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' से ठीक पहले हुआ है और 2024 के चुनाव से पहले कांग्रेस के लिए इसे बड़ा झटका माना जा रहा है। मिलिंद देवड़ा कांग्रेस के उस कद्दावर परिवार से हैं, जिसके मुखिया मुरली देवड़ा को कभी मुंबई में कांग्रेस का पर्याय माना जाता था। वह लगातार 22 साल तक मुंबई कांग्रेस के अध्यक्ष रहे, जो आज तक एक रिकॉर्ड है। उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी मिलिंद देवड़ा ने जब कांग्रेस से अपने परिवार के 55 साल पुराने रिश्ते को खत्म करने का एलान किया, तब कांग्रेस की अंदरूनी कमजोरी और राहुल ब्रिगेड के बिखरने का एहसास हुआ। कुछ दिन पहले ही कांग्रेस ने मिलिंद देवड़ा को पार्टी का संयुक्त कोषाध्यक्ष नियुक्त किया था। राहुल गांधी के करीबी माने जाने वाले प्रमुख युवा नेताओं के पार्टी छोड़ने का सिलसिला मार्च, 2020 में उस समय हुआ, जब ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस को अलविदा कह भाजपा का दामन थाम लिया। नतीजा यह हुआ कि मध्यप्रदेश में 15 साल के बाद बनी कांग्रेस की सरकार 15 महीनों में ही सत्ता से बाहर हो गयी। सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने के कुछ महीने बाद ही एक समय ऐसा आया कि सचिन पायलट कांग्रेस से जुदा होने के मुहाने पर खड़े हो गये, हालांकि आलाकमान की दखल और बातचीत के बाद वह पार्टी में रह गये। केंद्र में यूपीए सरकार के समय सिंधिया, पायलट, जितिन प्रसाद, आरपीएन सिंह और मिलिंद देवड़ा वे चंद युवा नेता थे, जिन्हें राहुल गांधी की 'युवा ब्रिगेड' की संज्ञा दी जाती थी। आज इनमें से केवल पायलट ही कांग्रेस में रह गये हैं। पिछले साल ही महिला कांग्रेस की अध्यक्ष सुष्मिता देव ने कांग्रेस को छोड़ कर तृणमूल कांग्रेस का दामन थाम लिया था। मिलिंद देवड़ा के इस्तीफे की पृष्ठभूमि में राहुल ब्रिगेड के बिखरने के कारणों और इसके असर का विश्लेषण कर रहे हैं आजाद सिपाही के **विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

■ अब केवल सचिन पायलट ही बचे कांग्रेस के युवराज की टीम में, 2024 से पहले देश की सबसे पुरानी पार्टी को लगा जोरदार झटका

एक दौर था, जब राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस को युवाओं की पार्टी कहा जाता था। वजह थे राहुल गांधी के साथ जुड़े वे पांच नेता, जो उनकी टीम के अभिन्न अंग माने जाते थे और हर छोटे-बड़े फैसले में गांधी परिवार के साथ रहते थे। इनमें अधिकतर नेता अपने परिवार के कांग्रेस से जुड़ाव के कारण पार्टी में शामिल रहे और राहुल के करीबी बने। हालांकि 2014 में भाजपा के केंद्र में सरकार बनाने और देश की राजनीति में परिवारवाद का मुद्दा उठने के बाद एक-एक कर इन युवा नेताओं ने राहुल से दूरी बना ली है। इनमें सबसे ताजा नाम महाराष्ट्र कांग्रेस के अहम चेहरे और युवा नेता मिलिंद देवड़ा का है, जिन्होंने रविवार को पार्टी से परिवार का 55 साल पुराना नाता खत्म करने का एलान किया।

कुछ वर्ष पहले कांग्रेस के इन युवा रणबांकुरों की एक तस्वीर सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई थी। यह फोटो 2012 में राष्ट्रपति भवन में हुए एक कार्यक्रम की थी। इस फोटो में कांग्रेस के युवा चेहरों का जुटान था। तस्वीर में सचिन पायलट, ज्योतिरादित्य सिंधिया, आरपीएन सिंह, मिलिंद देवड़ा और जितिन प्रसाद आपस में बात करते देखे जा सकते हैं। इन चेहरों को एक समय पर राहुल के साथ पार्टी का भविष्य करार दिया जा रहा था। हालांकि ये चेहरे एक-एक कर के पार्टी से अलग हो चुके हैं।

सबसे पहले बाहर हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया

साल 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस से इस्तीफा देने का एलान किया था। बताया जाता है कि वह पार्टी में युवा चेहरों की अनदेखी से खासे नाराज थे। इससे पहले वह पीएम मनमोहन सिंह के नेतृत्व में केंद्र में मंत्री भी रहे। हालांकि 2018 में मध्यप्रदेश में उनकी जगह कमलनाथ को मुख्यमंत्री बनाने का पार्टी का फैसला भी उन्हें रास नहीं आया था। इसके बाद उन्होंने 28 विधायकों के साथ कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। इससे कमलनाथ की अगुवाई वाली कांग्रेस सरकार रातों-रात गिर गयी थी। सिंधिया बाद में भाजपा में शामिल हो गये और शिवराज सिंह चौहान फिर मध्यप्रदेश के सीएम बने।

जितिन प्रसाद ने छोड़ा कांग्रेस का साथ

उत्तरप्रदेश में बड़ा ब्राह्मण चेहरा कहे जाने वाले जितिन प्रसाद ने जून 2021 में कांग्रेस छोड़ कर भाजपा ज्वाइन कर ली थी। उनका राजनीतिक करियर यूथ कांग्रेस से शुरू हुआ था और वह यूपीए सरकार में मंत्री भी रहे। सिंधिया की तरह ही जितिन प्रसाद भी पारिवारिक तौर पर कांग्रेस से जुड़े थे। उनके पिता जितेंद्र प्रसाद और बाबा ज्योति प्रसाद कांग्रेस का अहम चेहरा रहे थे। हालांकि इस्तीफे से ठीक पहले जितिन प्रसाद को पार्टी हाइकमान से नाराज बताया जा रहा था। वह कांग्रेस में तवज्जो न मिलने और यूपी कांग्रेस के कुछ नेताओं से अपनी नाराजगी जाहिर भी कर चुके थे। जितिन प्रसाद की शिकायत को पार्टी हाइकमान ने नजरअंदाज किया, जिसके बाद उन्होंने भाजपा का दामन थाम लिया।

फिर गिरा आरपीएन सिंह का विकेट

कांग्रेस से युवा चेहरों के जाने का सिलसिला इसके बाद भी जारी रहा। अगला नाम था आरपीएन सिंह का, जिन्होंने 2022 में यूपी विधानसभा चुनाव से ठीक पहले पार्टी को झटका दे दिया और सिंधिया की मौजूदगी में भाजपा का दामन थाम लिया था। मजेदार बात यह थी कि आरपीएन सिंह ने यह इस्तीफा तब दिया था, जब कांग्रेस ने उनकी क्षमताओं पर भरोसा करते हुए यूपी में उन्हें अपना स्टार प्रचारक नियुक्त किया था। आरपीएन सिंह ने मनमोहन सरकार में पेट्रोलियम मंत्रालय से लेकर गृह मंत्रालय में राज्यमंत्री की भूमिका संभाली थी।

और अब मिलिंद देवड़ा ने छोड़ा कांग्रेस का साथ

रविवार को, जब राहुल गांधी अपनी 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' पर रवाना हो रहे थे, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, मुंबई में पार्टी के प्रमुख चेहरे और पूर्व केंद्रीय मंत्री मिलिंद देवड़ा ने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा कर मिलिंद देवड़ा ने लिखा कि आज वह अपनी राजनीतिक यात्रा के अहम अध्याय का अंत कर रहे हैं। मैंने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। साथ ही कांग्रेस पार्टी से अपने परिवार के 55 साल पुराने रिश्ते का भी अंत कर रहा हूं।

मिलिंद देवड़ा कांग्रेस के दिवंगत वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री मुरली देवड़ा के बेटे हैं और साल 2004 और 2009 में दक्षिण मुंबई सीट से सांसद रह चुके हैं। साल 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में मिलिंद देवड़ा को शिवसेना उम्मीदवार के सामने हार का सामना करना पड़ा था। मिलिंद देवड़ा की गिनती कांग्रेस के युवा चेहरों में होती थी। वह कांग्रेस सरकार में साल 2012 में केंद्रीय नौका परिवहन राज्यमंत्री भी बनाये गये थे। इसके अलावा वह सांसद रहने के दौरान रक्षा मंत्रालय की समिति, केंद्रीय शहरी विकास समिति के सदस्य भी रह चुके हैं।

मिलिंद देवड़ा ने क्यों तोड़ा कांग्रेस से रिश्ता

यहां बड़ा सवाल यह है कि जिस देवड़ा परिवार से कांग्रेस का इतना गहरा रिश्ता रहा, उससे अचानक यह रिश्ता टूट कैसे गया। दरअसल मिलिंद देवड़ा पिछले कुछ समय से पार्टी के स्थानीय नेताओं से नाराज चल रहे थे। वह अपनी संसदीय सीट दक्षिण मुंबई में पार्टी की गतिविधियों पर एकाधिकार चाहते थे। 2024 के चुनाव में भी वह इस सीट से चुनाव लड़ना चाहते थे, लेकिन महाविकास अघाड़ी के समझौते के अनुसार यह सीट अब शिवसेना (उद्धव गुट) के पास जानेवाली है, क्योंकि 2014 और 2019 में उसके प्रत्याशी अरविंद सावंत ने मिलिंद देवड़ा को हराया था। इसलिए मिलिंद देवड़ा ने संसद में जाने के लिए कांग्रेस को छोड़ने का फैसला किया। माना जा रहा है कि अब मिलिंद देवड़ा एकनाथ शिंदे की शिवसेना में शामिल होकर दक्षिण मुंबई सीट से फिर चुनाव मैदान में उतर सकते हैं।

अब सचिन पायलट ही बचे

मिलिंद देवड़ा के इस्तीफे के बाद अब राहुल ब्रिगेड में केवल सचिन पायलट ही बच गये हैं, जो राजस्थान में अशोक गहलोत के खिलाफ लगातार मोर्चाबंदी किये हुए हैं। बताया जा रहा है कि 2024 के चुनाव से पहले वह भी अलग रास्ता अख्तियार कर सकते हैं और यदि ऐसा होता है, तो बहुत आश्चर्य की बात नहीं होगी।

जमशेदपुर की खबरें

परमात्मा की कृपा सभी पर बनी रहे : काले

हर हर महादेव सेवा संघ ने जरूरतमंदों के बीच कंबल का किया वितरण

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। मकर संक्रांति के अवसर पर 'हर हर महादेव सेवा संघ' के संस्थापक अमरप्रीत सिंह काले के नेतृत्व में ठंड में राहत पहुंचाने के उद्देश्य से बाबू कुंवर सिंह मैदान, राजकीय जय हिन्द बालिका मध्य विद्यालय बागबेड़ा, गांधी मैदान, सोपोडेरा, परसुडीह, कल्याण नगर, भुइंयाडीह, बागुनहातु क्षेत्रों में जरूरतमंदो और बुजुर्गो के बीच कंबल का वितरण किया गया। मौके पर अमरप्रीत सिंह काले ने कहा जरूरतमंदों की सेवा ही नारायण सेवा है। ठंड के मौसम में कंबल मिलने पर बुजुर्गों के चेहरों में काफी खुशी और संतुष्टी देखने को मिल रहा है। इस अवसर पर प्रभु राम मुंडा, जुझार कालूनडीया, राम मुखी, अनीता महतो, मोनिका दास,रेमो पिंगुआ,राम, हेमंत कुमार पान, बिशु लोहार, अजय लोहार, विशाल सिंह, मिथलेश सिंह, दिग्विजय सिंह, सुनील तिवारी, राजन ठाकुर, सुभाशुं, शुभम, रिंकी देवी, लख्खीकांतो घोष, रुपलाल लोहार, मुकुल दास, राजू रजक, डॉ के डी गुप्ता, नरेश साहु, शुरू पात्रों सहित हर हर महादेव परिवार से अखिलेश पांडे, प्रिंस सिंह, बिभाष मजुमदार, अमित, सनोज चंद्र, सूरज, पिंटू, विक्की, सूरज और अन्य मौजूद रहे।

वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान हमारी सामाजिक सभ्यता का परिचायक : पुरेंद्र नारायण सिंह

आदित्यपुर (आजाद सिपाही)। आदित्यपुर नगर परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष पुरेंद्र नारायण सिंह ने आदित्यपुर नगर निगम वार्ड- 32 में आदित्यपुर गम्हरिया विकास समिति बैनर तले वरिष्ठ नागरिको के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर वार्ड 32 के उपस्थित करीब 500 वरिष्ठ नागरिकों में माताओ और बहनों को सम्मानित करते हुए नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ सभी को कंबल, छाता, गेहूं का आटा, न्यू ईयर डायरी व अंग वस्त्र प्रदान किया गया। मौके पर पुरेंद्र नारायण सिंह ने वरिष्ठ नागरिक का हौसला अफजाई करते हुए कहा वरिष्ठ नागरिक अपने जीवन में कई सारी उपलब्धियां पायी है। वहीं वृद्धावस्था पेंशन की राशि दो हजार प्रति माह करने हेतु जन सहयोग से आंदोलन करने की बाते भी कही। पुरेंद्र नारायण सिंह ने वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह में कहा वार्ड- 32 के जरूरतमंद वरिष्ठ नागरिकों को अस्पताल में इलाज के दौरान अटेंडर की सुविधा प्रदान की जायेगी। मौके पर एस एन यादव, सीएल तिवारी, बाला शंकर तिवारी, बैकुंठ चौधरी, अधिवक्ता संजय कुमार, देव प्रकाश, उदित, आशुतोष, ऋषि, अजय सारांश, फौजी शैलेंद्र, मनोज ठाकुर, संतोष यादव, संतोष शर्मा, बीके ठाकुर, शरद चंद्र उर्फ वकील सहित अन्य उपस्थित रहे।

कार्यक्रम : भाजपा ने केतार प्रखंड की भगवान घाटी में किया 14वीं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

30 शहीद बनिहारों को दी गयी श्रद्धांजलि

रविकांत चंद्रवंशी

केतार (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के भगवान घाटी में रविवार को 14वां श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान विधायक भानु प्रताप शाही, गढ़वा के पूर्व विधायक सत्येंद्र तिवारी और भाजपाइयों के द्वारा बनिहार बेदी पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धासुमन अर्पित किया।

बनिहार बेदी पर पुष्प अर्पित करते हुए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गयी। उसके बाद शहीद बनिहारों के परिजनों को अंग वस्त्र प्रदान किया गया। इसके उपरांत सभा का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष कन्हाई प्रसाद और सभा का संचालन लक्ष्मण राम ने किया। सभा को संबोधित करते हुए सत्येंद्र नाथ तिवारी ने कहा की आपका बेटा भानु प्रताप शाही ने इस क्षेत्र के लोगों के लिए 12 माह के आलावा 2 माह का अतरिक्त अनाज भेजा, ताकि कोई भी गरीब असहाय लोगों को भूखे नही सोना पड़े। उन्होंने कहा कि आपका विधायक अगली बार मंत्री बनेगा, इसकी गारंटी मैं देता हूं। विधायक श्री शाही ने कहा कि आज के दिन जो हमलोग यह कार्यक्रम किया करते हैं तो उस पर भी लोग मजाक उड़ाते हैं। लेकिन मुझ पर उसका कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे बाप का देहांत हुआ था, मैं छुरी लोटा लिया था, इस समय भी मैंने अपने लोगों को भेज कर बनिहार बेदी पर पुष्प चढ़ाया। मैं राजनीति नहीं करता, मैं गरीबों की सेवा हित में कार्य करता हूं। आज लोग राजनीति करते हैं? क्या उन्हें आज दो फूल बनिहार बेदी पर नहीं चढ़ाना चाहिए था। आज मैं हरेक लोगों के यहां चाहें दाह संस्कार हो, शादी ब्याह, मैं भाई बन कर पीठ पुराने का काम करता हूं। आज भी आपलोग देखते हैं की मैं हर वर्ष 28 फरवरी को सैकड़ों बहनों का हांथ पिला करने का कार्य करते हैं। मेरा सपना है कि 1001 गरीब बहनों का हाथ पिला करूंगा। उन्होंने कहा कि आज अबुआ आवास के नाम पर तीस तीस हजार रुपये वसूली किया जा रहा है। अंत में श्री शाही ने दिव्यांग, विधवा, वृद्ध और असहाय लोगों के बीच कंबल वितरण किया। तत्पश्चात सभी उपस्थित लोग खिचड़ी का लोग लुफ्त लिया।

राज्यपाल के नाम सौंपा मांग पत्र

कार्यक्रम के अंत में प्रभारी बीपीओ मनोज कुमार को महामहिम राज्यपाल के नाम 21सूत्री मांगपत्र सौंपा गया। जिसमें मुख्य रूप से मृत बनिहारों के अश्रितों को नौकरी, पलायन रोकने, डोमनी बराज, सोन और कन्हर पाइप लाइन चालू करने, पंडा नदी, सोन नदी किनारे तटबंध, मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना की शुरूआत, शिक्षित बेरोजगारों को पांच हजार रुपये प्रति माह भत्ता, पारा शिक्षकों के साथ सभी अनुबंध कर्मी को स्थायी करते हुए वेतनमान देना, भवनाथपुर में सीमेंट फैक्ट्री, हरेक पंचायत में धान क्रय केंद्र खोलना, सहित अन्य मांग किया गया है।

14 जनवरी 2010 को बिहार से धान काटकर लौट रहे 30 बनिहारों की ट्रक पलटने से हो गयी थी मौत : विदित हो की 2010 में कुपा पंचायत के 30 बनिहार भोजपुर बिहार से धान काट कर वापस लौट रहे थे। उसी क्रम में केतार के भगवान घाटी में ट्रक अनियंत्रित हो कर पलट गयी थी। जिसमें 30 बनिहारों की घटना स्थल पर ही मौत हो गयी थी। उसी समय से क्षेत्रीय विधायक भानु प्रताप शाही के द्वारा हर वर्ष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन करते आ रहे हैं। इस आयोजन में स्वास्थ्य शिविर का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों की संख्या में लोग अपना इलाज कराते हैं।

इनकी रही गरिमामयी उपस्थिति इस मौके पर गढ़वा विधानसभा पूर्व विधायक सतेंद्र तिवारी, जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश केशरी, जवाहर पासवान, संतोष दुबे, भाजपा पार्टी वरिष्ठ नेता सारदा महेश प्रताप देव, मनोज पहाड़िया, जिला परिषद केतार ज्वाला प्रसाद, मंडल अध्यक्ष कन्हाई प्रसाद, मुकुंदपुर मुखिया मूंगा साह, रघुराज पांडे, राजीव रंजन तिवारी उपेंद्र दास, सुनील सिंह, मधुलता देवी, संध्याकार, मनोज, रामप्रसाद सहित हजारों कार्यकर्ता और ग्रामीण जनता उपस्थित थे।

मरदा में पूजित अक्षत और निमंत्रण कार्ड का वितरण

भंडरिया (आजाद सिपाही)। प्रखंड के ग्राम मरदा गांव में अयोध्या के राम मंदिर में 22 जनवरी को रामलाल की मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पूर्व पूजित अक्षत और निमंत्रण कार्ड का वितरण ग्राम मरदा में विभिन्न टोला में टोली बनाकर उत्साह पूर्वक अयोध्या के पूजित अक्षत वितरण किया जा रहा है, आज पूरे गांव में निमंत्रण पत्र और पूजित अक्षत हर घर में वितरण किया गया। वह मर्दा गांव से जुलूस के शक्ल में जय श्री राम का नारा लगाते हुए भंडरिया प्रखंड मुख्यालय स्थित इंदिरा गांधी चौक होते हुए भंडारिया बाजार से मरदा वापस लौट गये। इस जुलूस में मरदा और नौका के लोग उत्साह पूर्वक जय श्री राम का नारा लगा रहे थे इस मौके पर अनिल केसरी पंकज केसरी प्रणव केसरी बीरबल भुइया धनपत सिंह गोविंद सिंह जुलूस में शामिल थे।

मेल्विन जॉन्स के जन्म दिवस पर फूड फॉर हंगर कार्यक्रम का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। लायंस क्लब का गढ़वा सिटी के द्वारा लायंस क्लब के जन्मदाता लायन मेल्विन जॉन्स के जन्म दिवस के अवसर पर गढ़वा में फूड फॉर हंगर का कार्यक्रम किया गया। सौभाग्यवश इसी दिन लायंस क्लब ऑफ गढ़वा सिटी के चार्टर मेंबर और भूतपूर्व अध्यक्ष समाजसेवी लायन दयाशंकर गुप्ता जी का जन्मदिन भी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम केक काटकर लायन मित्रों ने खुशियां जाहिर की तत्पश्चात अध्यक्ष लायन सुशील केसरी, आईपीपी लायन राजमणि प्रसाद ने लायन दया शंकर गुप्ता जी का स्वागत किया। इस अवसर पर सेक्रेटरी लायन संजय कुमार, ट्रेजरर लायन सुनील कुशवाहा, सम्मानित सदस्य लायन राम नारायण प्रसाद, लायन लखन प्रसाद कश्यप, लायन उमाशंकर श्रीवास्तव, लायन डॉ अशोक कुमार, लायन शिवकुमार गुप्ता, लायन दीपक, लायन संतोष कश्यप, अनिल आदि ने दया जी के जन्म दिवस के अवसर पर बधाई दी तत्पश्चात मिनी बस स्टैंड स्थित रघुनंदन रेसिडेंसी केपास गरीबों के बीच चूड़ा, गुड, तिलकुट का वितरण किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष सुशील केसरी ने बताया कि आज के दिन का विशेष महत्व है। विश्व के 187देशों में लायंस क्लब सेवा दे रहा है इस पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर लोग भाग ले रहे हैं।यह विश्व की सबसे बड़ी सेवा संस्था है अतः लायंस क्लब के जन्मदाता लायन मेल्विन जोंस के जन्मदिन को गरीबों की सेवा में समर्पित किया जाता है अतः आज गरीबों को भोजन रूप में चूड़ा गुड तिलकुट का वितरण किया जा रहा है।इस अवसर पर लायन दया शंकर गुप्ता ने सभी मित्रों एवं गढ़वा वासियों को बधाई थी उन्होंने बताया कि बढ़ती उम्र के साथ एक-एक वर्ष उम्र कम होता जा रहा है अतः हम इस बचे समय में समाज की सेवा भरपूर कर सके यही प्रभु से प्रार्थना है। लायन डॉक्टर अशोक कुमार, लायन शिवकुमार गुप्ता, लायन दीपक कुमार, लायन संतोष कश्यप ने अपने सहयोग से लोगों को भोजन सामग्री उपलब्ध करायें।

लायंस इंटरनेशनल संस्थापक मेल्विन जॉन्स के जन्मदिन पर कंबल वितरित

लायंस क्लब ऑफ गढ़वा विशाल ने लायंस इंटरनेशनल संस्थापक मेल्विन जॉन्स का जन्मदिन धुमधाम से मनाया। क्लब अध्यक्ष ला० डॉ कमलेश कुमार कि अध्यक्षता में लायंस विशाल कार्यालय गढ़वा में शनिवार रात मेल्विन जॉन्स के जन्मदिवस पर जरुरतमंदों के बिच ढ़ेर सारे कंबल का वितरण किया गया। उसके बाद क्लब अध्यक्ष ला० डॉ कमलेश कुमार के साथ सभी लायंस विशाल परिवार ने केक काटकर एक दुसरे को खिलाकर मनाया जन्मदिन उसके दुसरे दिन रविवार को क्लब कार्यालय में गोद लिये हुए दस टीबी मरीजों के बिच फुड फॉर हंगर के तहत सभी मरीजों को पौष्टिक आहार दिया गया। इस कार्यक्रम में लायंस विशाल के बहुत सारे पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित थे।

मनरेगा योजना में किया जा रहा है मशीनों का प्रयोग

खेल मैदान निर्माण कार्य में जेसीबी मशीन और ट्रैक्टर से सरेआम निर्माण कार्य हो रहा है। ग्रामीण मजदूरों को कार्य नहीं मिल रहा है और वे पलायन करने पर विवश हैं

आजाद सिपाही संवाददाता

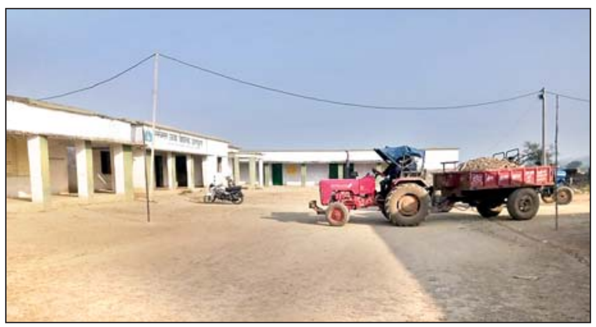

केतार। प्रखंड क्षेत्र के परती कुशवानी पंचायत के छाता कुंड गांव में मनरेगा योजना के तहत खेल मैदान निर्माण कार्य में जेसीबी मशीन और ट्रैक्टर से सरेआम निर्माण कार्य हो रहा है। ग्रामीण मजदूरों को कार्य नहीं मिल रहा है और वे पलायन करने पर विवश है। आज प्रखंड क्षेत्र के भगवान घाटी मे बनिहार बेदी पर श्रद्धांजलि सभा में भाग लेने जा रहे हे लोगों ने कहा कि आज ही के दिन बिहार पलायन कर गए लोग वापस आने के क्रम में भगवान घाटी में ही 30 मजदूरों की मौत हो गयी थी। और मनरेगा जैसा कल्याणकारी योजना में मजदूरों के स्थान पर मशीनों से कार्य लिया जा रहा है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। आज कार्य नहीं मिलने से मजदूरों का स्थिति दयनीय है। बताते चलें कि परती कुशवानी पंचायत में मनरेगा योजना के द्वारा छाताकुंड हाई स्कूल में खेल मैदान का कार्य मजदूरों से नहीं कराकर जेसीबी मशीन और ट्रैक्टर से करायी जा रही है।

इस मामले में क्या कहते हैं जेई: इस मामले में जेई राजीव कुमार ने बताया कि हो रहे कार्य को बंद कर दिया गया है और विभागीय अधिकारी को इसकी सूचना दी जा चुकी है।

क्या कहते हैं प्रखंड विकास पदाधिकारी: इस मामले को लेकर दूरभाष के माध्यम से प्रखंड विकास पदाधिकारी नंदराम जी से पूछे जाने पर बताया की इस मामले की जांचोपरांत इस योजना को बंद कर दिया जायेगा।

मकर संक्रांति पर मेले का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

धुरकी (गढवा)। धुरकी प्रखंड क्षेत्र के अंबाखोरेया स्थित सुखलदरी जलप्रपात में मकर संक्रांति के अवसर पर मेले का आयोजन प्रत्येक वर्ष के भांती इस वर्ष भी किया गया था। वहीं हजारों पर्यटक के भीड़ उमड़ी थी यहां झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश और पड़ोसी राज्य छत्तीसगढ़ से काफी संख्या में युवक बच्चे नौजवान बूढ़े महिला पुरुष की भीड़ उमड पड़ी। वहीं मकर संक्रांति पर्व के अवसर पर श्रद्धालु पर्यटक सभी ने कनहर नदी के पवित्र बहते हुए पानी में लोगों को आस आस्था की डुबकी लगाकर पारंपरिक तरीके से शिव मंदिर में विधि विधान के साथ पूजा अर्चना किया पूजा अर्चना के बाद सभी ने दही चूड़ा गुड़ तिल का प्रसाद ग्रहण किया और मेले में घूम-घूम कर फाल के नजदीक पहुंचकर सभी ने मनोरम दृश्य अपने स्मार्टफोन और कमरे में कैद किया। इसके अलावा काफी संख्या में लोगों ने लोहे की बनी आने को प्रकार की धारदार चाकू तंगी इत्यादि की भी खरीदारी की वहीं सुरक्षा के लिए अंचल अधिकारी जुल्फिकार अंसारी ने एक नोडल सहित सात मजिस्ट्रेट की नियुक्ति लोगों को सुरक्षा के लिए किया था लेकिन मेले में दोपहर 1:00 बजे तक एक भी मजिस्ट्रेट ड्यूटी में नजर नहीं आए वहीं थाना प्रभारी संतोष कुमार रवि ने ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू बनायें रखने के लिए परासपानी कला गांव से लेकर सुखलदारी जल प्रपात के मुख्य द्वार तक नाका और बैरियर लगाकर बड़े छोटे सभी वाहनों के प्रवेश और प्रतिबंध लगा दिया था, इसलिए मुख्य गेट तक पूर्व की भांति इस वर्ष ट्रैफिक और जाम की समस्या लोगों को राहत मिले। वहीं मेले में जल प्रपात के निकट सब इंस्पेक्टर विपिन कुमार सोनू पुलिस बल के साथ मुसतैद थे। मुखिया प्रतिनिधि हरिलाल सिंह के नेतृत्व मे सैकडो स्वयं सेवक सुरक्षा के लिए सक्रिय थे।

जूनियर वर्ग में जवाहर नवोदय छठी बार बना चैंपियन

गढ़वा जिला अंतर स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। जिला पब्लिक स्कूल समय समिति के तत्वाधान में खेले जा रहे 22वीं गढ़वा जिला अंतर स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में जवाहर नवोदय विद्यालय ने बीपी डीएवी स्कूल को पांच विकेट से हराकर चैंपियन बना। इसी के साथ छठी बार रामानंद सिंह स्मृति कप पर कब्जा जमाया।

गोविंद हाई स्कूल के मैदान में बीपीडीएवी की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए सत्यम के 23 रनों के सहयोग से 90 रनों का स्कोर खड़ा किया। जवाहर नवोदय विद्यालय की और से अभिषेक कुमार गुप्ता ने दो विकेट प्राप्त किया। जवाबी पारी खेलने उतरी जवाहर नवोदय विद्यालय ने सुशील के 20, अभिषेक के 11 और जेपी के दस रनो के सहयोग से तीन ओवर शेष रहते पांच विकेट खोकर विजय लक्ष्य को पा लिया। इसी के साथ जवाहर नवोदय विद्यालय की टीम ने लगातार दूसरी बार रामानंद सिंह स्मृति कप पर कब्जा जमाया। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार जवाहर नवोदय विद्यालय के अभिषेक कुमार गुप्ता को दिया गया।

जूनियर वर्ग में मैन ऑफ द सीरीज बीपीडीएवी के उत्कर्ष, बेस्ट बल्लेबाज बीपीडीएवी के नैतिक तिवारी, बेस्ट गेंदबाज साउथ प्वाइंट के सोएब रजा, बालिका वर्ग में मैन ऑफ द सीरीज ज्ञान निकेतन बेलचंपा के सुहानी सिंह, बेस्ट गेंदबाज शांति निवास के श्रुति कुमारी, बेस्ट बल्लेबाज ज्ञान निकेतन बेलचंपा की सिमरन सिंह को दिया गया। इस मौके पर सचिव आनंद सिन्हा, सह सचिव प्रिंस सोनी, पंकज सिंह, विधायक प्रतिनिधि ओमप्रकाश गुप्ता, कोषाध्यक्ष कमलेश दुबे, सह सचिव प्रिंस सोनी, अभिषेक द्विवेदी अभय कुमार, नवनीत कुमार, दिव्य रंजन चौबे, मनीष उपाध्याय रणजीत तिवारी, मनीष, अनिल कुमार, धीरज, मनोज तिवारी, प्रवीन मिश्रा, प्रिंस दुबे, रोहन तिवारी, आलोक गुप्ता, आदित्य तिवारी, विशाल कुमार शामिल थे।

मैत्री क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

गढ़वा (आजाद सिपाही)। कूड़ेलवा (भिखही) स्थित खेल मैदान में वार्ड स्तरीय मैत्री क्रिकेट टूर्नामेंट भिखही सीजन-2 का मैच वार्ड 1 बनाम वार्ड 10 के बीच खेला गया। वार्ड 10 टॉस जीतकर फील्डिंग करने का फैसला किया। मैच का उद्घाटन ग्राम पंचायत भिखही के मुखिया वीरेंद्र चौधरी के द्वारा बल्लेबाजी कर किया गया। वार्ड 1 की टीम वार्ड 10 की टीम का चार विकेट से हराया। इस अवसर पर उपमुखिया प्रतिनिधि अर्जुन कुमार चौधरी, लव कुमार चौधरी, सूरत चौधरी, श्यामबिहारी तिवारी, वीरेंद्र साह, पंकज साह, प्रगाश चौधरी सहित हजारों लोग शामिल थे।

भूतपूर्व सैनिकों को सम्मानित किया गया

गढ़वा (आजाद सिपाही)। समाहरणालय के सभागार में उपायुक्त शेखर जमुआर और पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार पांडेय द्वारा 14 जनवरी के अवसर पर भूतपूर्व सैनिकों को माल्यार्पण कर और अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया, साथ हीं सभी का हौसला अफ्जाई करते हुए उनके द्वारा किये गये कार्यों को याद किया गया। उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक द्वारा सम्मनित किये गये भूतपूर्व सैनिकों में मुख्य रूप से जुगल किशोर तिवारी, सुदामा प्रजापति, देवेंद्र नाथ शुक्ला, प्रभु दास टोप्पो, अशोक लाल बखला, अमर राय, पीएनएन दुबे, रामविलास प्रसाद, राजेंद्र शुक्ला सहित 29 भूतपूर्व सैनिक शामिल हुए। सभी भूतपूर्व सैनिकों को उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक के द्वारा माल्यार्पण के साथ अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि संयुक्त सचिव, गृह कारा और आपदा प्रबंधन विभाग, झारखंड रांची से प्राप्त पत्र के आलोक में आज इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मंत्री ने मंदिर के छतरी निर्माण के लिए मेला कमेटी को दिया 31 हजार रुपये का सहयोग

रंका (आजाद सिपाही)। रंका अनुमंडल मुख्यालय स्थित भलपहरी में मकर सक्रांति के अवसर पर मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गढ़वा विधायक सूबे के पेयजल और स्वच्छता मंत्री मिथिलेश ठाकुर के सौजन्य से मेला कमेटी को मंदिर के छतरी और सिढ़ी निर्माण कराने हेतु 31 हजार रुपये का सहयोग राशि विधायक प्रतिनिधि कंचन साहू के हाथों प्रदान किया गया। इस मौके पर झामुमो युवा जिलाध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि संजय सिंह छोटू, अनुमंडल अध्यक्ष जैनुल्लाह अंसारी, अनुमंडल युवा अध्यक्ष सह खरडीहा पंचायत मुखिया प्रतिनिधि पप्पू यादव, प्रखंड अध्यक्ष आशीष कुमार गुप्ता, सचिव इरफान अंसारी, सोनदाग पंचायत की मुखिया रीमा देवी, बीस सूत्री अध्यक्ष अहमद अली अंसारी, उपाध्यक्ष अरविंद सोनी, दिलीप चौधरी, स्वयंसेवक अमरेंद्र, बेचन पांडेय सहित काफी संख्या में झामुमों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

रंकाकला में पूजित अक्षत और निमंत्रण पत्र का वितरण

रंका (आजाद सिपाही)। रंका अनुमंडल मुख्यालय के रंकाकला पंचायत में 1190 घरों में लगभग 10 हजार हिंदू सनातनी लोगों के बीच अयोध्या से पूजित अक्षत, भगवान श्री राम की तस्वीर और निमंत्रण पत्र का वितरण किया गया है। प्रखंड संयोजक सोनू कुमार मद्धेशिया और सहसंयोजक आलोक कुमार ने कहा कि जिन बंधुओं के घर पूजित अक्षत और निमंत्रण पत्र नहीं पहुंचा हो वे उनसे संपर्क कर प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर सोनू कुमार मद्धेशिया ने कहा कि अयोध्या में श्री राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा दिवस 22 जनवरी जैसे जैसे नजदीक आ रही है वैसे वैसे पूरे रंका अनुमंडल मुख्यालय के राम भक्तों में उत्साह देखने को मिल रहा है।

मकर संक्रांति में जगह-जगह लगा मेला

मेराल (आजाद सिपाही)। मकर संक्रांति को लेकर लोगों में काफी उत्साह देखा गया। इस अवसर पर शहर से गांव तक जगह-जगह मेले का आयोजन किया गया जिसमें युवाओं के साथ बच्चों ने खूब लुफ्त उठाया। मकर संक्रांति पर धार्मिक मान्यता के अनुसार लोग सुबह से ही विभिन्न जलस्त्रोतों में स्नान कर मंदिरों में पूजा अर्चना करने के बाद अधिकांश लोग दान पुण्य करने के पश्चात दही-चूड़ा के साथ-साथ तिलकुट, लाई, तिलवा आदि का आनंद लिया। प्रखंड के ऐतिहासिक बंका पहाड़ी, लातदाग के चूरामन पहाड़, बाना में शरबदाहा यूरिया नदी, हड़कुड़ी, पचफेड़ी मोड़ शिव मंदिर पहाड़ी सहित अन्य कई जगहों पर मेले का आयोजन किया गया। लोगों के अनुसार 15 जनवरी को भी यहां मेला लगेगा जिसका आनंद लोग उठा सकेंगे। 20 ऐतिहासिक बंका पहाड़ का मेले में उपस्थित लोग।

पुलिस ने 30 क्विंटल जावा महुआ किया विनष्ट

मेराल (आजाद सिपाही)। प्रशिक्षु डीएसपी चिरंजीवी के नेतृत्व में मेराल थाना क्षेत्र के सुदूरवर्ती गांव दुलदुलवा में महुआ शराब के विरुद्ध सघन छापेमारी अभियान चलाया गया। छापेमारी के दौरान पुलिस टीम ने कई घरों और जंगली इलाकों में कई जगहों पर छापामारी कर करीब 30 क्विंटल जावा महुआ को विनष्ट किया गया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार तथा आसपास के क्षेत्र में लगातार अवैध महुआ शराब बनाने तथा बेचने की शिकायत मेराल थाना पुलिस को मिल रही थी। इसके बाद सघन छापेमारी अभियान चलाया गया। पुलिस टीम को आते देख कारोबारी मौके से फरार हो गए, परंतु पुलिस की टीम ने मौके से भारी मात्रा में अर्ध निर्मित अवैध महुआ शराब को विनष्ट कर दिया। छापेमारी अभियान में थाना प्रभारी नीतीश कुमार के साथ कई पुलिस अधिकारी और सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

चांदराज पहाड़ी पर मेले का आयोजन

रमना (आजाद सिपाही)। प्रखंड सहित आस पास के क्षेत्रों में मकर सक्रांति पर्व धूम धाम से मनाया जा रहा है। जिसमें प्रत्येक वर्ष कि भांति सिलीदाग के बाबा चांदराज पहाड़ी पर मेले का आयोजन किया गया। इस कार्य को सफल बनाने में गोपाल प्रसाद गुप्ता, बनारसी ठाकुर, जगदीश यादव, रामचंद्र को संगठन सचिव, दिलीप ठाकुर, बिरंची पासवान, परसू मेहता, श्याम सुंदर सहित कई लोगों ने सराहनीय भूमिका निभायी। इसी तरह भागोडीह के फटहा नदी, टंडवा गांव स्थित बाई बांकी नदी के प्रांगण में शिव मंदिर में पूजा पाठ कर मेले का आयोजन किया गया।

श्री सर्वेश्वरी समूह ने ऊंटारी में कंबल का वितरण किया

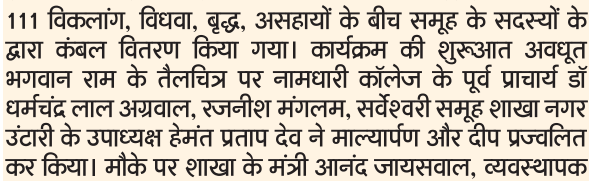

श्री वंशीधर नगर (आजाद सिपाही)। श्री सर्वेश्वरी समूह शाखा नगर ऊंटारी में मां मैत्रायणी योगिनी महा निर्माण दिवस के अवसर पर विधिवत पूजा अर्चना कर विश्व की सुख शांति की कामना की गयी। उक्त अवसर पर समूह शाखा के द्वारा चलायें जा रहे चरणबद्ध तरीके से कंबल वितरण कार्यक्रम किया गया। आश्रम परिसर में उपस्थित 111 विकलांग, विधवा, बृद्ध, असहायों के बीच समूह के सदस्यों के द्वारा कंबल वितरण किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत अवधूत भगवान राम के तैलचित्र पर नामधारी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ धर्मचंद्र लाल अग्रवाल, रजनीश मंगलम, सर्वेश्वरी समूह शाखा नगर उंटारी के उपाध्यक्ष हेमंत प्रताप देव ने माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर शाखा के मंत्री आनंद जायसवाल, व्यवस्थापक संजीव कुमार सिन्हा, प्रोफेसर प्रशांत सहाय, राजेंद्र यादव, नागेंद्र, छोटू वार्ड, शुभम सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 15 जनवरी, 2024
www.azadsipahi.in

एमएसीपी प्राप्त करने के लिए शिक्षकों का हुआ जुटान

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। प्राथमिक शिक्षकों का सेवा काल हमेशा से ही जटिल और विवादित रहा है। जिसके चलते नियुक्त होकर सहायक शिक्षक के रूप में ही सेवानिवृत्त हो जाता है इसके लिए जिम्मेदार है विलम्बित एवं विवादित प्रोन्नति प्रकिया । जबकि झारखंड सरकार के अन्य विभाग के कर्मचारियों को 10 वर्ष 20 वर्ष एवं 30 वर्ष में वृत्ति उन्नयन प्राप्त है। प्राथमिक शिक्षक भी राज्य कर्मी होने के चलते अन्य कर्मचारियों के ही भांति एम सी पी की मांग झारखंड सरकार से लम्बे समय से कर रहे हैं। यदि एक महीने के अंदर राज्य सरकार कोई फैसला नहीं करती है तो प्राथमिक शिक्षक धरना - प्रर्दशन का रास्ता अपनाने के लिए बाध्य होंगे। इस आशय का निर्णय आज झारखंड प्रदेश प्राथमिक शिक्षक संघ के बैनर तले बीआरसी भवन में हुई बैठक में निर्णय लिया गया। बैठक में महासचिव प्रेम प्रसाद विभिन्न जिले से आए प्रतिनिधियों ने अपनी बातें रखी।

फर्जी ग्रामसभा कर रजिस्टर में चढ़ायी जाती है योजना

प्रत्येक पंचायत में सैकड़ों की संख्या में स्वीकृत की जाती है टीसीबी योजना

डिंपल राजा

मनिका/ लातेहार (आजाद सिपाही)। मनिका प्रखंड क्षेत्र में इनदिनों मनरेगा योजना में बिचौलियों एवं पदाधिकारियों की मिली भगत से लूट की छूट मिली हुई है। अभी कुछ दिनों पूर्व में ही प्रखंड के रांकीकला पंचायत में बिचौलियों एवं पदाधिकारी के मिली भगत से मनरेगा योजना में जेसीबी मशीन के माध्यम से कूप का खुदाई किया गया था। जब मामला विभिन्न अखबार में आया तब भी किसी पर बिना कोई कार्रवाई के ही पदाधिकारियों ने मामला को रफा दफा कर दिया। हाल में प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न पंचायतों में सैकड़ों की संख्या में टीसीबी योजना का धड़ल्ले से एंट्री कराया जा रहा है। जिसमें अधिकारी, मनरेगा कर्मी, जेई, एइ, जनप्रतिनिधि एवं जिला मैनेज के नाम पर भारी भरकम रकम की वसूली की जा रही है। वहीं मनिका पंचायत के एक लाभुक ने नाम नहीं बताने के शर्त पर बताया कि हाल ही में कुछ दिन पूर्व हुए टीसीबी में मोटी रकम की वसूली की गई है। लाभुक ने बताया कि योजना स्वीकृत करने में पंचायत सचिव 2500-2500 प्रति टीसीबी तसीली करवाये थे। उसके बाद टीसीबी का एंट्री हुआ। फिर जेइ एवं एइ के द्वारा 1800 से 2000 के बीच पैसा लिया गया जिसके बाद मुखिया को 500 से 700 पैसा दिया गया तब जाकर योजना

प्रखण्ड सह अंचल कार्यालय
मनिका
जिला लातेहार

अप्रूव्ड हुआ। फिर जियो टेंगिग में रोजगार सेवक को 500 दिया जाता है। लाभुक ने बताया कि तब जा कर 57000 का टीसीबी मिलता है। यही हाल प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न पंचायतों का है पूर्व में हजारों की संख्या में प्रखंड से जिला के निर्देश पर टीसीबी योजना रद्द की गई थी। इसीलिए इस बार प्रति योजना 600 जेई एवं ऐई से जिला मैनेज के लिए पूर्व से ही तसली कराया जा रहा है। ताकि फिर से योजना रद्द ना हो जाए। वहीं पंचायत सेवकों के द्वारा नई योजना के स्वीकृति के नाम पर फिर से पैसा वसूली अपने विश्वासी बिचौलियों के द्वारा कराई जा रही है। संभावना है कि फिर से टिसीबी योजना की एंट्री कराई जा सकती है। जबकि विभाग के दवारा चिठ्ठी निकला था की एक गांव में पांच योजना से अधिक योजना स्वीकृत नहीं करनी है। लाभुक को पता भी नहीं चल रहा है और बिचौलिया उसके भूमि पर टीसीबी निर्माण करा कर पैसे की निकासी कर ले रहा है।

क्या बोले बीपीओः वहीं इस विषय पर पूछे जाने पर बीपीओ संतोष कुमार ने कहा कि जनप्रतिनिधियों के द्वारा लाभुकों से पैसा वसूली करने के विषय में मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। इसकी जांच की जाएगी अगर लाभुकों से पैसे की उगाही की जा रही है तो उनके विरुद्ध विधिवत रूप से कार्रवाई की जाएगी।

क्या कहते हैं बीडीओः वही प्रखंड विकास पदाधिकारी मनोज कुमार तिवारी को मामले से अवगत करवाने पर उन्होंने कहा कि टीसीबी योजना में पैसे लेने का अफवाह फैलाया जा रहा है लाभुकों से कोई वसूली नहीं की जा रही है अगर ऐसा हुआ है तो उसकी जांच की जायेगी।

सूर्य उत्तरायण महायज्ञ का होगा आयोजन

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। सेन्हा प्रखंड अंतर्गत चितरी घाघ में लगने वाले मेला में सूर्य उत्तरायण महायज्ञ का आयोजन किया गया है। यह आयोजन वैदिक विश्व मंगल ट्रस्ट के तत्वावधान में किया गया है। जिसमे मंत्र पाठ व हवन पूजन के बाद भव्य भंडारे का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में मंत्र पाठ मुगो स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा किया जाएगा। यज्ञ के ब्रह्मा युवा विद्वान योग गुरु आचार्य अशोक रहेंगे। मुख्य वक्ता डॉ रजित कौशल किशोर शिक्षक एवं सामाजिक कार्यकर्ता, भजन प्रस्तुति- सुलेखा, मुख्य यजमान उदय सिंह सह धर्मपत्नी, शिव शंकर साहू होंगे। वहीं ट्रस्ट के सदस्य रंजन समतानी और सहयोगियों के द्वारा 151 किलो चावल के खिचड़ी का भंडारे का महाप्रसाद का वितरण मेला में किया जाएगा। बताया गया कि मकर संक्रांति के दिन खिचड़ी खिलाने का बहुत महत्व है। मकर संक्रांति की खिचड़ी में चावल, उड़द की दाल, कुर्थी के दाल,घी, हरी सब्जियों का उपयोग किया जाना है जो की विद्वानों एवं शास्त्रों का उपदेश है अन्न दान महादान। इस भंडारे में सुधीर अग्रवाल, राजन आहूजा, संजय नागपाल, जसप्रीत वालिया, बिहारी प्रसाद आदि का विशेष सहयोग मिलेगा। यज्ञ प्रबंध समिति में शीतांशु भूषण, सुरेश सिंह चितरी, करण कु सिंह चितरी, रत्नेश प्रकाश, निर्मला साहू हरमू, महेश कुमार शिक्षक, रोहित साहू नदिया, निलेश गुप्ता आदि शामिल हैं। बताया गया कि मकर संक्रांति पर यज्ञ अनुष्ठान करने का कई लाभ है। संसार का सबसे श्रेष्ठ कर्म है यज्ञ करना। अग्नि में आरती डालने से अभी सूक्ष्म होकर सूर्य तक फैल जाती हैं। दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करता है। मकर संक्रांति के बाद सभी शुभ कार्य प्रारंभ हो जाते हैं।

थाना प्रभारी और पुलिसकर्मियों को दिया गया पूजित अक्षत और निमंत्रण पत्र

सेन्हा/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र में विश्व हिन्दू परिषद व आरएसएस के कार्यकताओं द्वारा अयोध्या से आये पूजित अक्षत चावल व निमंत्रण का वितरण शहर से गांव गांव तक 22 जनवरी से पूर्व वितरण किया जा रहा है। उसी क्रम में रविवार को भी विहिप प्रखंड अध्यक्ष रणजीत साहु के नेतृत्व में विहिप व आरएसएस के कार्यकताओं द्वारा सेन्हा थाना पहुंच कर थाना प्रभारी अभिनव कुमार सहित अन्य पुलिस कर्मी व पदाधिकारियों को अयोध्या से आये पूजित अक्षत चावल और निमंत्रण पत्र दिया गया। वही रणजीत साहू ने कहा कि आज कई दशक बाद भगवान श्री राम को अपना स्थान मिल रहा है। अयोध्या में मंदिर निर्माण हो चुका है। जिसे प्राण प्रतिष्ठा होने के उपरांत सभी लोग आस्था से श्रद्धा भक्ति भाव से पूजा अर्चना कर सकेंगे साथ ही कहा कि पूर्व की सरकार द्वारा राजनीति षड्यंत्र के कारण भगवान को वर्षों वर्षों तक तम्बू में रहना पड़ा था। परन्तु उच्चतम न्यायालय के फैसला अनुसार मंदिर बनने का मार्ग प्रशस्त होने पर अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ जिसका प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को होना है। साथ ही सभी लोगो से आग्रह किया गया कि निमंत्रण स्वीकार करें और प्राण प्रतिष्ठा में शामिल हो कर साक्षी बनें वही थाना प्रभारी अभिनव कुमार व अन्य सभी पुलिसकर्मियों ने अयोध्या से आये पूजित अक्षत चावल एवं निमंत्रण को खुशी खुशी स्वीकारा मौके पर रणजीत साहु, केदारनाथ साहु, संतोष महतो, अवधेश साहु सहित विहिप व आरएसएस के अन्य कार्यकर्ता शामिल थे।

मकर संक्राति पर पूजा अर्चना के साथ लगा मेला

आजाद सिपाही संवाददाता

कैरो/ लोहरदगा। कैरो प्रखंड के खरता-हनहट कोयल नदी तट स्थित मनोकामना सिद्ध बाबा भोलेनाथ मंदिर प्रांगण में मकर संक्रांति के अवसर पर पूजा अर्चना सह मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पंडित कौशल कांत त्रिपाठी व काशीनाथ पांडेय द्वारा श्रद्धालुओं को विशेष पूजा अर्चना कराया गया। पूजा अर्चना के बाद आयोजन में उपस्थित अतिथियों को समिति के ओर से बैच पहनकर व शॉल भेंटकर स्वागत किया गया।

मौके पर मेला टांड में विधायक मद से निर्मित विवाह मण्डप का उद्घाटन मंत्री डॉक्टर रामेश्वर उरांव के द्वारा फीता काट कर किया गया साथ ही साथ मेले के अवसर पर आयोजित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि मंत्री सह लोहरदगा विधायक रामेश्वर उरांव व अन्य अतिथियों द्वारा फीता काट कर किया गया। सांस्कृतिक ग्रुप के द्वारा एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक गीत संगीत प्रस्तुत कर लोगो का मन मोह लिया। आयोजन समिति के द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि वित्तमंत्री सह विधायक रामेश्वर उरांव ने कहा बाबा शिद्ध भोलेनाथ मंदिर में हरेक वर्ष मेला एवं कई प्रकार का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। सबसे पहले आयोजन समिति बधाई के पात्र हैं जिनके द्वारा क्षेत्र वासियों के लिए एकजुटता आपसी भाईचारगी एवं कला संस्कृति को आगे बढाने के लिए एक मंच प्रदान किया जाता है। मौके पर मांडर विधान सभा के पूर्व विधायक सह भाजपा प्रदेश कमिटी के उपाध्यक्ष गंगोत्री कुजूर, अनुसूचित जनजाति मोर्चा प्रदेश महामंत्री बिंदेश्वर उरांव, आजसू पार्टी लोहरदगा विधान सभा प्रभारी नीरू शांति भगत, जिला परिषद सदस्य सुखदेव उरांव, चान्हो जिला परषिद सदस्य आशुतोष तिवारी, विधायक प्रतिनिधि निशीथ जयशवाल, बीस सूत्री प्रखंड अध्यक्ष अनीश अहमद, उपाध्यक्ष बुधवा उरांव, मुखिया सुमित्रा उरांव, सुमन उरांव, सिमा भगत, लखन उरांव, बजरंग उरांव, नजिर आलम खान, जगबन्धन भगत, आयोजन समिति के मृत्युंजय तिवारी कृष्णा मनी यादव, राजेन्द्र महतो, मुन्नी उरांव, मोहन साहू, बिनोद शुक्ला, सुसेन महतो, सोमनाथ महली, बीरबल महली, बहादुर उरांव, रमेश दुबे, श्यामसुन्दर उरांव, सुखदेव उरांव, बजरंग यादव, राजेश महतो, शम्भू तिवारी सहित काफी संख्या में गांव के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पाइप बनवाने के लिए सीएम को बुलाना होगा : आजसू पार्टी

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। शहरी क्षेत्र में पिछले लगभग छह महीनो से पेयजल आपूर्ति की पाइप शहर के विभिन्न स्थानों कचहरी मोड, ब्लॉक मोड, किस्को मोड, पावरगंज, न्यू रोड, अजय उद्यान पार्क के समीप, अलका हॉल के समीप विभिन्न स्थानों पर पाइप फटी हुई है। जिससे हजारों लीटर पानी प्रतिदिन बर्बाद हो रहा है और सड़क पर चलने वाले राहगीरों के ऊपर पानी के छिंटे भी पड़ते हैं। आम दुकानदार एवं जनता परेशान हैं। एक ओर शहर में पीने के लिए पानी की सप्लाई दो दिन चार दिन, पांच दिन में एक बार की जाती है और दूसरी ओर हजारों लीटर पानी की बबार्दी हो रही है, जिसे देखने वाला कोई नहीं है ना ही नगर परिषद ना ही नगर परिषद के पेयजल आपूर्ति संवेदक को इसकी चिंता है। जबकि इसी सड़क

से प्रतिदिन प्रशासनिक पदाधिकारी, स्थानीय विधायक सह मंत्री, सांसद एवं अन्य जनप्रतिनिधि आते एवं जाते हैं लेकिन किन्ही को इस बात की फिक्र नहीं है। लगता है कि इस पाइप लीकेज को बंद कराने के लिए भी मुख्यमंत्री को बुलाना होगा। दूसरी ओर नगर परिषद बहाना ढूंढ कर बैठा हुआ है की एन एच की रोड है हम छू नहीं सकते, लेकिन तस्वीरे ब्यां कर रही है की जहां पर सड़क को छूना भी नहीं है। केवल पाइप लीक है उसको भी बंद करने के लिए नगर परिषद तैयार नहीं है। उपरोक्त बाते आजसू के नगर अध्यक्ष अशोक साहू ने कही है।

आजसू पार्टी नगर कमेटी का होगा सम्मेलन

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। आजूस पार्टी नगर कमिटि की बैठक आजसू कार्यालय में संपन हुई, जिसमें आजसू नगर के पदाधिकारी शामिल हुए । बैठक में तय किया गया कि शीघ्र ही नगर कमेटी का सम्मेलन किया जाएगा जिसको लेकर चर्चा की गई और वार्ड प्रभारी नियुक्त किए गए। साथ ही यह भी तय किया गया कि नगर में व्याप्त जन समस्याओं एवं भ्रष्टाचार के विरोध में धरना प्रदर्शन भी किया जाएगा. बैठक में मुख्य रूप से आजसू पार्टी नगर अध्यक्ष अशोक साहू, नगर कार्यकारी अध्यक्ष राजन मेहता, नगर प्रधान सचिव कुमार अभिषेक, नगर उपाध्यक्ष आयुष गोयल, प्रदीप नायक, हर्षित अग्रवाल, सनी अग्रवाल, अभिषेक साहू, राहुल राजबाला,सुशील पटनायक (शौर्य सम्राट), इबनेन फिरोज खान, रिजवान अंसारी, आकाश मेहता, सुनील अग्रवाल सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

मकर संक्रांति पर वार्षिक मेला

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीह । मकर संक्रांति को लेकर प्रखंड क्षेत्र के केचकी संगम तट व ततहा गर्म कुंड पर वार्षिक मेले का आयोजन किया गया । जहां वार्षिक मेले को लेकर प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी पूरे पलामू प्रमंडल के विभिन्न क्षेत्रों से लोग मकर संक्रांति के स्नान करने और उसके उत्सव को यादगार बनाने को लेकर सड़क मार्ग के साथ-साथ रेल मार्ग से होते हुए केचकी संगम तट व ततहा गर्म कुंड पर पहुंचे हुए थे।

संगम तट पर आयोजित मेले को लेकर विधि व्यवस्था के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय आजाद मेदनी संघ समिति किया गया। जिसका विधिवत उद्घाटन जिला परिषद सदस्य सन्तोषी शेखर, पूर्व जिला पार्षद अर्जुन सिंह मुखिया बुद्धेश्वर सिंह भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य आशुतोष सिंह पूर्व मुखिया संजय सिंह समेत अन्य अतिथियों के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम में समिति के द्वारा स्थानीय कलाकारों के के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया वही दूसरी ओर मेले की विधि व्यवस्था और सुरक्षा को लेकर प्रखंड प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैयत थी जहाँ थाना प्रभारी श्रीनिवास सिंह के नेतृत्व में थाने के सब इंस्पेक्टर दिलीप कुमार दास एल पासवान जोसेफ तिर्की समेत अन्य पुलिस अधिकारी दल बल के साथ मौके पर मुस्तेद थे ।

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में भी दिखा उत्साह

आजाद सिपाही संवाददाता

सेन्हा/ लोहरदगा। प्रखंड के ग्रामीण क्षेत्रों भी अयोध्या में श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का उत्साह देखा जा रहा है। उसी क्रम में प्रखंड क्षेत्र के अरु ग्राम में भी श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर गाजे बाजे के साथ अयोध्या से आए अक्षत को लेकर निमंत्रण देने के लिये गांव में ग्रामीण युवा निमंत्रण को स्वीकार करो अब सबको अयोध्या चलना है के नारे के साथ पूजित अक्षत चावल व निमंत्रण वितरण करने के लिये निकले। वही गौतम प्रसाद साहु ने जानकारी देते हुए बताया कि 22 जनवरी को अयोध्या मे श्री राम लला के प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होने के लिये पूजित अक्षत चावल व निमंत्रण पत्र दिया जा

रहा है। साथ अन्य ग्रामीणों से आग्रह किया जा रहा है। इस दौरान गांव के अन्य ग्रामीणों के हृदय में राम मंदिर निर्माण को लेकर काफी उत्साह देखा न रह है। लोग राम लला के अयोध्या धाम आने को लेकर घर घर स्वागत करने की तैयारी कर रहे हैं। साथ ही 22 जनवरी को दीपावली के रूप में त्यौहार मनाने का संकल्प भी ले रहे हैं। वही ग्रामीण महिला पुरुष और बच्चो ने जय श्री राम का गगनभेदी नारा लगाया और देश का विकास तथा कल्याण करने के लिये भगवान श्री राम लाल से प्रार्थना किया गया। पूजित अक्षत चावल व निमंत्रण वितरण के मौके पर दिनेश साहू, संतोष राम, दीपक महतो, अयोध्या महतो, पूनम देवी, गोपाल साहू, लकी साहू, नीतीश साहू, मनीषा देवी, पूजा कुमारी सहित अन्य ग्रामीण महिला पुरुष शामिल थे।7

जिला सरना समिति लोहरदगा का पुनर्गठन

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। केंद्रीय सरना समिति ने रविवार को लोहरदगा जिला का दौरा किया जिसमें जिला सरना समिति लोहरदगा में होटल केतकी में आयोजित बैठक में भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से केंद्रीय सरना समिति के केंद्रीय अध्यक्ष फूलचंद तिर्की उपस्थित हुए जिसमें जिला सरना समिति लोहरदगा का पुनर्गठन किया गया। जिसमें जिला सरना समिति लोहरदगा जिला के अध्यक्ष के पद पर सर्वसम्मति से चैतु उरांव, चुना गया एवं उपाध्यक्ष पद के लिए भगवान दास, एवं प्रतिमा उरांव, को चुना गया,मंत्री लक्ष्मण उरांव कार्यकारी अध्यक्ष देवनाथ उरांव मीडिया प्रभारी सुरेश उरांव, सचिव यशपाल भगत, युवा शाखा अध्यक्ष लोहरदगा जिला संदीप भगत को चुना गया। साथ ही लोहरदगा जिला के विभिन्न प्रखंड समिति का भी पूर्ण गठन किया गया । जिसमें जिसमें में सेन्हा प्रखंड के अध्यक्ष पद के लिए कलेश्वर उरांव, सचिव नागेश्वर उरांव को चूना गया कैरो प्रखंड के लिए अध्यक्ष गोवर्धन उरांव सचिव शांति उरांव एवं कैरो प्रखंड महिला शाखा के अध्यक्ष पद पर मोनिका उरांव को चुना गया। कुडू प्रखंड के लिए अध्यक्ष सुरेश उरांव एवं सचिव राजू उरांव को चुना गया। पेशरार प्रखंड अध्यक्ष पद के लिए सुमन उरांव को चयनित किया गया एवं सक्रिय सदस्य के रूप में विष्णु दयाल उरांव, सूरजमनी उरांव, सुशील उरांव को चुना गया। तत्पश्चात सभी नव निर्वाचित पदाधिकारी को केंद्रीय सरना समिति एवं अखिल भारतीय आदिवासी विकास के पदाधिकारी के द्वारा फूलमाला एवं सरना गमछा देकर स्वागत किया गया। मौके पर केंद्रीय सरना समिति के केंद्रीय अध्यक्ष फूलचंद तिर्की ने कहा कि प्राकृतिक पूजक आदिवासियों की परंपरा संस्कृति हक अधिकार पर चौतरफा हमला हो रहा है। समाज की लड़ाई लड़ने के लिए लोग एकजुट हो रहे हैं।

सड़क दुर्घटना में घायल को किया रेफर सीएचओ के भरोसे चल रहा अस्पताल

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीह। बरवाडीह थाना क्षेत्र के 17 सी गेट के समीप अज्ञात वाहन की चपेट में आने से मोटरसाइकिल सवार रमकंडा के चेते गांव निवासी इस्तनिश हुलास टोपनो के पुत्र अविनाश टोपनो उम्र 25 वर्ष गम्भीर रूप से घायल हो गया। जिसके बाद स्थानीय ग्रामीणों की मदद से नजदीकी समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरवाडीह लाया गया। जंहा सीएचओ अनुज सिंह व ड्रेसर राजेश चन्द्र उर्फ बबलू व की देखरेख में प्राथमिक उपचार

ड्रेसिंग रूम
OPPO A76

किया गया। जंहा उक्त युवक का पैर टूट गया जिसके कारण बेहतर इलाज के लिए एमएमसीएच मेदिनीनगर रेफर कर दिया। लेकिन दुर्भाग्य कहे या फिर सिस्टम की विडंबना फिर से सीएचओ के भरोसे हुआ इलाज। बता दें कि शुक्रवार को ही जिले के सिविल सर्जन अवधेश सिंह ने बरवाडीह समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का औचक निरीक्षण किया था। जंहा उन्होंने चिकित्सा प्रभारी डॉ जयवंत लकड़ा को रोस्टर बनाने का निर्देश दिया और कहा था कि चिकित्सक हर हाल में मौजूद रहेंगे। लेकिन आलम जस का तस बना है। उधर इस मामले पर पूर्वी जीप सदस्य कन्हाई सिंह ने कहा कि सिविल सर्जन के निर्देश के बाद भी अगर ये आलम है तो अगर बड़ी घटना घटित होता है तो इसके कौन जिम्मेवारी लेंगे। इसके बाउजूद भी अगर सुधार नहीं होता है तो जिला परिषद की बैठक में मामला उठाया जाएगा और आंदोलन भी किया जाएगा।

शिक्षा पर विशेष ध्यान दें महिलाएंः नीरू शांति भगत

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा । सदर प्रखंड के नदिया गांव में ग्रामीण महिलाओं के साथ आजसू पार्टी लोहरदगा विधानसभा प्रभारी सह झारखंड आंदोलनकारी पूर्व विधायक स्वर्गीय कमल किशोर भगत की धर्मपत्नी नीरू शांति भगत ने बैठक की। उन्होंने महिलाओं से रूबरू होते हुए समस्याओं को जाना और कहा आपकी समस्याओं चाहे वह राशन कार्ड हो या पेंशन का मामला हो या पेयजल, स्वास्थ्य की व्यवस्था हो सभी मामलों को लेकर वह शीघ्र ही आला अधिकारियों से मिलेगी। उन्होंने कहा कि जब एक

महिला शिक्षित होती है तो वह अपने पूरे परिवार को शिक्षित कर देती है, इसलिए महिलाएं अपने बच्चों के प्रति शिक्षा पर विशेष ध्यान दें। बैठक में मुख्य रूप से लोहरदगा आजसू प्रखंड अध्यक्ष रूपेश उरांव, लोहरदगा महिला प्रखंड अध्यक्ष मालती भगत, हरमू पंचायत के मुखिया सुनील उरांव सहित सैकड़ो महिलाएं उपस्थित थी।

महिला ने कीटनाशक का किया सेवन, मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला । सदर थाना क्षेत्र के तिर्रा निवासी 27 वर्षीय अंजनी देवी ने रविवार की सुबह लगभग 8:00 बजे कीटनाशक का सेवन कर लिया। स्थिति खराब होते देखकर परिजन तत्काल उसे सदर अस्पताल लेकर आए जहां उसका इलाज किया गया। इलाज के उपरांत गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टर ने उसे रिम्स रांची रेफर कर दिया। परिजन उसे से रिम्स ले जाने लगे लेकिन रिम्स ले जाने के क्रम में रास्ते में नागफेनी के समीप उसकी मौत हो गई। फिर परिजन उसके शव को वापस सदर अस्पताल लेकर आए। जहां पोस्टमार्टम हाउस में उसके शव को रखा गया है। सोमवार को उसके शव का पोस्टमार्टम किया जाएगा। वहीं घटना की जानकारी देते हुए परिजनों ने बताया रविवार की सुबह खाना बनाकर वह घर में ही थी। तभी पता चला कि उसने कुछ खा लिया है और उल्टी कर रही है। वहीं मृतक का का पति त्रिपुरा में सेना का जवान है। उनके दो छोटे-छोटे बच्चे हैं। घटना के कारणों का स्पष्ट पता नहीं चल पाया है। वहीं पुलिस मामले की छानबीन में जुटी है।

शेख भिखारी के शहादत दिवस पर मना वार्षिक सम्मान समारोह

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। आजादी की जंग हो या आजाद भारत की विकास यात्रा, इसमें मुसलमानों का योगदान नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। और जब देश में मुस्लिमों के योगदान और बलिदान की बात आएगी उस समय अग्रिम पंक्ति में अंसारी मोमिन दिखाई देंगे। उक्त बातें बतौर मुख्य अतिथि प्रदेश मोमिन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष आबिद अली अंसारी ने कहीं। वे गुमला के माही मैरिज हॉल में अयोजित मोमिन अंसारी पंचायत के वार्षिक सम्मान समारोह में उपस्थित लोगों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मोमिन समाज का योगदान हर क्षेत्र में अनुकरणीय रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि आज जिस तरह का आयोजन मोमिन अंसारी पंचायत गुमला की ओर से किया गया है वह सराहनीय है। आगे कहा कि शिक्षा के बल पर हम सब अपने सम्मान स्वाभिमान के साथ कामयाबी हासिल कर सकते हैं। इस मौके पर जिला में टॉपर रहे मैट्रिक इंटर के छात्र, द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता फुटबॉल खिलाड़ी व प्रशिक्षक मो. रिजवान अली और सामाजिक कार्यकताओं को अपनी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं दी। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के तौर पर शामिल हुए अंजुमन इस्लामिया के सदर मुशाहिदआजमी ने कहा कि आज हमारा समाज हर क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। ऐसे मौके पर हम सभी का दायित्व बनता है कि गरीबों की ज्यादा से ज्यादा मदद करें। जहां तक मोमीन अंसारी समाज की बात है तो यह समाज देश की आजादी से लेकर आज तक हर क्षेत्र में अपनी कुबार्नी पेश करने का शानदार इतिहास रखता है। अपने अंजुमन इस्लामिया गुमला को ताकत दे। ताकि इसी तरह आवाम की भलाई का काम हम सब मिलकर करते रहे। इस मौके पर आरिफ अंसारी ने कहा कि मोमिन अंसारी पंचायत ऑल इंडिया मोमिन कॉन्फ्रेंस पूरी तरह से एक सामाजिक संस्था है यह संस्था जंगे आजादी में बहुत कुबार्नी पेश किया और यह संस्था पूरे भारत में अपने कार्यों का निर्वाह कर रही है। हाजी सुल्तान अंसारी एवं अखलाक अंसारी ने कहा कि मोमिन अंसारी पंचायत गुमला का सामाजिक कार्यों के लिए गुमला अंजुमन के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल रही है और आगे भी चलती रहेगी। अध्यक्षीय भाषण में आशिक अंसारी ने कहा कि हमारी पंचायत का सामाजिक कार्य में एक शानदार इतिहास रहा है। हम सब की कोशिश है कि समाज में फैले गलत कृतियों नशा पान शिक्षा स्वास्थ्य पर ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रेरित करें।

मकर संक्रांति महोत्सव का हुआ उद्घाटन

बसिया (आजाद सिपाही)। मकर संक्रांति के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति कलिगा मैदान में मकर संक्रांति महोत्सव का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद समीर उरांव, विशिष्ट अथिति के रूप में गुमला के पूर्व विधायक सह भाजपा एसटी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष शिवशंकर उरांव और बसिया दक्षिणी के जिला परिषद सदस्य बसंती डुंगडुंग द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर और नारियल फोड़कर किया गया। इस अवसर पर समीर उरांव ने कहा कि आज सनातन धर्म को बचाने की आवश्यकता है। हमें हमारे सभ्यता संस्कृति को इसी तरह मनाने की आवश्यकता है। उन्होंने उपस्थित लोगों से अयोध्या में भगवान राम के प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर 22 जनवरी को हर घर मे दीया प्रज्वलित करने की भी अपील की। महोत्सव में गुमला के बाबा म्यूजिकल ग्रुप के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जिसमे कलाकार सिंगर प्रिया देवी, सोनू नायक, दिव्या कुमारी, डांसर सुमन कुमारी, सुनील नायक एवं राजू खेरवार द्वारा मनमोहक नृत्य एवं संगीत प्रस्तुत किया गया। मंच संचालन राहुल मिंज द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पूजा अर्चना पंडित दिलीप जी द्वारा करवाया गया। इस मौके पर मुख्य रूप से विनोद महतो, जिप सदस्य विनोद भगत,प्रवीण सिंह, राजकुमार साहू, जगदंबा साहू, घनश्याम महतो, परमानंद राम, हेमंत महतो, कृष्णा कुशवाहा, राजकुमार सिंह,गौतम महतो,अशोक गोप, मनोज साहू,पूरन बड़ाइक,रितेश शाही, विजय सिंह पिंटू आदि उपस्थित थे।

मकर संक्रांति पर रथ मेला आयोजित

सिसई (आजाद सिपाही)। मकर संक्रांति के अवसर पर प्रखंड के नागफेनी गांव में रविवार को रथ यात्रा सह रथ मेला का आयोजन किया गया। भगवान के दर्शन व स्नान को लेकर सुबह से ही कोयल नदी व जगरनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा जो देर शाम तक जारी था।तीन बजे रथ यात्रा प्रारंभ की गई।हजारों श्रद्धालुओं ने रथ को खींचकर मौसी बाडी पहुंचाया जहां विधिवत पूजा अर्चना के बाद पुनः प्रभु जगरनाथ,भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा को जगरनाथ मंदिर वापस लाया गया। मेला में काफी भीड थी। विधि व्यवस्था को लेकर एसडीपीओ मनीष चन्द्र लाल,इंस्पेक्टर एस एन मंडल व थानेदार मीनकेतन कुमार दल बल के साथ मुस्तैद थे।

पूजित अक्षत पत्रक का वितरण

घाघरा (आजाद सिपाही)। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्यों ने रविवार को अयोध्या से आए पूजित अक्षत पत्रक का वितरण घाघरा के कई टोलो और बालाखटनगा गांव में किया गया। इस क्रम में विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के संयोजक निखिल कुमार गुप्ता के नेतृत्व में घाघरा के ब्लॉक चौक पाकरटोली नेतरहाट रोड सहित अन्य कई टोला के घरों में में पूजित अक्षत पत्रक का वितरण किया गया। वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता खंड कारवाहक सुदर्शन महतो के नेतृत्व में बालाखटनगा गांव के कई घरों में पूजित अक्षत और पत्रक का वितरण किया गया। मौके पर निखिल कुमार गुप्ता ने कहा कि अयोध्या से आये अक्षत को घर-घर पहुंचाया गया साथ ही लोगों को पास के मंदिरों में आगामी 22 जनवरी को पूजन पाठ में शामिल होने का न्योता भी दिया गया है। ताकि अयोध्या में भगवान राम के हो रहे प्राण प्रतिष्ठा को ऐतिहासिक बनाया जा सके। सुदर्शन महतो ने कहा कि सबसे बड़ा उत्सव में से एक उत्सव है जब भगवान राम की भव्य मंदिर का निर्माण अयोध्या में किया गया है। आगामी 22 जनवरी को सभी लोग दिवाली के रूप में मनाए और अपने घरों के बाहर दिया जलाएं। मौके पर उपस्थित लोगों में विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के मंत्री अजय गुप्ता, अंशु गुप्ता, गौरव गुप्ता, सत्यम गोस्वामी, अमन कुमार गुप्ता, आलोक कुमार, अनिकेत यादव, बजरंग साहू, प्रिंस साहू सहित कई लोग उपस्थित थे।

गांजा तस्कर गिरफ्तार, भेजा गया जेल

बसिया (आजाद सिपाही)। पुलिस ने गांजा के कारोबार में संलिप्त बसिया थानांतर्गत कुम्हारी निवासी बबलू साहू को गिरफ्तार के गुमला जेल भेज दिया। प्राप्त जानकारी अनुसार गुप्त सूचना के आधार पर बसिया पुलिस ने थानाक्षेत्र के कलिगा पंचायत भवन के पास 800 ग्राम गांजा के साथ कुम्हारी निवासी बबलू साहु को शनिवार को पकड़ कर थाना ले आयी। गांजा के संबंध में बबलू साहु ने बताया कि कुम्हारी का अभिषेक गुप्ता उर्फ पांडा उर्फ चरका ने मुझे कामडारा थानांतर्गत ग्राम कराकेल निवासी तथा पालकोट थानांतर्गत नाथपुर निवासी बालचंद साहु को देने के लिए बोला था जिसके लिए मैं पंचायत भवन कलिगा के निकट खड़ा होकर दोनों का इंतजार कर रहा था। गांजा को पुलिस ने जप्त कर बबलू साहु को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

नये माध्यमिक शिक्षक संघ का गठन

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। स्थानीय मुंडल साय स्मृति भवन इनडोर स्टेडियम के प्रांगण में जिले के माध्यमिक शिक्षकों की एक बैठक का आयोजन किया गया। साथ ही नव माध्यमिक शिक्षक संघ का गठन किया गया। उक्त बैठक में शिक्षकों के विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की गई। शिक्षकों की समस्या पर बोलते हुए माध्यमिक शिक्षक जयंत कुमार पाण्डेय ने सभी शिक्षकों का स्वागत किया और उन्हें वर्तमान में जिले में माध्यमिक शिक्षकों के समक्ष समस्याओं से अवगत कराते हुए एक जुट होकर संगठित रहने का सुझाव दिया। नए माध्यमिक शिक्षक संघ में सर्व सम्मति से अध्यक्ष के रूप में विनीत कुमार नंद एवं सचिव के रूप में श्री जयन्त कुमार पाण्डेय का चयन किया गया। माध्यमिक शिक्षक संघ के नव चयनित पदाधिकारियों में अध्यक्ष के लिए विनीत कुमार नंद, सचिव के लिए जयन्त कुमार पाण्डेय उपाध्यक्ष पद पर अनुराग गुंजन एवं निशा रानी टोप्पो और सहसचिव सुधीर कुमार देवघरिया एवं कांता कुमारी को बनाया गया। प्रवक्ता का दायित्व दानीस अकरम, विजय नाग, अंबर प्रसाद एवं गौतम नारायण देवघरिया को सौंपा गया। वहीं जिला संयोजक फैजयाब आलम एवं सोनाली त्रिपाठी को बनाया गया। कोर कमेटी के सदस्य के रुप में सहदेव भगत, रजनीश कुमार सिंह, डेविड खलखो, सुप्रिया कुमारी, विक्की कुमार साहु एवं राशि लाल का चयन किया गया।

कार्यक्रम में जिले के 100 से भी अधिक माध्यमिक शिक्षक उपस्थित थे। सबों ने एक जुट रहकर आने वाले समय में माध्यमिक शिक्षक एवं शिक्षा क्षेत्र के विकास के लिए कार्य करने एवं शिक्षा के क्षेत्र में हर संभव प्रयास करने का शपथ ग्रहण किया अंत में फैजयाब आलम ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ सभा की समाप्ति की घोषणा की।

कार के टक्कर से पिता की मौत, पुत्री घायल

गुमला (आजाद सिपाही)। गुमला रांची नेशनल हाईवे स्थित खोरा भकुआ टोली के समीप एक अज्ञात कार के टक्कर से लाल पंडरिया सिसई निवासी संदीप उरांव और उसकी 6 वर्षीय पुत्री राधिका उरांव गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना में संदीप का पैर को कार बुरी तरह से कुचल दिया। वही उसकी बेटी को भी पैर में काफी चोट लगी। गस्ती पर निकले थाना प्रभारी की नजर सड़क किनारे पड़े दोनों घायलों पर पड़ी। विनोद कुमार दोनों घायलों को अपने वाहन से सदर अस्पताल भेजवाया। सदर अस्पताल में इलाज के उपरांत संदीप की गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टर ने उसे रिम्स रेफर कर दिया है। काफी खून बह जाने के कारण उसकी स्थिति चिंताजनक थी वही इलाज के क्रम में ही उसकी मौत हो गई।

मकर संक्रांति पर जतरा कार्यक्रम का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। मकर संक्रांति के अवसर पर रविवार को जतरा सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन गटवा परसा टोली कोयल नदी किनारे किया गया। जतरा सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ बदरी पंचायत के मुखिया फिरंगी उरांव व अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से पिता काटकर किया। इस क्रम में कलाकारों द्वारा नागपुरी ठेठ जैसे कई गीतों पर नृत्य व गीत की शानदार प्रस्तुती किया गया। इसके साथ ही जतरा में खिलौने मिठाइयां की दुकानें सजी जहां जतरा देखने आए लोगों ने खूब खरीदारी की और कार्यक्रम का जमकर लुफ्त उठाया वही कई लोगो ने नृत्य भी किया। मौके पर पंचायत के मुखिया फिरंगी उराव ने कहा कि मकर संक्रांति के अवसर पर हर साल की भांति इस साल भी जतरा सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। आप सभी लोग शांतिपूर्ण तरीके से कार्यक्रम का लुफ्त उठाएं जतरा लगने से आपसी मेल मिलाप बढ़ता है। मौके पर सुनील सिंह, शंकर गोप, अनुज महली, मेघनाथ सिंह, संजू गोप, अर्जुन मुंडा, पंकज गोप, सुबोध सिंह, श्याम गोप, रोहित उरांव सहित कई ग्रामीण महिला पुरूष उपस्थित थे।

राज्य स्तरीय वनभोज सह कार्यकर्ता सम्मेलन 21 को

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। अहीर सेना झारखण्ड की बैठक ढेढौली ग्राम में सुरेश गोप की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। अहीर सेना का वनभोज सह कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन जोलो नदी घाट, मुरकुंडा, गुमला में किये जाने पर सहमति बनी।बैठक में वनभोज की तैयारी पर चर्चा करते हुए कार्यक्रम के सचिव आनन्द गोप ने जानकारी दी कि वनभोज सह कार्यकर्त्ता सम्मेलन में पूरे झारखंड प्रदेश के 5000 से अधिक अहीर यादव बंधुओं का जुटान होने की संभावना है। स्थानीय कलाकारों के द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया जा रहा है। लखन गोप ने कहा कि अहीर सेना के द्वारा गुमला जिले के प्रत्येक परिवार से संपर्क कर आमंत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है। विनय गोप ने समाचार पत्र के माध्यम से सभी अहीर समाज के लोगों से निवेदन किया है कि 21 जनवरी को अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर अहीर एकता का प्रदर्शन करने की बात कही।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक घायल

सदर अस्पताल, गुमला

गुमला (आजाद सिपाही)। सदर थाना क्षेत्र अंतर्गत सेमर मोड के समीप अज्ञात वाहन के टक्कर से बाइक ने सवार अंबवा निवासी शिव लोहरा गंभीर रूप से घायल हो गया घटना के बाद स्थानीय लोगों की मदद से उसे सदर अस्पताल लाया गया जहां इलाज के उपरांत उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टर ने उसे रिम्स रांची रेफर कर दिया। घटना के बाद बताया जाता है कि युवक बर गांव में आयोजित नागपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम देखकर अपने घर बाइक से वापस लौट रहा था तभी सेमर मोड के समीप एक अज्ञात वाहन पीछे से टक्कर मार कर घटना स्थल से फरार हो गया वही उसके सिर व चेहरा में गंभीर चोट लगी है।

अंजुमन इस्लामिया के समानांतर चलेगा अंजुमन इस्लामिया ट्रस्टः खुर्शीद आलम

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। अंजुमन इस्लामिया के पदाधिकारियों की कार्यशैली से क्षुब्ध हो कर अंजुमन इस्लामिया के पुर्व सचिव खुर्शीद आलम ने समानांतर चलने वाली अंजुमन इस्लामिया ट्रस्ट का गठन किया है। इसकी सरपरस्ती मौजूदा अंजुमन के नाजिम ए आला को दी गई है। इस मामले में अधिवक्ता के आलम ने कहा कि अंजुमन इस्लामिया गुमला का आम चुनाव 19 जुलाई 2023 को संपन्न हुआ था जिसमें नाजिमे आला, अध्यक्ष और सचिव पद का निर्वाचन हुआ, अंजुमन संविधान के अनुसार चुनाव के सात दिनों के अंदर चुनाव प्रभारी द्वारा पंजीकृत मान्यता प्राप्त पंचायतों के सदस्यों से अंजुमन की कार्यकरिणी समिति का गठन किया जाना था जिस समिति में अंजुमन के बाकी पद उपाध्यक्ष , सहसचिव और प्रवक्ता का चयन किया जाता परंतु अंजुमन के अध्यक्ष/ सचिव अपने मनमानी तरीके से पॉकेट कमिटी बनाए रखने की नियत से अब सात माह होने पर भी चुनाव प्रभारी को कार्यकरिणी समिति का गठन करने में बाधित करते रहे। इस घटना को लेकर चुनाव कमिटी द्वारा मान्यता प्राप्त पंचायतों के द्वारा कई बार अंजुमन के अध्यक्ष सचिव को पत्राचार किया गया परंतु कोई कारवाई नही की गई। पंचायतो के द्वारा उपायुक्त महोदय को लिखा गया। अनुमंडल पदाधिकारी गुमला को लिखा गया तब अनुमंडल पदाधिकारी गुमला थाना प्रभारी गुमला को आदेश जारी किए कि अंजुमन की कार्यकरिणी समिति गठन की कार्यवाही को सुनिश्चित कराया जाए फिर भी अंजुमन के अध्यक्ष/ सचिव चुनाव प्रभारी को कार्यकरिणी समिति गठन का कार्यवाही नही करने दिए। विवश होकर चुनाव प्रभारी पुलिस अधीक्षक गुमला को पूरी घटना की जानकारी देते हुए प्रक्रिया से अलग हो गए। अंजुमन के सर्वोच्च पदाधिकारी नाजीमे आला हाजी खलील अशरफी के द्वारा अंजुमन के अध्यक्ष/ सचिव को नोटिस देकर संविधान के अनुसार कार्यकरिणी समिति गठन करने आदेश जारी किए पर उनके भी आदेश की अवहेलना की गई ।

इस मामले में मौजूदा सदर मुशाहिद आजमी पम्मू ने कहा कि मौजूदा अंजुमन अपने दायित्वों का बेहतर ढंग से निर्वाह कर रही है। कई पंचायतों में फाड़ देखा जा रहा है। फिल्हाल इस खाई को पाटने का काम किया जा रहा है। जल्द ही मजलिस ए आमला का गठन कर लिया जायेगा।

न मजहब की दीवार और न कोई भेदभाव

सेवा के लिए तत्पर रहती है मिशन बदलाव महिला टीम

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। मिशन बदलाव टीम की जिला सचिव सैयदा खातुन और नगर सचिब ज्योति वर्मा के नेतृत्व में कई मरीजों को रक्तदान किया जा चुका है।ये दोनौं की दोस्ती भी हिंदू मुस्लिम,सिख ईसाई की एकता की मिसाल के रूप में शहर में देखी जाती है।मिशन बदलाव महिला टीम में सभी धर्मों के मानने वाले लोग है। मिशन बदलाव टीम जिला सचिव सैयदा खातुन नगर अध्यक्ष ज्योति वर्मा और नगर सचिब ज्योति ग्लोइरिया और चन्दकला टोप्पो के सहयोग से महिलाओं के मुद्दे और उनकी समस्याओं को लेकर लगातार कार्य किया जा रहा है।जब कभी भी किसी को रक्तदान की जरूरत हो तो और किसी प्रकार के आकस्मिक जरूरत कहीं भी हो और महिलाओं के कोई भी समस्या तुरंत पूरी महिला टीम मरीजों के लिए रक्तदान से लेकर कोई भी समस्याओं के समाधान को लेकर और मानसिक सहयोग और सभी प्रकार के मदद तुरंत पहुचाने का कार्य करते है।अगर महिलाओं को पुरुषों के द्वारा मारपीट और शादीशुदा जिदंगी में लड़ाई झगड़े से लेकर किसी प्रकार की समस्याएं और जिसका समाधान कॉउंसलिंग से संभव हो तो परिवार और समाज के लोंगो के साथ बातचीत कर समस्या के समाधान की कोशिश की जाती है,मिशन बदलाव टीम के समक्ष जब सदर अस्पताल में एडमिट कोई भी मरीज की समस्या समूह में साझा होता है तो तुरंत किसी प्रकार के मदद के लिये आगे आते है। इसमें ये सभी नहीं देखा जाता कि मरीज का कौन जाति धर्म और समाज से है।

सड़क दुर्घटना में महिला की मौत

सिसई (आजाद सिपाही)। छारदा रोड में बीते 10 जनवरी को हुई सड़क दुर्घटना में शामिल जेएच 01 डीई 0629 यामाहा मोटरसाइकिल को सिसई पुलिस ने डाड़हा स्थित इंडियन होटल के कुछ दूरी से लावारिस हालत में रविवार को बरामद किया है। उक्त सड़क दुर्घटना में छारदा रोड निवासी गीता देवी की मौत हो गई थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार की दोपहर सड़क किनारे लावारिस हालत में बाइक को खड़ी देख इसकी सूचना स्थानीय लोगों ने पुलिस को दी। सूचना पर सिसई थाना के एएसआई अनवर अंसारी मौके पर पहुंचकर लावारिस हालत में क्षतिग्रस्त बाइक को जप्त कर थाना लाएं।

अलका लांबा से कांग्रेसी महिलाओं को काफी आशाएंः बाबी भगत

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। प्रदेश महिला कांग्रेस वरीय उपाध्यक्ष बॉबी भगत ने अखिल भारतीय महिला कॉन्ग्रेस अध्यक्ष अलका लांबा से मुलाकात कर उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए ढेरों बधाईयां और शुभकामनाएं दी।बॉबी भगत ने कहा कि अलका लांबा के आने से महिला कॉन्ग्रेस को एक नई ऊर्जा और मजबूती मिलेगी। इनके आने से देश भर की महिलाओं में नया उत्साह देखने को मिल रहा है।इनके नेतृत्व में आगामी 2024 का चुनाव बेहद दिलचस्प और फलदायक होनेवाला है और महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ेगी। बॉबी भगत ने आगे बताया कि अलका लांबा ने कहा है सभी भी महिलाओं के सम्मान और उनके हिस्से व हक की लड़ाई वे लड़ेंगी।पंचायत से लेकर सदन तक महिलाओं को उनका हक दिलाने के लिए हर प्रयास करेंगी।

श्रीमति भगत ने बताया कि आगामी 5 फरवरी को लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र में अलका लांबा का आगमन हो रहा है ।वो यहां एक जनसभा को संबोधित करेंगी और आगामी लोकसभा चुनाव का शंखनाद करेंगी।इस कार्यक्रम में प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर सहित प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर भी शामिल हो सकते हैं।

भाजपा नेताओं ने पलामू सांसद को ज्ञापन सौंपा, कोयल नदी पर पुल बनाने की मांग

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। मोहम्मदगंज- जपला-डेहरी मुख्य पथ के स्थानीय रविवारीय बाजार से होकर गुजरने वाले गवर्नर रोड में कोयल नदी पर पुल बनाने की मांग को लेकर भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य प्रफुल्ल कुमार सिंह, सांसद प्रतिनिधि अखिलेश मेहता, महेंद्र प्रसाद सिंह और रंजीत पासवान ने पलामू सांसद बीडी राम को ज्ञापन सौंपा है। जिसमें उन्होंने बताया है कि उक्त रोड में कोयल नदी पर पुल निर्माण जनहित में अतिआवश्यक है। पुल के बन जाने से गढवा, कांडी, भवनाथपुर होते हुए छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की 80 से 100 किमी दूरी कम हो जाएगी। साथ ही सोन नदी में श्रीनगर-पड्डुका पुल से सीधा जुड़ाव होने से बिहार राज्य के रोहतास जिले से इस क्षेत्र के लोगों को व्यापारिक लाभ मिलेगा। आवागमन सुलभ हो जाएगा। रोहतास और गढवा जिले के लोगों को मोहम्मदगंज रेलवे स्टेशन की सुविधा उपलब्ध होगी।

दंगवार मकर संक्रांति मेले का उद्घाटन

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। अनुमंडल क्षेत्र में मकरसंक्रांति के अवसर पर रविवार को क्षेत्रवासियों ने स्नान दान किया। इस वर्ष 14 और 15 जनवरी को मकरसंक्रांति मनाया जा रहा है। इस अवसर पर बाजार में चूड़ा, तिलकुट, गुड़ की बिक्री जोरों पर रही। शहर में दर्जनों जगह पर इसकी दुकानें लगी थी। स्थानीय लोगों ने देवरी व दंगवार सोननदी में स्नान कर पूजा अर्चना की। इसके बाद चुरा, तिलकुट दान कर प्रसाद ग्रहण किया। इस दौरान दंगवार व देवरी मेला में नौका बिहार का आनंद उठाया। वहीं, दंगवार में मकरसंक्रांति पर लगने वाले मेले का उद्घाटन भाजपा के वरिष्ठ नेता, मुखिया अमरेंद्र ठाकुर, बेल बीघा के पूर्व मुखिया रामलखन यादव, समिति के अध्यक्ष वकील सिंह आदि ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम का संचालन मेला समिति के सचिव मनोज कुमार गुप्ता ने किया। इस अवसर पर विनोद कुमार सिंह ने कहा कि दंगवार मेला समिति इस वर्ष भी मेला के शांतिपूर्ण संचालन में सक्रिय है। सीमावर्ती इस मेला में दर्जनों गांव के लोग पहुंचते है। कहा कि इस तरह के आयोजन से ग्रामीण सद्भावना में वृद्धि होती है। मौके पर समिति के उपाध्यक्ष विवेक गुप्ता, सचिव मनोज गुप्ता, उप सचिव राजकुमार मेहता, कोषाध्यक्ष संतलाल चौधरी, चंद्रमालेश्वर ठाकुर, हसन खलीफा, प्रमोद पासवान, मुखिया संघ अध्यक्ष, पूर्व मुखिया रामलखन यादव, मुखिया पति विमलेश पासवान, प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी मनोज कुमार, जयराम मेहता, दंगवार ओपी प्रभारी रविशंकर कुमार आदि मौजूद रहे।

अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा पर एनसीपी हुसैनाबाद में होगा कार्यक्रम

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। अयोध्या में रामलला के मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा और श्री राम जन्मभूमि मंदिर उद्घाटन की शुभ घड़ी आने में महज आठ दिनों का इंतजार है। इस पुनीत क्षण में हुसैनाबाद छठ पोखरा (जेपी चौक) पर भव्य दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। जिसमें 11 हजार दीए प्रज्वलित किए जाएंगे। साथ ही, सरयू का पवित्र जल अर्पण किया जाएगा। सरयू नदी से जल उठाने हुसैनाबाद अनुमंडल के तीनों प्रखंडों से गाजा बाजा के साथ एनसीपी कार्यकर्ताओं को अयोध्या के लिए रवाना किया गया। एनसीपी के मोहम्मदगंज प्रखंड अध्यक्ष रुद्र प्रताप सिंह, हैदरनगर प्रखंड अध्यक्ष संजय कुमार सिंह, हुसैनाबाद प्रखंड अध्यक्ष मनदीप राम और हुसैनाबाद नगर पंचायत की ओर से जय प्रकाश उपाध्याय एनसीपी परिवार के अन्य साथियों के साथ सरयू (अयोध्या) के लिए रविवार को रवाना हुए। वहां से वह सरयू का पवित्र जल लेकर मंगलवार 16 जनवरी को हुसैनाबाद लौटेंगे। 22 जनवरी को हुसैनाबाद छठ पोखरा (जेपी चौक) पर भव्य दीपोत्सव कार्यक्रम के पूर्व सरयू नदी का पवित्र जल विधायक कमलेश कुमार सिंह व प्रदेश संगठन महामंत्री विनय कुमार सिंह उर्फ बिनु बाबू, एनसीपी के प्रदेश प्रवक्ता सूर्या सिंह जनसमूह की उपस्थिति में छठ पोखरा में प्रवाहित करेंगे। इसके बाद दीप प्रज्वलन का कार्यक्रम होगा।

सनसनी : बहला-फुसला कर भगाने की दर्ज करायी थी प्राथमिकी

लापता नाबालिग का बरामद हुआ कंकाल, आरोपित प्रेमी गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। मनातू थाना पुलिस ने शनिवार को तरहसी थाना क्षेत्र के एक नाबालिक को बहला फुसलाकर भगाने के आरोपित को गिरफ्तार किया है। वहीं पूछताछ के क्रम में आरोपित के स्वीकारोक्ति बयान के आधार पर वंशी खुर्द स्थित टोला भेलौआटांड जंगल से लड़की का बिखरा हुआ कंकाल बरामद किया है। जानकारी के अनुसार इस मामले में मनातू थाना में वादिनी गुलाबी कुंवर पति स्व विजय चौधरी वंशी खुर्द पो पदुमा थाना मनातू के लिखित आवेदन के आधार पर पलामू जिले के ही तरहसी थाना क्षेत्र स्थित परसाई मंझौली ग्राम निवासी सतबीर कुमार उर्फ सत्यबीर कुमार (19) पिता नागेन्द्र महतो उर्फ सुशील की विरुद्ध पुत्री टुनी कुमारी (17) को बहला फुसलाकर शादी करने के नियत से भगा ले जाने के आरोप में मामला दर्ज किया गया था। इसमें बताया गया कि उनकी पुत्री टुनी कुमारी व सतबीर कुमार के बीच आपस में प्रेम प्रसंग था। विगत 26 सितंबर 2023 से उनकी पुत्री टुनी कुमारी कही चली गई। जब उनके द्वारा सतबीर कुमार से फोन पर पूछताछ करने पर बताया कि लड़की उसके पास है। लेकिन उसने लड़की से उसकी मां की बात नहीं कराई। बाद में यह कांड दर्ज कराया गया। इधर, शनिवार को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि कांड का प्राथमिक अभियुक्त सतबीर कुमार उर्फ सत्यबीर कुमार परसाई मंझौली थाना तरहसी स्थित अपने घर आया हुआ है। वरीय पदाधिकारी के निर्देशानुसार छापामारी दल का गठन कर आरोपित को विधिवत छापामारी कर गिरफ्तार किया गया। पूछताछ करने पर स्वीकारोक्ति ब्यान में उसके द्वारा बताया गया कि 26 सितंबर को ही ग्राम वंशी खुर्द स्थित टोला भेलौआटांड के जंगल में उसके द्वारा टुनी कुमारी की गला दबाकर हत्या कर दी थी। आरोपित की निशानदेही पर ग्राम वंशी खुर्द टोला भेलौआटांड के जंगल स्थित घटनास्थल से बिखरा हुआ कंकाल बरामद हुआ। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर रविवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। कांड में बरामद कंकाल को अन्त्य परीक्षण व अग्रेतर कार्रवाई के लिए एमआरएमूसीएस भेजा जा रहा है। पुलिस ने मौके से कंकाल सहित एक सफेद रंग का सूट व अन्य सामान बरामद किए है।

हत्या के आरोप में पकड़ा गया आरोपित प्रेमी।

छापामारी दल में एसडीपीओ आलोक कुमार टुटी, थाना प्रभारी कमलेश कुमार, पुअनि पंकज कुमार, जितेन्द्र मिश्र, श्रवण दास सहित सशस्त्र बल शामिल थे।

भारत 2047 तक बन जायेगा पूर्ण विकसित और आत्मनिर्भर देश : रामचंद्र चंद्रवंशी

विश्रामपुर नगर परिषद में विकसित भारत संकल्प यात्रा की हुई शुरुआत

आजाद सिपाही संवाददाता

विश्रामपुर/पलामू। विश्रामपुर नगर परिषद में रविवार को भारत संकल्प यात्रा की शुरूआत की गई। इस अवसर पर विश्रामपुर थाना चौक और रेहला महावीर चौक पर कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व मंत्री सह विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार की अगुआई में देश विकास की राह पर तेज गति से अग्रसर है। वर्ष 2047 तक भारत पूर्ण विकसित और आत्मनिर्भर देश बन जायेगा। इस लक्ष्य को साकार करने में आम लोग भी मोदी सरकार का सहयोग करें। विधायक ने कार्यक्रम में शामिल लोगों को विकसित भारत संकल्प की शपथ दिलवायी। जिसमें भारत को विकसित और आत्मनिर्भर बनाने, गुलामी की मानसिकता को जड़ से उखाड़ फेंकने, भारत की एकता को सुदृढ़ करने, देश की रक्षा करने वाले का सम्मान करने और नागरिक होने का कर्तव्य निभाना शामिल था। इस दौरान संकल्प यात्रा का कैलेंडर भी लोगों के बीच वितरित किया गया। मौके पर कार्यपालक पदाधिकारी दानिश हुसैन, विधायक के जिला प्रतिनिधि रामचंद्र यादव, सांसद प्रतिनिधि अनुज पांडेय, विधायक प्रतिनिधि राजन पांडेय, नप अध्यक्ष प्रतिनिधि नईमुदीन अंसारी, सिटी मिशन मैनेजर जितेंद्र सिंह, नगर प्रबंधक सुभाष हेंब्रम, प्रभात कुमार, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष बबन राम, समाजसेवी विजय कुमार रवि, निवर्तमान वार्ड पार्षद सुनील कुमार चौधरी, नजमुद्दीन नूरी, दिनेश शुक्ला, ज्योति देवी, अजय रवि, आशीष कुमार, विवेक कुमार शुक्ला, फूल देवी, रमेश कुमार आदि मौजूद थे।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी)
दीनदयाल अन्त्योदय योजना

जब तक वैश्य समाज संगठित नहीं होता, तब तक राजनीति में नहीं मिलेगी उचित भागीदारी: ज्ञान शंकर

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन झारखंड की पहली प्रदेश कार्य समिति की बैठक दिगंबर जैन धर्मशाला में संपन्न हुई। जिसमें राज्य भर के 24 जिलों के प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक में नवनिर्वाचित पदाधिकारी को परिचय के साथ बैठक की शुरूआत हुई। इसके बाद सभी जिलों के पदाधिकारी ने संगठन की मजबूती पर बल देते हुए अति शीघ्र सभी जिलों की कमेटी गठित कर प्रदेश को सौंपने की बात कही साथ ही सभी पदाधिकारी ने वैश्य समाज को उचित प्रतिनिधित्व सहित कई समस्याओं से अवगत कराया। ओबीसी के 27 फीसदी आरक्षण, सहित राज्य में ओबीसी वर्ग पर हो रहे अत्याचार पर विस्तृत रूप से चर्चा हुई। बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष ज्ञान शंकर ने कहा 52 फीसदी आबादी होने के बावजूद वैश्य समाज को राजनीति में उचित भागीदारी नहीं मिल पाई है जो दुर्भाग्यपूर्ण है। इसके लिए वैस वैश्य समाज को संगठित होना होगा। अब समय आ गया है सभी उपजाति को एक मंच पर आकर अपना अधिकार छीन कर लेना पड़ेगा। बैठक में आगामी 25 फरवरी को रांची में विशाल जनसभा करने की घोषणा की गई, जो रांची में अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के बैनर तले आयोजित की जाएगी। जिसमें राष्ट्रीय स्तर के वैश्य समाज के नेता शामिल होंगे। सभी नवनियुक्त पदाधिकारी को सर्टिफिकेट दिया गया। मंच संचालन प्रदेश महामंत्री संजय चौधरी व धन्यवाद ज्ञापन रांची जिला अध्यक्ष संजय पोद्दार ने किया।

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन
झारखण्ड प्रदेश

महत्वपूर्ण न्यूज

बसपा नेता अभिमन्यु सिंह ने जरूरतमंदों में बांटे कंबल

उंटारी रोड/पलामू (आजाद सिपाही)। मौसम का मिजाज बदलते ही सितलहरी चालू हो गयी है। कुहासा का भी जोरदार असर देखने को मिल रहा है। इसी ठंड को देखते हुए बसपा से विश्रामपुर विधानसभा के भावी उमीदवार अंजू सिंह पति अभिमन्यु सिंह उर्फ बबलू सिंह की ओर से उंटारी रोड प्रखंड के मुरमा कला पंचायत द्वारपार गांव में स्व. ठाकुर भोला सिंह की तस्वीर पर माल्यार्पण करने के बाद मुरमा कला पंचायत के द्वारपार, सेमरी, लकडही, मुरमा कला केवाल में हजारों लोगों के बीच कंबल वितरित किया गया। बबलू सिंह ने कहा कि आज गरीब दलित परिवार को देखने वाला कोई नहीं है। सब अपनी-अपनी रोटी सेंकने में व्यस्थ हैं। केवल गरीबों को बहलया फुसलाया जा रहा है। कहा कि इस क्षेत्र की जनता ने अगर सेवा करने का मौका दिया तो सबसे पहले घुसखोरी पर लगाम लगाउंगा। गरीब, असहाय, दलित लोगों के हर दुख सुख में साथ रहूंगा। कहा कि कंबल वितरण आगे भी जारी रहेगा। इस कड़ाके की ठंड में ठंड की वजह से किसी की जान नहीं जाएगी। मौके पर नरेंद्र कुमार सिंह, विकास सिंह, मंटू सिंह, मिथिलेश पासवान आदि मौजूद थे।

भाजयुमो की विस स्तरीय बैठक में युवाओं से सीधा संवाद स्थापित करने पर हुई चर्चा

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। भाजपा मोर्चा के विधानसभा स्तरीय बैठक विश्रामपुर नावाडीह कला स्थित आरसीआइटी के सभागार में हुई। जिसकी शुरूआत पंडित दीनदयाल उपाध्याय और श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि करने के साथ हुई। बैठक की अध्यक्षता भाजयुमो के जिला महामंत्री विपुल गुप्ता व संचालन विश्रामपुर ग्रामीण मंडल अध्यक्ष अनुज कुमार चौधरी ने किया। बैठक में 25 जनवरी को प्रस्तावित विस स्तरीय नव मतदाता सम्मेलन की सफलता पर चर्चा की गई। इसके अलावा युवाओं से सीधा संवाद स्थापित करने का भी निर्णय लिया गया। बैठक के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जिला प्रभारी मुन्ना तिवारी ने कहा कि भाजयुमो कार्यकर्ता विस क्षेत्र के युवाओं के बीच जाकर मोदी सरकार की उपलब्धियां बताएं। युवाओं और नव मतदाताओं को संगठन से जोड़ने का प्रयास करें। विपुल गुप्ता ने कहा कि युवा मोर्चा ही भाजपा का ब्रांड एंबेसडर है। कार्यकर्ता शिक्षण संस्थान संपर्क और डोर टू डोर संपर्क करते हुए नव मतदाता सूची बनाकर सम्मेलन को सफल बनाने में अपनी भूमिका निभाएं। अंत में जनक शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मौके पर संजय ठाकुर, महेंद्र प्रसाद, गोपाल सोनी, विकाश चंद्रवंशी, कृष्णा प्रसाद, अखिलेश रजवार, राजू शर्मा, शशिकांत सिंह, पंकज सिंह आदि शामिल हुए।

मकर संक्रांति पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

नीलांबर पितांबरपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। प्रखंड के महावीर मोड़ स्थित लुड़ीदह शिव धाम के समीप मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर भोजपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ पूर्व विधायक देवेंद्र सिंह ने किया। बतातें चलें कि विगत कई वर्षों से लगातार आयोजित होने वाले इस मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। जिसमें मशहूर बाल कलाकार आर्यन बाबू एवं ज्योति माही द्वारा एक से बढ़कर एक गीत प्रस्तुत किया गया। पूर्व विधायक देवेंद्र सिंह ने कहा कि मेले में लोग एक दूसरे से मिलने दूर-दूर से आते हैं। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आनंद मिलता है। उन्होंने लोगो से आग्रह किया की सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद शांति तरीके से लें। कार्यक्रम की अध्यक्षता आयोजन समिति के अध्यक्ष अनूप जायसवाल ने की। मौके पर कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष सुरेंद्र शुक्ला, अनुपम सिंह, हरतुआ मुखिया अरविंद शुक्ला, कृष्ण पासवान, प्रमोद सिंह, अजीत सिंह आदि थे।

संत मरियम स्कूल के रोशन ने बढ़ाया झारखंड का मान

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। संत मरियम के चेयरमैन अविनाश देव ने स्कूल के विद्यार्थियों के समक्ष रोशन कुमार को सम्मानित किया। राजस्थान के जयपुर में आयोजित 24वां स्काय चैंपियनशिप में झारखंड का प्रतिनिधित्व करते हुए रोशन कुमार ने अंडर-14 में भाग लिए। जहां गोवा और आसाम के खिलाड़ियों को पराजित करते हुए कांस्य पदक जीता। इसके बाद रोशन कुमार का चयन इंडियन ओलंपिक द्वारा आयोजित 38 वां नेशनल खेल में हुआ। मौके पर स्कूल के चेयरमैन अविनाश देव ने कहा कि संत मरियम स्कूल में शिक्षा,संस्कार और खेल में विशेष ध्यान दिया जाता है तभी तो यहां के विद्यार्थियों हर क्षेत्र में अवल आ रहे हैं। मौके पर स्कूल के शारीरिक शिक्षक सुमित बर्मन मौजूद थे।

मौर्या फॉर्म हाउस में विधायक ने मनाया मकर संक्रांति

लेस्लीगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। पांकी विधानसभा के नीलाम्बर पिताम्बरपुर में विधायक डॉ कुशवाहा शशिभूषण मेहता के मौर्या फॉर्म हाउस में मक्कर संक्रांति पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें भाजपा कार्यकर्ता एवं विधायक समर्थक पंचायत प्रतिनिधि सहित सैकड़ों लोग ने दही चूड़ा तिलकुट का लुत्फ उठाया। विधायक डॉ शशिभूषण मेहता ने कहा कि मक्कर संक्रांति भारत के प्रमुख पर्व में से एक है। मक्कर संक्रांति पूरे भारत और नेपाल में भिन्न रूपों में मनाया जाता है। पौष मास में जिस दिन सूर्य मक्कर राशि में प्रवेश करता है उस दिन इस पर्व को मनाया जाता है। वर्तमान शताब्दी में यह त्योहार जनवरी माह के चौदहवे या पंद्रहवें दिन ही पड़ता है। इस दिन सूर्य धनु राशि को छोड़ मक्कर राशि में प्रवेश करता है। मौके पर जिला प्रतिनिधि प्रकाश मेहता, प्रोफेसर बचन ठाकुर, भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष संजय चंद्रवंशी,लाला प्रसाद यादव, दिलीप पांडे, भोलानाथ साव, जिला परिषद सदस्य सुधा कुमारी, रंजय ठाकुर, कमेश यादव, अजित प्रसाद गुप्ता, मंदीप मेहता आदि उपस्थित थे।

स्पोर्ट्स

सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी को कुआलालंपुर में आयोजित मलेशिया ओपन के फाइनल में हार का सामना करना पड़ा है। रविवार को खेले गए मुकाबले में चीन के वांग-लियांग की जोड़ी ने तीन घंटे चले मुकाबला में हरा दिया।

फाइनल में चीन के वांग-लियांग की जोड़ी ने 9-21,21-18,21-17 के अंतर से हराया

सात्विक-चिराग मलेशिया ओपन बैडमिंटन का फाइनल हारे, टूर्नामेंट का सिल्वर जीतने वाले बने पहले भारतीय

कुआलालंपुर (एजेंसी)। सात्विकसाईराज रेंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी को मलेशिया ओपन के फाइनल में हार का सामना करना पड़ गया। तीन गेम चले फाइनल में दोनों को चीन के वांग-लियांग की जोड़ी ने 9-21, 21-18, 21-17 के अंतर से हरा दिया। सात्विक-चिराग को सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा लेकिन वे मलेशिया ओपन में सिल्वर मेडल जीतने वाली भी पहली ही भारतीय जोड़ी बनी। उनसे पहले कोई भी भारतीय किसी कैटेगरी के फाइनल तक भी नहीं पहुंच सका था।

पहला गेम आसानी से जीता

सात्विक-चिराग ने मेंस डबल्स कैटेगरी के फाइनल मुकाबले का पहला गेम असानी से जीता। भारतीय जोड़ी ने चीन के वांग-लियांग को 21-9 से एकतरफा अंदाज में हराया। फिर दूसरे गेम में चाइनीज जोड़ी ने वापसी की। इस गेम को भारतीय जोड़ी को 18-21 से हार झेलनी पड़ी। अब मैच स्कोर 1-1 था। तीसरे गेम में सात्विक-चिराग ने एक समय 7-2 से बढ़त हासिल कर ली थी, लेकिन चाइनीज जोड़ी ने वापसी की और स्कोर 16-14 से अपने पक्ष में कर लिया। चाइनीज जोड़ी ने अपनी बढ़त बरकरार रखी और 21-17 के अंतर से तीसरा गेम जीतकर गोल्ड अपने नाम कर लिया। बतातें चलें कि सात्विक और चिराग का मैच पहली बार तीसरे गेम तक गया। इससे पहले 4 मैच दोनों ने सीधे गेम में जीत लिए थे। फाइनल में पहला गेम जीतने के बाद लगा कि दोनों आसानी से दूसरा गेम भी जीत लेंगे, लेकिन दूसरा गेम 3 पॉइंट के अंतर से गंवाने के बाद दोनों ने तीसरा गेम 4 पॉइंट के अंतर से गंवा दिया। गौरतलब हो कि मलेशिया ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट 1937 से खेला जा रहा है। टूर्नामेंट के रिजल्ट पेरिस ओलिंपिक 2024 के लिए शटलरों को क्वालिफाइंग रैंकिंग पॉइंट्स देंगे। बैडमिंटन के लिए क्वालिफिकेशन विंडो पिछले साल एक मई को शुरू हुई थी। मलेशिया ओपन में अब तक किसी भारतीय ने खिताब नहीं जीता है।

न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को 21 रनों से हराया

हेमिल्टन (एजेंसी)। न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को दूसरे टी-20 में 21 रन से हरा दिया। हेमिल्टन के सेडन पार्क स्टेडियम में न्यूजीलैंड ने पहले बैटिंग की। टीम ने 8 विकेट पर 194 रन बनाए। पाकिस्तान की टीम 19.3 ओवर में 173 रन ही बना सकी। न्यूजीलैंड से ओपनर फिन एलन ने 41 बॉल पर 74 रन की विस्फोटक पारी खेली। वहीं पाकिस्तान से बाबर आजम और फखर जमान ने फिफ्टी लगाई लेकिन दोनों अपनी टीम को जिता नहीं सके। दूसरे टी-20 में जीत के साथ न्यूजीलैंड ने 5 मैचों की सीरीज में 2-0 की बढ़त बना ली है। तीसरा टी-20 मैच 17 को डुनेडिन में खेला जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों को धता बता भाटडीह ओपी क्षेत्र में खुलेआम बिक रही महुआ और विदेशी शराब, चल रही है मुर्गो की लड़ाई

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा। सुप्रीम कोर्ट के प्रतिबंध को धता बताते हुए मकर संक्रांति पर बाघमारा प्रखंड के महुदा स्थित भाटडीह ओपी थाना क्षेत्र से चंद कदमों की दूरी पर मुरलीडीह में शनिवार व रविवार को लगातार सुबह से शाम छह बजे तक बड़े पैमाने पर अवैध मुर्गो की लड़ाई का आयोजन किया गया। लोगों की मानें तो पुलिस व स्थानीय छूटभईया नेताओं के शह पर इतना बड़ा कार्यक्रम आयोजित हुआ था। अखाड़े में पारंपरिक मुर्गा लड़ाई के नाम पर खुलेआम जुआ, सट्टेबाजी और अवैध विदेशी-महुआ शराब की बिक्री की जा रही थी। इस आयोजन में सैकड़ों युवाओं की भीड़ शामिल हुई। जिसमें 90 फीसदी युवाओं ने मुर्गा लड़ाई में भाग लिया और अखाड़े में बिक रही अवैध शराबों का सेवन कर नशे में धुत होकर जहां-तहां पड़े दिखे। एक युवक तो नशे में ऐसा धूत था कि ठीक से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। बाद में वह पुल से नीचे जा गिरा और घायल हो गया। वहीं आयोजन में आये सभी लोगों से आयोजनकर्ताओं ने बाइक पार्किंग के नाम पर भी मोटी रकम की अवैध वसूली की। इस दौरान नाबालिक बच्चो द्वारा अखाड़े में महुआ शराब की बिक्री की जा रही थी। बावजूद इसके भाटडीह ओपी प्रभारी शनिवार से रविवार तक हुए इस अवैध आयोजन में तमाशीन बने देखते रहे। कोई कार्रवाई करने की जहमत नहीं उठाई। इससे उनकी कार्यशैली पर प्रश्न चिन्ह खड़े करते हैं। सूत्र बताते हैं कि ये सभी आयोजन की हरी झंडी उनके इशारे पर ही मिली हैं। तभी तो अवैध शराबो की बिक्री और मुर्गा अखाड़ा उनके क्षेत्र से चंद कदमों की दूरी पर संचालित हुआ है और पुलिस प्रशासन मुकदर्शक बनी सब कुछ देखती रही। इस आयोजन को लेकर कुछ बुद्धिजीवी व समाज सुधारकों का कहना हैं कि इस तरह के आयोजन से क्षेत्र के युवा पीढ़ियों में बुरा प्रभाव ही नहीं पड़ रहा, बल्कि उनका भविष्य भई अंधकार में जा रहा हैं।

नाबालिग बच्चे बेच रहे महुआ शराब

बताते चले कि मुर्गो को एक-दूसरे से लड़ने के लिए खड़ा करना न केवल क्रूर है, बल्कि गैरकानूनी और सार्वजनिक उपद्रव भी है। इसको लेकर भारत में, पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 पीसीए अधिनियम के तहत सभी जानवरों को सुरक्षा प्रदान की जाती है। कानून में इस प्रावधान के अलावा, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय पशु कल्याण बोर्ड एडब्ल्यूबीआई और राज्य सरकारों को पांच स्वतंत्रताओं को बनाए रखने के लिए जानवरों की सुरक्षा बढ़ाने का भी निर्देश दिया है। बावजूद भाटडीह पुलिस ओपी क्षेत्र में ये रुकने का नाम नहीं ले रहा।

इस तरह मुर्गो को लड़ने के लिए करते हैं तैयार

प्रत्येक पक्षी-प्रतियोगी के एक पैर पर तीन से चार इंच ब्लेड वाला एक धारदार चाकू बांधा जाता है। उन्हें अपने विरोधियों से लड़ने और उन्हें मारने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। द्वंद्व तब समाप्त होता है जब दूसरे पक्षी द्वारा घातक रूप से घायल होने के कारण एक का खून बहकर मर जाता है। तब तक दूसरा भी गंभीर रूप से घायल हो जाता है। पशु कार्यकर्ताओं को स्वाभाविक रूप से लगता है कि यह एक मध्ययुगीन खूनी खेल है जिसे रोका जाना चाहिए, लेकिन जुआरी ***परंपरा*** का लगातार इजाफा होना स्थानीय पुलिस प्रशासन की बड़ी लापरवाही बताई जा रही हैं।

गिरिडीह सांसद और गोमिया विधायक ने केंद्रीय पर्यटन मंत्री को पत्र भेजकर की मांग

तेनुघाट डैम को इको टूरिज्म के रूप में विकसित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दें केंद्रीय पर्यटन मंत्री: चंद्र प्रकाश

आजाद सिपाही संवाददाता

बेरमो। गिरिडीह सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी एवं गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो ने केंद्रीय पर्यटन मंत्री जी किशन रेड्डी से तेनुघाट डैम को इको-टूरिज्म के लिए करीब 10 करोड़ रुपये के भेजे गये प्रशासनिक प्रस्ताव को मंजूरी देने की मांग की है। सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी एवं विधायक डॉ लंबोदर महतो ने संयुक्त रूप से केंद्रीय पर्यटन मंत्री को इसको लेकर प्रेषित पत्र में कहा है कि स्वदेश दर्शन 2.0 योजना के अंतर्गत इको-टूरिज्म कैटगरी के लिए करीब 10 करोड़ का प्रस्ताव भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय को प्रशासनिक मंजूरी के लिए भेजा जा चुका है। यह प्रस्ताव राज्य के पर्यटन निदेशक ने विगत पांच जनवरी को भेजा है। केंद्रीय पर्यटन मंत्री इस प्रस्ताव पर शीघ्र स्वीकृति प्रदान करें। उल्लेखनीय है कि गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो एशिया महादेश का सबसे बड़ा तेनुघाट डैम को पतरातू डैम की भांति पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की आवाज को जहां सदन में जोरदार तरीके से उठाये वहीं सदन के बाहर भी मुखर बने रहें। यही नहीं राजभवन जाकर राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मिलकर भी तेनुघाट डैम में पर्यटन की असीम संभावनाओं से उन्हें अवगत कराते हुए उनसे भी तेनुघाट डैम को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने को लेकर राज्य सरकार को आवश्यक निर्देश देने का आग्रह किया था।

गोल्फ ग्राउंड में 17 को सामूहिक विवाह, 101 जोड़े लेंगे सात फेरे

सर्वधर्म सामूहिक विवाह समिति ने उठाया बीड़ा, तैयारी को अंतिम रूप देने को लेकर बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। सर्व धर्म सामुहिक विवाह समिति के सदस्य एवं महिला विंग की सदस्यों ने 17 जनवरी को 101 जोड़े के सामूहिक विवाह की तैयारी को अंतिम रूप देने के लिए रविवार को बैठक की। जिसमें समिति के अध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि सामूहिक विवाह में किसी भी प्रकार की कोई कमी न हो इसे लेकर सर्व धर्म सामूहिक विवाह समिति के सभी सदस्यों के साथ बैठक कर उनके दायित्व संभालने को लेकर चर्चा की गई। अध्यक्ष प्रदीप सिंह ने धनबाद के सभी संस्थाओं के सदस्यों से आग्रह किया है वह इस विवाह में सादर आमंत्रित हैं। उन्होंने कहा कि बारात एवं शरात के लिए लगभग दस हजार लोगों के खाने की व्यवस्था की तैयारी की जा रही है। जय माल के लिए लगभग 200/30 का मंच धनबाद के मशहूर टेंट श्याम डेकोरेटर्स द्वारा तैयार की जा रही है। लगभग 10 हजार कुर्सी लगाएं जा रहे हैं। विवाह से संबंधित कार्य गायत्री परिवार की ओर से किया जा रहा हैं। मुस्लिम निकाह की व्यवस्था जामा मस्जिद पुरानी बाजार द्वारा की जा रही है। मंच पर दुल्हन और दुल्हे को तैयार करने से लेकर उनके जयमाल की जिम्मेदारी महिला विंग के सदस्यों द्वारा किए जाएंगे। वहीं शादी के जोड़ों को विवाह के उपरांत घर बसाने की जरूरत की सामग्री दी जाएगी। बारात निकालने की जिम्मेदारी पुरानी बाजार के नव जवान समिति को दिया गया हैं। बैठक में सामूहिक विवाह समिति के सभी पदाधिकारी महोदय एवं सदस्यों के अलावा महिला विंग की सभी सदस्य उपस्थित थे।

फरार आरोपी गिरफ्तार, भेजा गया जेल

कतरास (आजाद सिपाही)। जोगता पुलिस ने रविवार को कांड संख्या 30/23 में फरार चल रहे आरोपी मोहम्मद अमजद और विक्की सिंह को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की। दोनों आरोपितों को जेल भेज दिया। बतातें चलें कि जोगता थाना क्षेत्र अंतर्गत सिजुआ 10 नंबर मोड़ साइडिंग के नजदीक अवैध कोयला कारोबार में वर्चस्व को लेकर विगत 10 सितंबर को जमकर मारपीट हुई थी। इस दौरान अवैध कोयला कारोबार से जुड़े तस्करों ने अंधाधुंध फायरिंग की थी। जिसमें स्थानीय युवक साहिल खान की गोली लगने से मौत हो गई थी। वहीं अन्य दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए थे। घटना के बाद मृतक की मां ने जोगता पुलिस को लिखित शिकायत देकर मोहम्मद अमजद और बिक्की सिंह पर अपने बेटे को गोली मारकर हत्या करने का आरोप लगाया था।

झरिया विधायक ने पटना साहिब यात्रियों के जत्थे को बस से किया रवाना

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। झरिया विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह ने 14 जनवरी को अपने खर्चे पर पटना साहिब के लिए धनबाद से तीर्थ यात्रियों के जत्थे को बस से रवाना किया। जत्थे में 40 तीर्थ यात्री पटना साहिब प्रकाश पर्व में शामिल होने जा रहे है। इस बाबत पूर्णिमा नीरज सिंह ने बताया कि विगत दिनों सिख समुदाय के कुछ प्रतिनिधि ने मुलाकात कर तीर्थ यात्रियों को 17 जनवरी को गुरु गोबिंद सिंह के 357 वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में उनके जन्म स्थान और सिखों के पांच तख्तों में से तख्त श्री हरमंदिर साहिब पटना जाने व आने के लिए निजी अथवा सरकारी मदद पहुंचाने का आग्रह किया था। इस संदर्भ में आज हमने खुद के खर्चे पर तीर्थ यात्रियों के लिए बस की व्यवस्था प्रदान की और पटना साहिब के लिए सिख समुदाय के जत्थे को रवाना किया। उन्होंने कहा कि सरकारी व्यवस्था में काफी समय लग सकता था। समय के अभाव को देखते हुए हमने यह सुविधा प्रदान किया। कहा कि संगत की सेवा का अवसर पाना सौभाग्य की बात है। वहीं विधायक द्वारा किये गए इस कार्य की सिख संगत ने सराहना की और धनबाद उनके आवास पहुंच कर उनका आभार व्यक्त किया। इस मौके पर संगत में सुखविंदर सिंह, हरेंद्र सिंह, गुरुचरण सिंह, सत्ती सिंह, संतोख कौर, गुरप्रीत कौर, हरभजन कौर, हरजीत कौर, बेबी कौर, सेली कौर और सुखी कौर मौजूद थे।

मकर संक्रांति पर जलेश्वर महतो ने दिया दही-चूड़ा खाने का न्योता

धनबाद की जनता भारत जोड़ो न्याय यात्रा को बनायेगी ऐतिहासिक: जलेश्वर महतो

दिया स्थानीय को उम्मीदवार बनाने पर पार्टी की ओर से विचार किए जाने का संकेत

आजाद सिपाही संवाददाता

महुदा। पूर्व मंत्री सह प्रदेश कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष जलेश्वर महतो ने मकर संक्रांति पर्व पर रविवार को स्थानीय पत्रकारों सहित अपने सभी कार्यकर्ताओं को कार्यक्रम आयोजित कर दही-चुड़ा खाने का निमंत्रण दिया। वहीं लोगों के साथ मिलकर दही चुड़ा, तिलकुट भी खाया। इस दौरान जलेश्वर महतो ने सभी को नव वर्ष और मकर संक्रांति की शुभकामना दी। अपने सभी कार्यकर्ताओं के वाहनों में भारत जोड़ो न्याय यात्रा का स्टीकर अपने हांथो से लगाया। इस क्रम में उन्होंनें राहुल गंधी के नेतृत्व में आयोजित भारत जोड़ो न्याय यात्रा के आरंभ होने और राज्य में धनबाद-कपुरिया होते बोकारो जाने पर सभी लोगों से अपील करते हुए लाखों की संख्या में समर्थन देकर ऐतिहासिक बनाने की अपील की। उन्होंने कार्यकर्ताओं को रैली के स्टीकर देकर विदा किया। कहा कि कांग्रेस द्वारा आयोजित भारत जोड़ो न्याय यात्रा रूपी रैली न्याय का हक मिलने तक जारी रहेगा। मकर संक्रांति पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में आगामी लोक सभा चुनाव के मद्देनजर राजनैतिक सुगबुगाहट देखी गयी। रवि महतो स्मारक उच्च विद्यालय में आयोजित मकर संक्रांति पर्व के अवसर पर चुड़ा-दही व तिलकूट भोज कार्यक्रम में जलेश्वर महतो ने भगवान सूर्य के उत्तरायण होने पर शुभकारी समय बताते हुए क्षेत्र के सभी लोगों की मंगल कामना की। इस बीच धनबाद लोकसभा सीट से लड़ने की अपनी नयी राजनैतिक यात्रा के भी खुले संकेत दे गये। कहा कि कांग्रेस इकाई इस बार धनबाद सीट के लिये स्थानीय उम्मीदवारी पर विचार कर रही है, उम्मीद है निर्णय अनुकूल होगा। धनबाद लोक सभा सीट पर वर्ष 1952 से लेकर आज तक कोई भी स्थानीय सांसद नहीं बना है। कहा कि पार्टी इस बार जन भावनाओं के अनुकूल गंभीरता से विचार कर रही है। वो धनबाद से चुनाव लड़ने को तैयार है।

महत्वपूर्ण न्यूज

कुमार अमित ने घर-घर जाकर किया अयोध्या से आये अक्षत का वितरण

बोकारो (आजाद सिपाही)। भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कुमार अमित ने बोकारो के सेक्टर-तीन में घर-घर जाकर लोगों के बीच अयोध्या से आए पूजित अक्षत और निमंत्रण का वितरण किया। इस अवसर पर कुमार अमित ने लोगों से आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में भव्य श्री राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के दिन हर घर में दीया जलाकर दीपावली मनाने और प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या जाकर रामलला का दर्शन करने का भी आग्रह किया। कुमार अमित ने लोगों से कहा कि अयोध्या का भव्य राम मंदिर देश के धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्र के साथ-साथ समाजिक सद्भाव और समरसता का भी केंद्र होगा। वहां प्राण प्रतिष्ठा होने से देश में सामाजिक समरसता और सद्भाव बढ़ेगा। यह देश के लिए ऐतिहासिक दिन है। देश वासियों के 500 वर्ष की तपस्या इस प्राण प्रतिष्ठा से पूर्ण होने जा रहा है। अक्षत वितरण में रतन महतो, अतुल सिंह, हरिओम, कुमार राहुल, अनील कुमार, राजीव सिंह, विशाल गौतम, कालीकांत तिवारी, मुकुंद मिश्रा अमन, रीशु, निमाई, रोहीत आदि थे।

हर घर राममयी दिखे, घर-घर मने दीपावली: राजीव

धनसार (आजाद सिपाही)। अयोध्या स्थित मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के मंदिर से पूजित अक्षत व आमंत्रण पत्र का वितरण धनसार नगर के बस्ताकोला के विभिन्न क्षेत्रों में किया गया। जिसका नेतृत्व बस्ताकोला मंडल के उपाध्यक्ष रामदेव शर्मा ने किया। इस दौरान मंडल अध्यक्ष संतोष शर्मा, बप्पी बाउरी, प्रतिमा गिरी, सरिता सिंह, रंजीत दास, चिंटु शर्मा आदि उपस्थित थे। इधर, मांझी बस्ती एवं ऐना कोलियरी में भी अक्षत व निमंत्रण बांटा गया। मुख्य रूप से आरएसएस के सह प्रांत प्रचारक राजीव कांत उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि राम मंदिर भारतीयों के लिए गौरव का क्षण है। 22 जनवरी को प्रत्येक घर में दिवाली की तरह सजनी चाहिए। हर गली की मंदिर दीप प्रज्ज्वलित करना है। घरों को राम-राम का चित्र लगाना है। इस दौरान संजय तिवारी, बप्पी बाउरी, मनोज आर्य, राहुल कुमार, मोनू कुमार थे।

मकर संक्रांति पर दो दिवसीय तुलादान का आयोजन

धनसार (आजाद सिपाही)। मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर बस्ताकोला गोशाला में दो दिवसीय तुलादान का आयोजन किया गया। मान्यता है कि शरीर के बराबर वजन के खाद्य सामग्री गौ माता को दान करने से सभी कष्टों का निवारण होता है। तुलादान में गोशाला परिसर में 40 भक्तों ने तुलादान किया। तुलादान में गुड़, चोकर,मूंग, कोटा हरा चारा दान करते हैं। दूसरे दिन सोमवार को भी तुला दान का कार्यक्रम किया जायगा। मौके पर बस्ताकोला गोशाला कमेटी के अध्यक्ष महेंद्र कुमार अग्रवाल, सचिव मुरलीधर पोद्दार, द्वारका प्रसाद गोयंका, रामप्रसाद कटेसरिया, सत्यनारायण भोजगढ़िया, अनिल खेमका, शारदानंद सिंह, अशोक सराफ, बृजमोहन अग्रवाल, जगदीश तुलस्यान, प्रकाश शर्मा, रमेश रिटोलीया, नवीन कटेसरिया और पवन मित्तल सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

ठंड में राहत पहुंचाने को ग्रामीणों के बीच कंबल वितरित

धनबाद (आजाद सिपाही)। कड़कड़ाती ठंड में जरूरतमंदों को राहत पहुंचाने के लिए समाजसेवी रंजीत कुमार महतो के प्रयास और सरायढेला चेंबर आफ कॉमर्स धनबाद के सौजन्य से रविवार को गर्म कपड़े और कंबल का वितरण किया गया। धनबाद जिले के गोविंदपुर प्रखंड अंतर्गत मरिचो पंचायत के बेहराडीह, भोलमारा, डिग्री पंजनियां, घनुवाडीह, ताराजोरी आदि ग्रामीणों के बीच इस ठंड से बचाव के लिए जरूरतमंद, बुजुर्ग व दिव्यांगजनों के बीच लगभग 200 कंबल और गर्म कपड़ों का निःशुल्क वितरण किया गया। इस सराहनीय कार्य के लिए सभी मरिचो पंचायत के ग्रामीणों ने सरायढेला चेंबर आफ कॉमर्स धनबाद के जिला अध्यक्ष शिव आशिष पांडेय, सचिव आशुतोष कुमार ओझा, कोषाध्यक्ष कालीचरण प्रसाद, श्रवण सिन्हा, संजय विश्वकर्मा, संजय सोनी, चंद्रभूषण प्रसाद, विजेंद्र कुमार सिंह, बरवाअड्डा थाना क्षेत्र के डीएसपी अमर कुमार पांडेय, बरवाअड्डा थाना प्रभारी विक्रम कुमार सिंह का आभार व्यक्त किया। वहीं समाज सेवी रंजीत कुमार महतो और चेंबर के सदस्यों ने आगे भी ग्रामीणों के बीच ऐसी हर संभव मदद की हामी भरी। कहा कि यह कार्यक्रम जिले के अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी किया जाएगा।

आंगनबाड़ी में वृद्धा ने बांटे चूड़ा तिलकुट और कंबल

कतरास (आजाद सिपाही)। अंगार पथरा निवासी शकुंतला देवी (65) नामक वृद्धा की ओर से रविवार को मकर संक्रांति के अवसर पर अंगार पथरा लोडिंग धौड़ा स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में जीवन ज्योति आश्रम के जरूरतमंदों के बीच चूड़ा गुड़, तिलकुट और गर्म कपड़ों आदि का वितरण किया गया। कहा कि इन दिनों ठंड का प्रकोप बहुत ज्यादा बढ़ गया है, जिसमें गरीब और पिछड़ी तबके के लोगों को ज्यादा परेशानी हो रही है। इसे देखते हुए कंबल व भोजन सामग्रियों का वितरण किया गया। मौके पर सेविका लवली देवी, दीपक पासवान, पीयूष राज, ध्रुव राज, अनामिका कुमारी पासवान आदि मौजूद थे।

'वाइब्रेंट गुजरात समिट' ने पूरे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है : शाह

> जब मोदी ने प्रधानमंत्री पद का भार संभाला तब दुनिया की तालिका में भारत की अर्थव्यवस्था 11वें नंबर पर थी और आज मात्र एक दशक के अंदर भारत पांचवें नंबर की अर्थव्यवस्था बन चुका है।

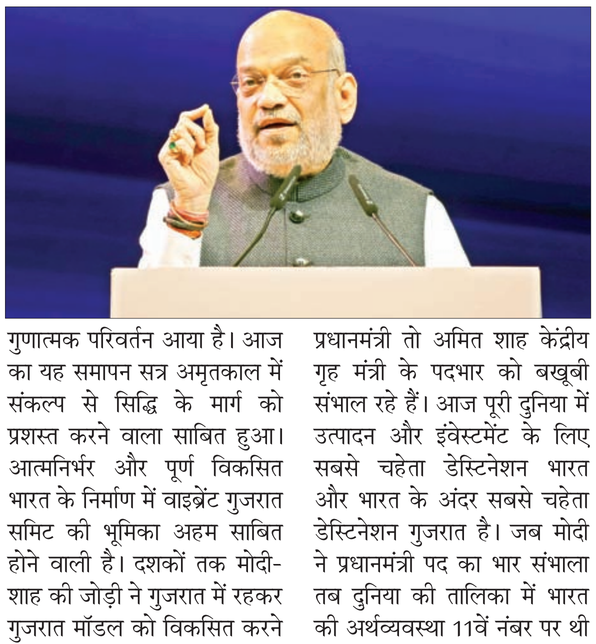

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने गुजरात में वाइब्रेंट गुजरात समिट के समापन सत्र समारोह को संबोधित किया। इस मौके पर शाह ने स्पष्ट किया कि, आइडिया, इनोवेशन और इन्वेस्टमेंट के जरिए 'वाइब्रेंट गुजरात समिट' ने गुजरात के साथ-साथ पूरे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है।

दो दशक पहले मोदी जी ने वाइब्रेंट गुजरात की परिकल्पना रखी थी और नतीजा आज देश के सामने है। ढेर सारी चीजों में गुणात्मक परिवर्तन आया है। आज का यह समापन सत्र अमृतकाल में संकल्प से सिद्धि के मार्ग को प्रशस्त करने वाला साबित हुआ। आत्मनिर्भर और पूर्ण विकसित भारत के निर्माण में वाइब्रेंट गुजरात समिट की भूमिका अहम साबित होने वाली है। दशकों तक मोदी-शाह की जोड़ी ने गुजरात में रहकर गुजरात मॉडल को विकसित करने का काम किया। गुजरात मॉडल को देखते हुए देश की जनता ने मोदी जी को पूरे देश का नेतृत्व सौंप दिया। वर्तमान में मोदी जी प्रधानमंत्री तो अमित शाह केंद्रीय गृह मंत्री के पदभार को बखूबी संभाल रहे हैं। आज पूरी दुनिया में उत्पादन और इंवेस्टमेंट के लिए सबसे चहेता डेस्टिनेशन भारत और भारत के अंदर सबसे चहेता डेस्टिनेशन गुजरात है। जब मोदी ने प्रधानमंत्री पद का भार संभाला तब दुनिया की तालिका में भारत की अर्थव्यवस्था 11वें नंबर पर थी और आज मात्र एक दशक के अंदर भारत पांचवें नंबर की अर्थव्यवस्था बन चुका है। आने वाले समय में यह दावा सही साबित होने वाला है कि भारत जल्द ही तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बनकर दुनिया के सामने गौरव के साथ खड़ा होगा। मोदी जी के नेतृत्व और अमित शाह के कुशल मार्गदर्शन में ह्यवाइब्रेंट गुजरात समिट ने आइडिया और इनोवेशन को प्लेटफॉर्म देकर इंवेस्टमेंट को धरती पर उतारने का काम किया है, जिससे ना केवल गुजरात बल्कि पूरे देश के अर्थतंत्र को फायदा हुआ है। नतीजतन, इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट के लिए देश के कई राज्यों ने वाइब्रेंट गुजरात के मॉडल को अपनाया है। मांडल बेचराजी आज ऑटोमोबाइल का सबसे बड़ा हब बन चुका है। रसायन और पेट्रोकेमिकल के मैन्यूफैक्चरिंग के लिए दहेज भारत का पहला निवेश क्षेत्र बन चुका है। पीएम मित्र पार्क, सूरत और मैसाना में मेगा फूड पार्क, भरूच में बल्क ड्रग पार्क, राजकोट में मेडिकल डिवाइस पार्क, वडोदरा में बायो टेक्नोलॉजी पार्क, राजकोट और बनासकांठा में एग्रो पार्क और वलसाड में सी फूड पार्क ने गुजरात के अंदर निवेश की सारी संभावनाओं को उद्योग जगत के सामने रखा है। मोदी जी ने गुजरात को पॉलिसी ड्रिवन स्टेट बनाया, आज दुनिया भर के निवेशक मोदी जी की बनाई हुई नीतियों से आकर्षित होकर गुजरात में निवेश कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि विकसित भारत का गेटवे गुजरात से ही होकर गुजर रहा है। गुजरात की राजनीति से केंद्र की सत्ता तक का सफर तय करने वाले मोदी और शाह की जोड़ी ने जिस तरह से देश के आर्थिक विकास को रफ्तार दी है और भारत को एक नयी पहचान दी है, यह कहना गलत नहीं होगा कि जहां 2024 में मोदी जी का प्रधानमंत्री बनना तय है, वहीं राजनीति के चाणक्य शाह का दबदबा भी बरकरार है।

भाजपा के वरिष्ठ नेता लक्ष्मण सिंह ने किया पांडेयडीह पंचायत का दौरा

आजाद सिपाही संवाददाता

लोगों को भाजपा में शामिल कराते भाजपा नेता सह पूर्व आइजी लक्ष्मण प्रसाद सिंह।

धनवार गिरिडीह। भाजपा के वरिष्ठ नेता सह पूर्व आइजी लक्ष्मण प्रसाद सिंह ने रविवार को पांडेयडीह पंचायत के दरियाडीह गांव में बैठक की। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यों से संतुष्ट होकर दरियाडीह गांव के दर्जनों माले कार्यकर्ता भाजपा के क्रियाकलाप से संतुष्ट होकर श्री सिंह के नेतृत्व में भाजपा में शामिल हुए। भाजपा नेता सह पूर्व आइजी लक्ष्मण प्रसाद सिंह ने सभी को माला पहनाकर भाजपा में शामिल होने पर उनका स्वागत किया और हर सुख-दुख में साथ रहने की बात कही। इस कार्यक्रम में लक्ष्मण प्रसाद सिंह के साथ पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष सुनील अग्रवाल, जिला परिषद प्रतिनिधि उदय सिंह, सुबोध कुमार राय, श्रीकांत सिंह, पवन सिंह, अमर कुमार सिंह, उमेश सिंह, सहित सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित थे। भाजपा में शामिल होने वाले प्रमुख लोगों में पूर्व पंचायत समिति सदस्य शकुनी देवी, तिलक रविदास, खूब लाल रविदास, राजू रविदास, राजकुमार पासवान, पुनीत रविदास, महेंद्र पासवान, डालो दास, पोखन दास, मुकेश दास, दामोदर दास, ठाकुर मणी रविदास, सीताराम दास, चंदन दास सहित दर्जनों लोग शामिल हैं। इसी क्रम में श्री सिंह मनसाडीह मंडल के झांझ गांव पहुंच कर भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता भागीरथ विश्वकर्मा की आकस्मिक मौत पर दुख जताया और शोक संतप्त परिवार से मिल कर दुख में साथ रहने का वादा किया।

रेल मंत्री ने गोपीनाथपुर नीलगिरि-बालेश्वर नयी मेमू ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखायी

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। भारत सरकार के रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को गोपीनाथपुर नीलगिरी रेलवे स्टेशन पर आयोजित एक रंगारंग समारोह में गोपीनाथपुर नीलगिरी-बालेश्वर नयी मेमू ट्रेन सेवा को झंडी दिखाकर रवाना किया और नयी बालेश्वर-गोपीनाथपुर नीलगिरी यात्री लाइन को राष्ट्र को समर्पित किया। रेल मंत्री ने बालेश्वर तक पहली बार यात्री ट्रेन संपर्क प्राप्त करने के लिए गोपीनाथपुर नीलगिरी के स्थानीय लोगों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि ओड़िशा राज्य में रेलवे नेटवर्क का विस्तार करने के लिए भारतीय रेलवे ने क्षेत्र के लिए नये स्टेशन भवन, नयी यात्री लाइन और नयी मेमू सेवा की प्रतिबद्धता को पूरा किया है। गोपीनाथपुर नीलगिरी में आयोजित उद्घाटन समारोह में माननीय सांसद प्रताप चंद्र षड़ंगी और माननीय विधायक सुकांत कुमार नायक उपस्थित थे। इस रूट पर प्रतिदिन तीन जोड़ी मेमू ट्रेनें चलेंगी। मेमू ट्रेनों का नियमित परिचालन 14.01 से शुरू होगा और सभी मेमू ट्रेनें रास्ते में सुतेई बड़गांव स्टेशन पर रुकेंगी। बाद में, बेतनटी स्टेशन पर आयोजित एक समारोह में, माननीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बेतनटी स्टेशन पर सबवे की आधारशिला रखी। सबवे का निर्माण अधिक यात्री सुविधाएं प्रदान करने के एक हिस्से के रूप में किया जायेगा। यह यात्रियों के सुचारू प्रवेश और निकास और स्थानीय लोगों की मुक्त आवाजाही सुनिश्चित करेगा। उन्होंने बेटनोटी स्टेशन पर नये पीआरएस काउंटर का भी उद्घाटन किया। नया खोला गया पीआरएस काउंटर स्थानीय निवासियों के लिए सुविधाजनक और समय बचाने वाली टिकट बुकिंग सुविधा प्रदान करेगा।

बेतनटी में आयोजित समारोह के दौरान बिश्वेश्वर टुडू केंद्रीय जल शक्ति और जनजातीय मामलों के राज्य मंत्री, प्रताप चंद्र षड़ंगी सांसद और सनातन बिजुली विधायक उपस्थित थे। दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक अनिल कुमार मिश्र ने गोपीनाथपुर नीलगिरी और बेतनटी में आयोजित दोनों कार्यक्रमों में रेल मंत्री और अन्य अतिथियों का स्वागत किया। इन कार्यक्रमों में खड़गपुर के मंडल रेल प्रबंधक के आर चौधरी और दक्षिण पूर्व रेलवे के अन्य प्रधान अधिकारी भी उपस्थित थे।

ओड़िशा में भ्रष्ट जनता दल का शासन है : मनोज महापात्र

लोकल फंड ऑडिट से स्पष्ट है कि राज्य में 50 प्रतिशत पीसी सरकार चल रही है

- कोविड के दौरान 40 हजार करोड़ का दुर्निती

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा था कि ओड़िशा में 50 प्रतिशत पीसी ट्रांजेक्शन हो रहा है, यह आज सरकार की ऑडिट रिपोर्ट से स्पष्ट हो गया है। ओड़िशा की सत्ता पर रह कर बीजू जनता दल लूटपाट के चरम पर पहुंच गया है। मुख्यमंत्री और उनकी टीम हमेशा साढ़े चार करोड़ उड़िया वासियों के आशीर्वाद से ओड़िशा की सेवा करने का ढिंढोरा पीटती रहती है, लेकिन हकीकत में साढ़े चार करोड़ लोगों को किस तरह से लूटा गया है, इसका खुलासा ऑडिट रिपोर्ट से हो गया है। मुख्यमंत्री ने ओड़िशा को परिवर्तन कर के एक नये युग में बदल दिया है। हकीकत बिल्कुल अलग है। राज्य प्रवक्ता मनोज महापात्र ने कहा, बिजेडी ने अपने 24 साल के शासन के दौरान जो भ्रष्टाचार किया है उसकी कल्पना करना असंभव है। प्रदेश कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में महापात्र ने कहा, "2020-22 में जब राज्य कोरोना से लड़ रहा था, तब बिजेडी राज्य का खजाना लूट रही थी।" बीजेपी ऐसा कुछ नहीं कह रही है बल्कि सरकार के 2020-21 और 2021-22 के लोकल फंड ऑडिट से ये जानकारी सामने आई है। राज्य सरकार 2020-21 और 2021-22 की ऑडिट रिपोर्ट छिपाती है और उसकी वेबसाइट पर सारी जानकारी नहीं है। ओड़िशा में 314 ब्लॉक, 6798 गांव, 5 नगर निगम, 47 नगर पालिका, एनएसी में खर्च किए गये 40 हजार करोड़ रुपये का कोई 'यूसी' नहीं है। भ्रष्टाचार व अनियमितता के कारण प्रखंड कर्मियों के खिलाफ 400 रुपये से अधिक की शिकायत हो चुकी है, लेकिन सरकार जुमार्ना नहीं भर रही है। बिजेडी सरकार भ्रष्टाचार के पहाड़ पर खड़ी है। हर ब्लॉक में 100 करोड़ से ज्यादा की लूट हुई है। बिजेडी सरकार में वीडियो से लेकर क्लर्क तक सभी घोटाले में शामिल हैं। 250 ब्लॉकों पर 16 हजार 483 करोड़ रुपये क्या खर्च किये गये, इसका कोई हिसाब नहीं है। इसी प्रकार 21 लाख 37 हजार विधवा एवं वृद्धावस्था भत्ता खा गये हैं। बीजू जनता दल सरकार ने ओड़िशा में 40,000 करोड़ रुपये का घोटाला किया है। महापात्र ने मांग की कि बिजेडी को लोगों को जवाब देना चाहिए कि गरीबों को तुरंत 40,000 करोड़ रुपये कैसे मिलेंगे। बरी, जाजपुर, दशरथपुर, बिंझारपुर, बड़चना, बालेश्वर, तिरतोल, पिपिली, धामनगर, चांदबाली, पद्मपुर, बीजेपुर सभी ब्लॉकों में लूट हुई है। इसी तरह मुख्यमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र हिंजिली ब्लॉक में 2 करोड़ 61 लाख रुपये की अनियमितता की गयी है। इसके अलावा, ऑडिट में यह भी पाया गया कि आवास योजना को ठीक से लागू नहीं किया गया था। नौकरी दिलाने के नाम पर बरी के एक शिक्षक ने शंख भवन में नेताओं के साथ फोटो दिखाकर 3 करोड़ रुपए ऐंठ लिए। ओड़िशा में भ्रष्ट जनता दल की सरकार चल रही है। महापात्र ने कहा कि भाजपा इस मुद्दे को लेकर हर पंचायत और ब्लॉक में जनता के बीच जायेगी। इस प्रेस वार्ता में प्रदेश मीडिया समन्वयक सुजीत कुमार दास, संजय रथ प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

बैंक ऑफ बड़ौदा, कटक क्षेत्र में कार्यक्रम का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर, बैंक ऑफ बड़ौदा, कटक क्षेत्र द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय प्रमुख कटक क्षेत्र रणजीत कुमार की अध्यक्षता में, कटक क्षेत्र के शाखा प्रमुखों और, राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 30 शाखा प्रमुख उपस्थित रहे। इस अवसर पर तिमाही के दौरान, श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु, ढेंकनाल, पतराजपुर एवं इफको पारादीप शाखाओं के शाखा प्रमुखों को भी क्षेत्रीय प्रमुख और उपक्षेत्रीय प्रमुख द्वारा सम्मानित किया गया। गुरुवार को उपक्षेत्रीय प्रमुख, कटक क्षेत्र, संग्राम जीपी बेहेरा की अध्यक्षता एवं रेवेन्शा विश्वविद्यालय, कटक के हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ अंजुमन आरा के संयोजन में, बैंक ऑफ बड़ौदा, कटक क्षेत्र द्वारा, रेवेन्शा विश्वविद्यालय, कटक के विद्यार्थियों हेतु हिन्दी भाषा का महत्व और उपयोगिता विषय पर हिंदी व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 32 प्रतिभागी उपस्थित रहे। प्रतियोगिता हेतु पुरस्कार वितरण विश्वविद्यालय परिसर में यथा शीघ्र किया जायेगा। बैंक ऑफ बड़ोदा कटक क्षेत्र की राजभाषा अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर, बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों किया जा रहा है, इसी क्रम में इन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इनके साथ ही कटक क्षेत्र के अंतर्गत, बैंक की विभिन्न शाखाओं द्वारा भी शैक्षणिक संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं।

Mob : 9973853279, 9031249105
कृष्णा ज्वेलर्स
समस्या है तो ! समाधान भी है !
आचार्य प्रणव मिश्रा
प्रसिद्ध ज्योतिष रत्न गोल्डमेडलिस्ट, M.M
(ज्योर्तिविज्ञान) टॉपर 2012 एवं (P.h.D) रांची, वि. वि. रांची
गांधी चौक, सोनार गली, बीण वस्त्रालय के सामने अपर बाजार, रांची

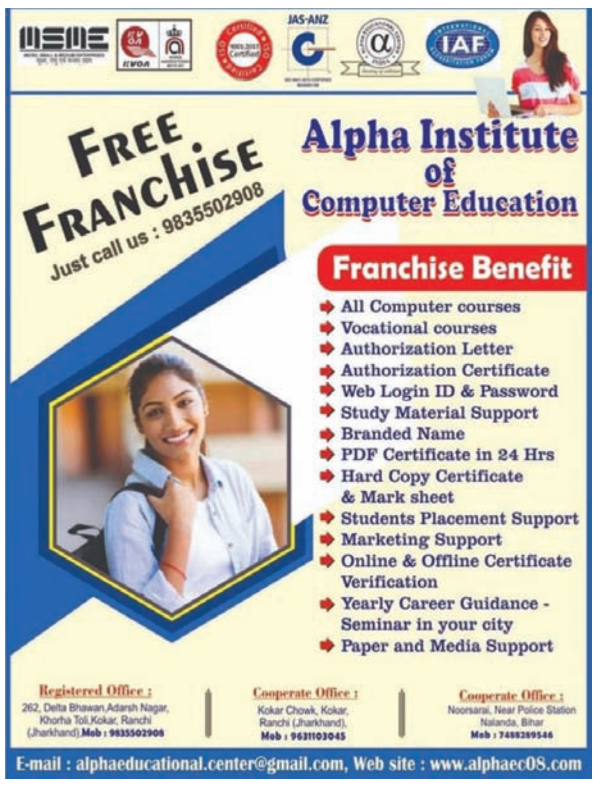

FREE FRANCHISE
Just call us : 9835502908
Alpha Institute of Computer Education
Franchise Benefit
- All Computer courses
- Vocational courses
- Authorization Letter
- Authorization Certificate
- Web Login ID & Password
- Study Material Support
- Branded Name
- PDF Certificate in 24 Hrs
- Hard Copy Certificate & Mark sheet
- Students Placement Support
- Marketing Support
- Online & Offline Certificate Verification
- Yearly Career Guidance - Seminar in your city
- Paper and Media Support

Registered Office : 262, Delta Bhawan,Adarsh Nagar, Khorha Toli,Kokar, Ranchi (Jharkhand) Mob : 9835502908
Cooperate Office : Kokar Chowk, Kokar, Ranchi (Jharkhand). Mob : 9631103045
Cooperate Office : Noorsarai, Near Police Station Nalanda, Bihar Mob : 7488289546
E-mail : alphaeducational.center@gmail.com, Web site : www.alphaec08.com

बोरिंग के लिए संपर्क करे
जल ही जीवन
☎ 993106883
9113754813
रांची के अंदर कहीं भी अच्छे रेट में
Contact for : Deep Boring, 405" 6" 8" Dia All Motor & Pump Fitting, Building Material

VERMA PRESS
वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
Verma's® Today®
श्रृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं–

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi – B	₹ 140	Hindi – B	₹ 80
Hindi Vyakaran– II	₹ 120	Hindi Vyakaran– II	₹ 120
English Grammar– II	₹ 120	English Grammar– II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !

PERFECT AQUA
सेल सर्विस एंड स्पेयर पार्ट्स
रिटेल एंड होलसेल
COMMERCIAL RO
IRON REMOVER
RO PLANT
CALL NOW
9431701163, 8340320390
PERFECT SERVICE
H.B Road, Kokar, Ranchi, Jh.
perfectaqua345@gmail.com
पानी चेक की सुविधा उपलब्ध फ्री

रत्न विक्रेता
जय माता दी
रत्न विक्रेता
ज्योतिष ग्रहरत्न केन्द्र
ज्योतिष शास्त्र • वास्तु शास्त्र • हस्त शास्त्र • अंक शास्त्र
पंडित शशि कांत मिश्रा
पता - लाईन टैंक रोड, गोपाल गंज गली, ऑपोजिट-भुतपूर्व वारगेन बाजार, रांची
फोन :- 9334718296, 9835195382, 9431792761

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** : विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**